हिंसा में धर्म प्ररूपे, यो म्हांने अचरज आयो रे ॥ प्राणी जी० ॥ १४ ॥ पार्श्वचन्द्र सूरि भणे इण परे, आणा सहित करुणा पाले । ते नर दुर्गति ना दुःख टाले, ज्ञान कला उजवाले रे ॥ प्राणी जी० ॥ १५ ॥

॥ ढाल दूजी चाल तेहिज ॥

चैत्य मन्दिर मांहि वृक्ष ज ऊग्यो, अनन्त जीवां रो वासो । लोह कुल्हाड़ी ले आपण छेदे, कांई करो दुर्गति वासो रे ॥ मुनिवर हिन्सा धर्म कांई भाखो ॥१॥ सांच कहे तो ते नहीं माने, कूड़ कहे ते कीजे । असत्य भाखी ने हीनाचारी, ते गुरु कर आघा लीजे रे ॥मुनि०॥२॥ चारित्र पाली मुक्ति पहुंता, ते मारग नहीं थापो । सूक्ष्मतो होई जीव विराधो, न्याय करो एहवो पापो रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ धर्म उथापो ने हिन्सा थापो, छः काय प्राण लुटावो । धर्म तणो छांटो नहीं मांहीं, अहलो जन्म गुमावो रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ वन में बावरी बावर मांडे, लोकां में हुवै पुकारो । भगवन्त आगल बावर मांडो, लाखां क्रोड़ां रो संहारो रे ॥ मुनि० ॥५॥ उन्हा ने घास बाढ़ीजे ने, मांस खाइजे पेट रे कारण खावै । वै जीव विराधी ने मन पछतावे, इण रो ज्ञान न आवे रे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ थे घास न मोटो मांस न खावो, कांई तुमे जीव हणावो । थे भगवन्त मार्ग ढूपथ

॥ अथ हुण्डी लूंकारी लिख्यते ॥

शहर जेतारण मध्ये लूंका गुजराती सरूपचन्दजी रामचन्दजी रा उपासरा थी हुण्डी आणी तिण में शुद्ध प्ररूपणा जाणी ने उण रे देखादेख लिखी छे :—

(१) तीन ही काल का भाव केवल ज्ञानी देख्या कोई जीव ने नवतत्वरे जाणपणा बिना संसार समुद्र सूं तिरतो देख्यो नहीं। साख सूत्र प्रथम सूयगडांग, अध्ययन १२ गाथा १६।

(२) जीव ने अजीव राश दो कही, तीसरी राश कहवे तिण ने त्रिराशियो निन्हव कहीजे। सा॰ सू॰ उववाई, प्र॰ १८।

(३) जीव अजीव त्रस स्थावर जाणे नहीं तिणरा पचक्खाण दुपचक्खाण कह्या। सा॰ सू॰ भगवती, श॰ ७, उ॰ २।

(४) जीव अजीव ने जाणे नहीं, जीव अजीव दोनां ने जाणे नहीं, तिण ने संजमरी ओलखना नहीं। सा॰ सू॰ दशवैकालिक, अ॰ ४, गा॰ १२।

(५) सम्यक्त बिना चारित्त नहीं, सम्यक्त बिना ज्ञान नहीं। सा॰ सू॰ उत्तराध्ययन, अ॰ २८, गा॰ २९।

साख सूत्र प्रथम सूयगडांग अ० १, उद्देशे २, गाथा १४।

(१४) श्रावक ने केवल ज्ञानी परूप्यां विना दूसरो धर्म माननो नहीं। साख सूत्र उववाई प्रश्न २०

(१५) सम्यक्ती ने धर्म केवल ज्ञानी परूप्यो माननो दूसरो माननो नहीं। साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० २८, गाथा ३१।

(१६) केवली ज्ञानी री पाखण्डियां री वचनां री खबर नहीं। जिकां रे घणो अकाममरण वाल मरण होसी। साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ३६, गाथा २६५।

(१७) पर वचन सोई अर्थ परमार्थ शेष थाकता रह्या सोई सर्व अनर्थ। साख सूत्र उववाई प्रश्न २०।

(१८) केवल्यां रो आचार सोई छद्मस्थ रो आचार केवल्यां रो अनाचार सोई छद्मस्थ रो अनाचार। साख सूत्र प्रथम आचारांग अध्ययन २, उद्देशे ६।

(१९) वक्तवया दोय कही—१ स्वसमय वक्तवय, २ पर समय वक्तवय। स्वसमय वक्तवय की तो साधु आज्ञा देवे। पर समय वक्तवय मे सात औगुण—अनर्थ १, अहित २, असंजम भाव ३, अक्रिया ४, अनुमारग ५, उपयोग रहित ६. मिथ्यात ७। साख सूत्र अनुयोगद्वार [illegible] पर्यां छुई नहे।

खादम स्वादम, वस्थ, पडिग्गह, कम्मल, पायपुच्छण, ए ८ बोल देवे, दिरावे, देवतां ने भलो जाने तिण ने चौमासी प्रायश्चित आवै। साख सूत्र निशीथ, उ० १५, बोल ७४-७५।

(२९) वोसराया ने अणवोसराया कहै अणवोसराया ने वोसराया कहै तिण ने प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० १६, बोल १३-१४।

(३०) सरीखा साधु होकर के सरीखा साधुवों ने थानक देवे नही दिरावे नहीं देवतां ने भलो जाने नही तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० १७, बोल २२३।

(३१) गृहस्थ री व्यावच्च करे करावे करता ने भलो जाने तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० ११ बोल ११

(३२) सरीखी साध्वियां ने थानक देवे नही दिरावे नहीं देवता ने भलो जाने नही तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० १७ बोल २२४।

(३३) साधु वसे तिण थानक में न्याति, अन्य न्याति, श्रावक अथवा श्राविका आधी रात वा सारी रात राखे तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० ८, बोल १८।

असमर्थ कह्यो। मिश्र धर्म परूपणेवालो आपरो मत थापवा भणी छल बल मांडो छै। साख सूत्र प्रथम सूयगडांग, अध्ययन १२, गाथा ५।

(४२) साधुरी आज्ञा बारे धर्म सरधे तिणने काम भोग में खूतो कह्यो, हिंसा रो करणेवालो कह्यो। साख सू० प्रथम आचारांग, अ० ६, उ० ४।

(४३) साधु री आज्ञा बारे धर्म कहसी तिण रा तप ने नेम भ्रष्ट कह्या ने मूर्ख कह्या। सा० सू० प्रथम आचारांग अ० २, उ० २।

(४४) आज्ञा बारे धर्म कहे आज्ञा मांहि पाप कहे, ए दो बोल कोई जीव ने होज्यो मती। साख सू० प्रथम आचारांग अ० ५ उ० ६।

(४५) पर वचन सूं विरुद्ध परूपणे वाले ने भगवान् निह्नव कह्यो निह्नवां रो आचार छै। सा० सूत्र उववाई प्रश्न १६।

(४६) राग द्वेष ने पाप कह्यो। साख सू० उत्तराध्ययन अ० ३१, गाथा ३।

(४७) कोई कोई इम कहे साता दियां साता होवे तिणांरे श्री भगवान् छव बोल परूप्या—१ आर्य मार्ग सूं वेगलो, २ समाधि मार्ग सूं न्यारो, ३ जैन धर्म रो हिलणा करणहार कह्यो, ४ थोड़ा सुखां रे कारणे

घणा सुखां रो हारणहार कह्यो, ५ समोग रो कारण कह्यो, लोह वागियां नी परे घणो झूरसी। साख सू प्रथम सूयगडांग अध्ययन ३, उ० ४, गाथा ६-७।

(४८) साधु छोकरा की अणुकम्पा रे वास्ते त्रस जीव ने बांधे बंधावे बांधता ने भलो जाणे, छोड़े छुड़ावे छोड़तां ने भलो जाणे तिण ने चौमासी प्रायश्चित आवे। साख सू० निशीथ उ० १२, बोल १—२।

(४९) मोक्ष रो मार्ग जाणे नहीं तिण ने श्री भगवान् री आज्ञा रो लाभ नहीं। साख सू० प्रथम आचारांग अ० ४, उद्देशा ४।

(५०) ब्राह्मणा ने जिमायां तमतमा पड़े। साख सू० उत्तराध्ययन अ० १४ गाथा १२।

(५१) साधु रे अठारह पाप रा सर्व थकी त्याग छे, देश थकी नथी। साख सू० उववाई प्रश्न २१।

(५२) साधु रा धर्म उपकरण परिग्रह में कह्या नहीं, मूर्छा राखे तो परिग्रह लागे। साख सू० दश-वैकालिक अ० ६ गाथा २१।

(५३) साधु रे नव कोटि पचखाण छे। साख सू० दशवैकालिक अ० ४।

(५४ [illegible]

गां ने भलो जाने तो प्रायश्चित्त। साख सू० निशीथ ४, बोल २२।

(५५) पुण्य पाप सूं जीव ने मचतो दीठो। सा० उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १५।

(५६) पुण्य पाप ने खपावनो कह्यो। साख सू० राध्ययन अ० २१. गाथा छेहली।

(५७) उसन्ना पासत्था ढीला ने वन्दना प्रशंसा करे करावे करतां ने भलो जाने तो चौमासी प्रायश्चित्त। साख सू० निशीथ उ० १३. बोल ४२—४३ ४४—४५।

(५८) साधु गृहस्थी की औषधि करे करावे करतां ने भलो जाने तो प्रायश्चित्त। साख सू० निशीथ उ० १२ बोल १७।

(५९) सामायक दोय कही—१ आगार सामायक, २ अणागार सामायक। साख सू० ठाणांग ठाणा २, उ० ३ बोल ६।

(६०) चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र, २ अणागार चारित्र। साख सू० ठाणांग ठाणा २, उ० १, बोल २५।

(६१) धर्म दोय कह्या—१ श्रुत धर्म, २ चारित्र धर्म। साख सू० ठाणांग ठाणा २, उ० १. बोल २५।

श्री श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी कृत उपदेश की ढाल लिख्यते।

॥ दोहा ॥

अरिहन्त देव अराधिये, निर्मल गुरु निग्रन्थ।
धर्म जिन आज्ञा चित धरो, तत्व अमोलक तन्त ॥१॥
मूढमती मन मोहवा, थापे हिंसा धर्म।
वन्दे निर्गुण देव गुरु, ते भूल्या अज्ञानी भ्रम ॥२॥
कहे धर्म ने कारणे, प्राणी हण्या नहीं पाप।
देव गुरु कारणे हण्या, आज्ञा दे जिन आप ॥३॥
इम कही विरुद्ध परूपता, नहीं आणे मन लाज।
देवल प्रतिमा कारणे, करे अनेक अकाज ॥४॥
हिन्सा धर्मी जीव ना, भाष्या पाल भगवन्त।
ठाम ठाम सूत्र मध्ये, ते सुणज्यो करि खन्त ॥५॥

॥ ढाल ॥

(भवियण जोवोरे हुवे जिमासां - एदेशी)

पृथ्वी हणी देवल प्रतिमा करावे, धर्म हेत जीव मारे। त्यांने मन्द बुद्धि कह्या दसमे अंग, धर्मी

पोल रे ॥ कु० ॥ १० ॥ धर्म ठिकाणे जीव हणो तो, दया किसी ठौड़ पालो। कुगुरां ना बहकाया आतम ने कांय लगावो कालो रे ॥ कु० ॥ ११ ॥ उत्तराध्ययन रे बारमें अध्ययने, तीर्थ शील बतायो। थे शत्रुंजयादिक तीरथ थापो, कोई पिण झूठ चलायो रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ ज्ञान दरशण रा जतन करे ते, याता कही सुखदायो। ज्ञाता सूत्र पांचमें अध्ययने. तो थाने तो खबर न कायो रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ इम ही महावीर सोमल ने, याता भगवती में भाखी। शतक अठारमें दशमे उद्देशे, चारित्र यत्न ते याता दाखी रे ॥ कु० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम तीर्थ याता अमोलक, जिन कह्यो आगम मांहि। ते तीर्थ याता थां स्यूं करनो न आवे, तिण सूं मांडी विकलाई रे ॥ कु० ॥ १५ ॥ शत्रुंजय ने पर्वत कह्यो जिनेश्वर, पिण तीर्थ न कह्यो लिगारो। पत्तागढ़ ज्ञाता सूत्र मांहो, देखो पाठ उघाड़ो रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ तीर्थ कहै तिण माहे पग देवो. तिण पर चढ़ो जूती मुधा। वले मल मूत तिण ऊपर नाख्यो, त्यांरे लेखे ते पूरा ऊन्धा रे ॥ कु० ॥ १७॥ मुख सूं कांइ कहै चूर्णी टीका मानां. वले माना आगम पैताली। ते पिण बोल्यां रो नहीं ठिकाणो, त्यांरे कर्म लगी रेख काली रे ॥ कु० ॥ १८ ॥ नशा

पिछाणो रे ॥ कु० ॥ २६ ॥ "पछा" पाठ लारे निसेस्साय कह्यो छै, ते इण भव मांहे द्रव्य मोक्ष जोय। लाय थकी धन बारे काढ्यां, मुकावो ते दरिद्र होय रे ॥कु०॥२७॥ राज्य वेसतां सुर्याभ प्रतिमा पूजी, त्यां पिण "पछा" पाठ लारे "निसेस्साय"। ते पिण इणभव मे, विघ्न मेटन ने मोक्ष सुहाय रे ॥ कु० ॥ २८ ॥ तुंगीया नगरीना श्रावकां पिण, किया विघ्न मेटण ने द्रव्य मंगलीक। सरसव द्रोब दही ने अक्षत, तिम सुर्याभ कियो लौकिक रे ॥ कु० ॥२९॥ भगवन्त ने वांदतां दीक्षा लेतां "पेच्चा परलोए" लारे "निसेस्साय"॥ तो लोकोत्तर खाते परलोकनी मोक्ष, यो जाणो कर्म थकी मुकाय रे ॥ कु० ॥ ३० ॥ भस्मग्रह उतरियां पाछे, श्रमण निग्रन्थनो उदय २ पूजा थायो। यह प्रत्यक्ष पाठ कह्यो कल्प सूत्र मे, ते पिण विकलां ने खबर न कायो रे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ संघपट्टो कियो जिनवल्लभ खरतरो, तिण तीर्थ यात्रा उडाई। जिन प्रतिमा थापि थारी पेट भराई, भस्मग्रह प्रताप बताई रे ॥ कु० ॥३२॥ इत्यादिक प्रकरण टीका मे, थोल घाला छै अनेक। ए कही प्रकरण टीका म्हे माना, पिण बोल नहीं मानो एक रे ॥ कु० ॥ ३३ ॥ जद कहे मे प्रकरण टीका नहीं मानो, तो थांरो नाम लियो किण न्याय। मूल नो उत्तर करं इम जबर, ते

सुणजो चितल्याय रे ॥ कु० ॥ ३४ ॥ सुगडांग में कह्या
वारचा पुत, सोमलजे आखो महावीर। चार ब्राह्मण
सम्बन्धिया गाम में कह्या ए, कुलथा मास ना भेद
उदार रे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ ब्राह्मण रा मत महावीर न
माने. जिण त्यारे मतरो माग दिखाई। इण बांने
प्रकरण रो जिण मारग बताई भव जीव समझावण ताई
रे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ सतगुरु कहे प्रकरण सगु मानो, तो
दुजा कोन न मानो किण लेखे। श्रीभगवती साख दिखा
ने कहे, आप आचारो बारे [illegible] देखे रे ॥ कु० ॥ ३७ ॥
इण सूत्र सु कहे निज आत्मा मानो, जिण आज्ञा [illegible]

जीव निध्वंस रे ॥ कु० ॥४२॥ कही कही ने कितराएक कहूं, आज्ञा दया एक जाणो। पिण आज्ञारो निर्णय करे न्यायवादी, तो पामें पद निरवाणो रे ॥ कु० ॥ ४३॥ आज्ञा बारे धर्म कहे अज्ञानी, आज्ञा मांही पाप माने भ्रान्त। द्रव्य लिंगी साधां रा वेष मांही, ते पिण हिंसा धर्मियां री पांत रे ॥ कु० ॥ ४४ ॥ मुख सूं कहे म्हे दया धर्मी छां, चाले हिंसा धर्म री चाल। जीव खवायां में पुण्य परूपे, तो मोह मिथ्यात में लाल रे ॥ कु० ॥ ४५ ॥ अव्रत सेवायां में पुण्य परूपे, पाप सेव्यां कहे पुण्य। त्यां ने ही हिन्सा धर्मी जानो, त्यांरी सरधा आचार जबुन रे ॥ कु० ॥ ४६ ॥ इम सांभल उत्तम नर नारी, हिंसाधर्मी नो संग न कीजे। दया धर्मी जिन आज्ञा में चाले, त्यांरो सिक्षो शिर पर धर लीजे रे ॥ कु० ॥ ४७ ॥ सम्वत अठारह से नउवे वर्षे, द्वितीय भाद्रवा सुदी पांचम बुधवारो। हिंसा धर्मी ओलखावण काजे, जोड़ कीधी पालीतरे शहर मझारो रे ॥ कु० ॥ ४८ ॥

अमृत की कान्द जैसी सुकृत समन्द जैसी।
सर्दरा का चन्द जैसी दिव्य सरसानी है॥
दिप्त मणि हीर जैसी नव्य क्षीर नीर जैसी।
देत भव तीर सहु भव्य मन मानी है॥
कहै मुनि सन्त आज रत्नगढ़ बीच मानो।
पुरन्दर प्रभा जैसी सभा दरसानी है॥

॥ ढाल ॥

(हां क जिनवर पास पियारो—एदेशी)

हां क छोगांनन्द तिहारी, मोच्छव छवि मोय लागत प्यारी। नन्दन वन सम आज यह फूली, फुलवारी रे क ॥ छोगांनन्द तिहारी ॥ ए आंकड़ो ॥ श्री भिक्षु पट अष्टम सारी, गणिवर कालू गण रखवारी। मिथ्या ध्वान्त विडारवास, प्रगट्यो दिन कारी रे क ॥ छो० ॥ १ ॥ वरसित वाक्य सुधा रस धारी, श्रवण करत जन हरषित भारी। चातक दादुर मोट लहै मन, मेघ निहारी रे क ॥ छो० ॥ २ ॥ प्रभुता पूरण पेख तिहारी, सशय युत् रम्भा त्रिपुरारी। ए कुण देव हरि हर ब्रह्मा, भयो अवतारी रे क ॥ छो० ॥ ३ ॥ तत्क्षिण दर्शो अवधि डारी, जाण्यो गणपति लखन उदारी। अहो मन माय ह्यारा अचम्भा हुई, कीरति प्यारी रे क ॥

तारन विच चंद्रु इन्द निज कल्प विच।
सभा स्थित विच वर चक्री चक्र अट्टा में॥
शची उर राजत है हार वर मोतिन को।
राम लघु भ्रात जेम सोहत सुभद्रा में॥
ऐसे ही सोहत अहो कालु गणिराज आज।
बीकानेर नयहु के मोछव की छट्टा में॥२॥
फिरत हैं शृगाल अति वन में निशंक धर।
भाजत हैं शीघ्र तव देखत मृगेन्द्र को॥
करत हैं चोरी नित तसकरहु हर्षयुत।
जहां लौं पहुँचे नांह सिपाही नरेन्द्र को॥
भूसत है स्वान अति करत है ध्वनि हू हू।
पड़त है लट्ठ तब दौड़े तजि दम्भ को॥
ऐसे ही पाखण्ड सब पुलिंद पुगात जात।
देखत दीदार एक मूलचन्द नन्द को॥३॥

॥ स्रग्धरा छन्द ॥

दृष्ट्वा कालुं वसंतं, भवि जन विटपाः, फुल्लिताश्चं पकाग्राः। निष्पत्रा निर्गताशा, छिन्नफूल मुकुटा, धार्य चौराः कठोराः॥ लब्धा कालुं दिनेशं विलसनि कमलं वृद्धि भाजां करें वं ध्वांतं मिथ्यात्व वृन्दं, ध्वननि च हरणां. वैर भूत चामुण्डा सु॥ १ ॥

अथ दश दान नी ढाल।

॥ दोहा ॥

दशदान भगवन्त भाखिया, सूत्र ठाणांग मांय।
गुण निपन्न नाम छै तेहना, ओलखिया खबर न काय ॥१॥
धर्म अधर्म दो मूलका, प्रसिद्ध लोक में एह।
आठां को अर्थ ऊंधो करे, मिश्र धर्म कहे तेह ॥ २ ॥
मिश्र धर्म परूपता, कुड़ो वाद करन्त।
आठां में अधर्म कह्यो, सांभलज्यो हुन्त ॥ ३ ॥
आम नीम कि रूंखनो, जुदो जुदो विस्तार।
नीम निमोली तेल खल, नीम तणो परिवार ॥ ४ ॥
इमहिज आठों दाननो, अधर्म तणो परिवार।
धर्म दान में मिले नहीं, श्रीजिन आज्ञा बाहर ॥५॥
इतरा मे समझो नही, तो कहुं भिन्न भिन्न भेद।
विवरा सहित बताइयां, मत कोई करज्यो खेद ॥६॥

॥ ढाल ॥

कृपण दीन अनाथ ए, रंकादिक त्यांरी जात ए। रोग शोक ने आरत ध्यान ए, त्यांने दे अनुकम्पा

घणारी लज्जावश थाय ए, सांकड़े पड्यां देवे ताय ए। देवे सचित्तादिक धन धान्य ए, यह तो पांचमों लज्जा दान ए॥ ११॥ यह तो सावद्य दान साक्षात ए, ते दियो कुपात्र हाथ ए। तिण में कहै मिश्र धर्म ए, तिण थी निश्चय बंधसी कर्म ए॥ १२॥ मुकलावो पहरावणी मुसाल ए, सगां ने जुवा जुवा संभाल ए। त्यांने द्रव्य देवे यश ने काम ए, गर्वदान छै तिणरो नाम ए॥१३॥ कीर्तियावादी मल्ल ए, रावलियां रामत चल्ल ए। नट भोपा आद विशेष ए, दान देवे त्यांने द्रव्य अनेक ए॥ १४॥ इण दान थी बंधे कर्म ए, मूर्ख कहै मिश्र धर्म ए। जेहनी प्रत्यक्ष खोटी वात ए, खोटी श्रद्धा ने मूल मिथ्यात ए॥ १५॥ गणिकादिक सेवे कुशील ए, दान दे त्यांने करावे केल ए। यह तो प्रत्यक्ष खोटो काम ए, अधर्म दान छै तिण रो नाम ए॥ १६॥ सूत्र अर्थ सिखाय ए, शुद्ध मार्ग आणे ठाय ए। आपे समकित चारित्र एह ए, धर्म दान छै आठमों तेह ए॥ १७॥ वली मिले सुपात्र आण ए, देवे निर्दोषण द्रव्य जाण ए। यह तो दान मुक्त रो मार्ग ए, तिण दियां दारिद्र जावे भाग ए॥१८॥ छःकाय मारण रा त्याग ए, कोई पचखे आणी वैराग ए। अभयदान कह्यो जिन राय ए, धर्म दान में मिलियो आय ए॥ १९॥ सचित्तादिक

॥ श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

सदा जयो जिन ज्ञान फुन सदा जयो जिनराज ।
गणधर थापक सदा जयो श्री कालू गणिराज ॥१॥
श्री गुरु देव प्रसाद थी पामें समकित साज ।
चारित देश अनें सर्व पाम्यां भव दधि पाज ॥२॥
तेरो पंथ लहि प्रभु शिशु हित शिक्षा ताज ।
गुलाब कहे नित वाँचिए जयणा युत हित काज ॥३॥

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी कृत

शिशु हित शिक्षा

द्वितीय भाग ।

प्रकाशक—

श्रावक धनसुखदास हीरालाल आंचलिया ।

श्रीगङ्गाशहर, (बीकानेर) ।

कलकत्ता

नं० १६ सीनागोग स्ट्रीट के ओसवाल प्रेस में

महालचन्द बयेद द्वारा मुद्रित ।

मिलने का पता .—

धनसुखदास हीरालाल आंचलिया ।

(१) गंगाशहर (बीकानेर)

(२) सन्थीया (बीरभूम)

चतुर्थ वार १००० } वीर सम्वत् २४५४ वि० सं० १९८४ { बिना मूल्य

विषय अणुक्रमणिका

विषय अणुक्रमणिका

विषय

॥ वन्दे जिनवरम् ॥

॥ अनुकम्पा ॥

॥ दोहा ॥

अनुकम्पा ने आदरी, कीज्यो घणा जतन ।
जिनवरना धर्म मांहिलो, समकित माय रतन ॥ १ ॥
गाय भेंस आक थोरनो, ये चारूं ही दूध ।
ज्यूं अनुकम्पा जाणज्यो, मन मे आणी शुद्ध ॥ २ ॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवे जीव काय ।
ज्यूं सावद्य अनुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोले ही मत भूलज्यो, अनुकम्पा रे नाम ।
कीज्यो अन्तर पारिखा, ज्यूं सीझे आत्म काम ॥ ४ ॥
अनुकम्पा ने आगन्या, तीर्थंकर नी होय ।
सावद्य निरवद्य ओलखे, ते तो विरला जोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहली ॥

(धिक् धिक् है नागश्री ब्राह्मणि—एदेशी)

मेघ कुमर हाथीरा भव में, श्रीजिन भाषी दया दिल आणी । ऊंचो पग राख्यो सुसलो न मार्यो, आ करणी श्रीवीर वखाणी ॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा

मे ॥ १ ॥ कष्ट सह्यो तिण पापसूं डरते, मन
सेंठी राखी तिण काया। बलता जीव दावानल
सूंड स्यूं ग्रही ग्रही बाहिर न लाया॥ आ अनुकम्पा
आज्ञा मे॥ २॥ परत ससार कियो तिण
उपन्यो श्रेणिक रै घर आई। भगवन्त आगल
लीधी, पहिला अध्ययन गिनाता मांई॥ आ अनुक
जिन आज्ञा मे॥ ३॥ मांडलो एक योजननो की
घणा जीव बचिया तिहां आई। तिण बचियारो ध
चाल्यो, समकित आयां विना समझ न काई॥
अनुकम्पा सावद्य जाणो॥ ४॥ नेम कुमर परणी
चाल्या, पशु पखी देख दया दिल आणी। इ
काम सिरै नहीं मुझने, म्हारै काज मरै बहु प्राणी
आ अनुकम्पा जिन आज्ञा मे॥ ५॥ परणीज
परिणाम फिरिया, राजमती ने ऊभी छिटकाई।
तण बन्धसूं नेम डरिया, तोड़ी आठ भवांरी सगा
आ अनुकम्पा जिन आज्ञा मे॥ ६॥ आपसूं स
जीव जाणिने, कड़वा तूंबारो कीधो आहारो। की
यांरी अनुकम्पा आणी, धन्य धन्य धर्मरुची अ
गारो॥ आ अनुकम्पा जिन आज्ञा मे॥ ७॥ फो
लब्धि अनुकम्पा आणी, गोशाला ने वीर बचायो।
लेश्या छद्मस्थ छ ता, मोह कर्म वश रागज आयो

आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ८ ॥ गोशालो असंयती कुपात्र, तिणने साक्ष शरीरनी दीधो। धर्म जाणता तो जगत दुखी थो, वली वीर ओ काम कदे नहीं कीधो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ६ ॥ तेजु लेश्या मेली गोशाले वाल्या, दोय साध भस्म करी काया। लब्ध धारी साधु हुंता घणाई, मोटा पुरुष त्यांने क्यों न बचाया ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १० ॥ जिन ऋषिए अनुकम्पा कीधी, रेणादेवी स्हामो तिण जोयो। सेलख यक्ष हेठो उताग्यो, देवी आय तिण खड्ग मे पोयो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ ११ ॥ भगता हिरण गवेषीरी सुलसां, अनुकम्पा आणी विलखी जाणी। छः बेटा देवकीरा लाया, सुलसां रे घर मेल्या आणी ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १२ ॥ यक्ष रे पाड़े हरकेशी आया, अशनादिक त्यांने नहीं दीधा। यक्ष देवता अनुकम्पा कीधी, रुधिर वमन्तां ब्राह्मण कीधा ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १३ ॥ मेघ कुमर गर्भ मांहो हूंता, सुखरे तांई किया अनेक उपायो। धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मन गमता अशनादिक खायो ॥ आ अनुकम्पा सावद्य जाणो ॥ १४ ॥ कृष्णजी नेम बन्दन ने जाता, एक पुरुष ने दुखियो जाणो। साझ दियो अनुकम्पा कीधो, एक ईंट उठाय

रै बारहवें उद्देशै, साधु नै चौमासो प्रायश्चित आवै ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २२ ॥ रासड़ो आदिक जीव सूत सूँ बंध्या छै, ते तो भूख तृषादिक अत्यन्त दुःख पावै । अनुकंपा आणी नै त्यांनै छुड़ावै, तिण नै चौमासो प्रायश्चित आवै ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २३ ॥ व्याधि अनेक कोढादिक सुणनै, तिण ऊपर वैद्य चलाई नै आवै । अनुकंपा आणी साजो कीधो, गोली चूर्ण दे रोग गमावै ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २४ ॥ लब्धधारी रा खेलादिक थी, सोलह ही रोग शरीर सूं जावै । वले साध जाणै ओ रोग सूं मरसी, अनुकंपा आणी नहीं रोग गंवावै ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २५ ॥ जो अनुकंपा साधु करै तो, उपदेश दे वैराग्य चढ़ावै । चोखे चित्त पेलो हाथ जोड़े तो, चारूं ही आहार रा त्याग करावै ॥ आ अनुकंपा जिन आज्ञा में ॥ २६ ॥ गृहस्थ भूलो उजड़ वन में, अटवी नै वले उजड़ जावै । अनुकंपा आणी साधु मार्ग बतावै, तो चार महीनां रो चारित्र जावै ॥ आ अनुकंपा सावद्य जाणो ॥ २७ ॥ अटवी में अत्यन्त दुखिया देखी, चारूं ही शरणा साधु धरावै । मार्ग पूछै तो मौन जु साधे, बोलै तो भिन्न भिन्न धर्म सुणावै ॥ आ अनुकंपा जिन आज्ञा में ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

अनुकंपा यह लोक नी, कर्म तणो बंध होय ।
ज्ञान दर्शन चारित्रतपविना, धर्म म जाणो कोय ॥ १ ॥
जे अनुकंपा साधु करे तो, नवा न बंधे कर्म ।
तिण मांहली श्रावक करे तो, तिणने पिण होसो धर्म ॥२॥
साधु श्रावक दोनां तणी, एक अनुकंपा जाण ।
अमृत सहुने सारखो, तिणरो म करो ताण ॥ ३ ॥
वर्जी अनुकंपा साधु ने, सूत्र री दे साख ।
चित्त लगाई सांभलो, श्रीवीर गया छे भाख ॥ ४ ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(हिवे सांभलज्यो नरनार एदेशी)

डाभ मुञ्जादिक नी डोरी, बंधिया करे हेला ने शोरी । शीत ताप करीने दुखिया, साता वाछे जाणे हुवां सुखिया ॥ १ ॥ उणरी अनुकंपा आणी, छोड़े छुड़ावे भला जाणी । तिणने चौमासी प्रायश्चित आवे, धर्म जाणे तो समकित जावे ॥ २ ॥ इम बांधे बधावे हुवे राजी, ज्यारो संयम जावे भाजी । ए तो सावद्य कारज जाणो, त्यारा साध किया पच्चक्खाणो ॥ ३ ॥ जीवणो मरणो नहीं चाहवे, साधु क्यांनि बधावे छुड़ावे । त्यारी लागी मुक्ति सूं ताली, तिका किणरी करे रख-

वाली ॥ ४ ॥ गृहस्थरे लागी लायो, घर बारे निकलियो न जायो। बलता जीव बिलबिल बोले, साधु जाय किंवाड़ न खोले ॥ ५ ॥ द्रव्ये भावे लाय लागी, जिणसे कोइक हुवे वैरागी। उणरी अनुकंपा आवे, उपदेश देई समझावे ॥ ६ ॥ जन्म मरण री लाय थी काढे, उणरो काम सिराड़े चाढे। पकड़ावे ज्ञानादिक डोरी, तिणथी कर्म आठूं दे तोरी ॥ ७ ॥ अनुकम्पा कियां दण्ड आवे, परमार्थ विरला पावे। निशीथ रो बारमो उद्देशो, जिन भाख्यो दया रो रेसो ॥ ८ ॥ छोड़े साध कहे सूत्र से चाल्यो, ओ तो अर्थ अणहुन्तो घाल्यो। भोला ने कुगुरां बहकाया, कूड़ा कूड़ा अर्थ लगाया ॥ ९ ॥ सिंह वाघादिक वनचारी, हिंसक जीव देखे आचारी। उणने मार कह्यां हिंसा लागे, पहिलो छिज महाव्रत भागे ॥१०॥ मत मार कहे उणरी रागी, तीजे करण हिंसा लागी। सूयगडांग छै तिणरी साखी, श्रीवीर गया छै भाखी ॥ ११ ॥ गृहस्थ रो शरीर ममता मे, साधु बैठा ममता से। रह्या धर्म शुक्ल ध्यान ध्याई, सुवा गया फिकर नहीं काई ॥ १२ ॥ इह लोगा ने परलोगा, जीवणो मरणो काम भोगा। ए तो पांचूं ही छै अतिचारो, वंछ्यां नहीं धर्म लिगारो ॥१३॥ आपको वंछे तो हो पापी, पर नो कुण घाले सन्तापो। मरणो

जीवणो वंछे अज्ञानी, सम भाव राखे ते सुज्ञानी ॥१४॥
वायरो वर्षा शीत तापो, रह्यो न रह्यो चावे तो पापो।
राज विरोध रहित ते सुकालो. उपद्रव जावे तत्कालो
॥ १५ ॥ सात बोलां रो यह विस्तारो, ते ए ओलखिया
अणगारो। घट मांही जो ममता आवे, हुवो न हुवो
एकी नहीं चावे ॥ १६ ॥ एकण रे देई चपेटी, एकण
रो उपद्रव मेटी। ए तो राग द्वेष रो चालो, दशवैका-
लिक सम्भालो ॥ १७ ॥ साधु बैठा नाव मांय आई,
नावडिये नाव चलाई। नाव फूटी मांहें आवे पाणी,
साधु देखी लोगां नहीं जाणी ॥ १८ ॥ आप डूबे अनेरा
प्राणी, अनुकंपा किण री नहीं आणी। बतावे तो
व्रता से भङ्गो, जिण रो साखो आचाराङ्गो॥१९॥ सानी
कर साध बतावे, लोग कुशले खेमे घर आवे। डूबा
पण साध न चाहवे. रह्या चाहवे तो तुरत बतावे॥२०॥
मौन साध रह्या ते सन्तो, ते करे संसार नो अन्तो।
परिणामज राखे संठा, धर्म ध्यान मे रह्या बैठा॥२१॥

॥ दोहा ॥

वांछे मरणो जीवणो. तो धर्म तणो नहीं अंश।
ए अनुकंपा कीधां थकां. बंधे कर्म नो वंश ॥ १ ॥
मोह अनुकम्पा जो करे, तिणसे राग न द्वेष।
भोग वंधे इन्द्रियां तणो, अन्तर ऊंडो देख ॥ २ ॥

दया अनुकंपा आदरी, तिण आतम आणी ठाय।
मरता देखी जगत ने, सोच फिकर नहिं काय ॥३॥
कष्ट सह्या घर मे थका, पाल्या व्रत रसाल।
मोह अनुकंपा श्रावकां, त्यां पण दीधी टाल ॥४॥
काचा था ते चल गया, हो गया चकना चूर।
सेंठा रह्या चलिया नहीं, त्यांने वीर वखाण्या शूर ॥५॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(जीव मारे ने धर्म आछो नहीं -एदेशी)

चम्पा नगरी ना वाणिया, जहाज भरी समुद्र में जाय रे। हिवे तिण अवसर एक देवता, त्यांने उपसर्ग दीधो आय रे॥ जीव मोह अनुकंपा न आणिये ॥१॥ सिनखा स्याल कांधे वैसाणिया, गले पहरी छे रुण्ड-मालरे, लोही राध सूं लीप्यो शरीरने, हाथे खड्ग दीसे विकराल रे॥ जीव० ॥ २॥ लोक धड़ धड़ लाग्या धूजवा, डर देख रह्या मन ध्याय रे। अरणक श्रावक डिगियो नहीं, तिण काउसग दीधो ठायरे॥ जीव०॥३॥ तिण सागारी अनशन कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित्त ध्यायरे। सगलां ने जाण्या डूबता, मोह करुणा न आणी काय रे॥ जीव० ॥ ४॥ अरणक श्रावकने डिगावना, देव बड बड बोले वायरे। जो तूं अरणक धर्म न छोड़सी,

दया अनुकंपा आदरी, तिण आतम आणी ठाय।
मरता देखी जगत ने, सोच फिकर नहिं काय ॥३॥
कष्ट सह्या घर मे थका, पाल्या व्रत रसाल।
मोह अनुकंपा श्रावकां, त्यां पण दीधी टाल ॥४॥
काचा था ते चल गया, हो गया चकना चूर।
सेंठा रह्या चलिया नहीं, त्यांने वीर वखाण्या शूर ॥५॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(जीव मारे ते धर्म आछो नहीं —एदेशी)

चम्पा नगरी ना वाणिया, जहाज भरी समुद्र मे जाय रे। हिवे तिण अवसर एक देवता, त्यांने उपसर्ग दीधो आय रे॥ जीव मोह अनुकंपा न आणिये ।।१॥
मिनखा रूपाल कांधे बैसाणिया, गले पहरी छै रुण्ड-माल रे, लीहो राध सूं लीप्यो शरीरने, हाथे खड्ग दीसे विकराल रे ॥ जीव० ॥ २ ॥ लोक धड़ धड़ लाग्या धूजवा, उर देव रह्या मन ध्याय रे। अरणक श्रावक डिगियो नहीं, तिण काउसग दीधो ठायरे ॥ जीव०॥३॥
तिण सागारी अनशन कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित्त ध्यायरे। सगलां ने जाण्या डूबता, मोह करुणा न आणी काय रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ अरणक श्रावकने डिगायवा, देव बद बद बोले आयरे। जो तूं अरणक धर्म न छोड़सी,

थारी जहाज डुबाऊं जल मांयरे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ ऊंची उपाड़ नीचो न्हांखने, करस्यूं सगलांरी घात रे। काली पीली असावमगा जगथा, मान रे तूं अरणक बातरे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन म्हारा व्रत ने, इणरो कीधो विघ्न न थायरे। हूं तो सेवक छूं भगवानरो, मोने न सके देव डिगायरे ॥ जीव० ॥ ७ ॥ लोक विल विल करता देखने, अरणकरो न विगड्यो नूररे। मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूररे ॥ जीव०॥८॥ देव धन्य धन्य अरणक ने कहै, तूं तो जीवादिकनो जाणरे। सुधर्मा सभा मध्ये तांहिरा, इन्द्र कीधा घणा वखाणरे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ अरणक श्रावकना गुण देखने, ए तो आया देवरी दायरे। दोय कुण्डलरी जोड़ी आपने, देव आयो जिण दिशि जायरे ॥ जीव० ॥ १० ॥ नमिराय ऋषि चारित्र लियो, तेतो बाग में उतस्या आयरे। इन्द्र आयो तिण ने परखवा, ते तो किण विध बोलै वाय रे ॥ जीव० ॥ ११ ॥ थारी अग्नि करी मिथिला बलै, एकरमां म्हासो जोय रे। अन्तेवर बलता सेलसी, आतो बात सिरै नहिं तोय रे ॥ जीव० ॥१२॥ सुख वपरायो सारा लोक में, विलखा देखे पुरवरतन रे। सो तूं दया पालणने उठियो, तो तूं करै नो यांरा यतन रे ॥ जीव० ॥ १३ ॥ नमि कहै वसूं जीऊं सुखे, म्हारो

पल पल सफली जात रे। ए तो मिथिला नगरी दाझ तां, म्हारो बले नहीं तिल मात रे॥ जीव०॥ १४॥ म्हारे हर्ष नहीं मिथिला रह्यां, बलियां नहीं शोग लिगार रे। मैं तो सावद्य जाणी त्यागी तिका, रही थली न चाहवे अणगार रे॥ जीव०॥ १५॥ नमिराय ऋषि आणी नही, मोह अनुकम्पारी बात रे। समभाव राखी मुगते गया, करी आठ कर्मा री घात रे॥ जीव० ॥ १६॥ ए तो केशव कीरो बन्धवो, ए तो नामे गज-सुकुमाल रे। तिण दीक्षा लेई काउसग कियो, सोमल आयो तिण काल रे॥ जीव०॥ १७॥ माथे पाल बांधी माटी तणी, मांहि घाल्या लाल अंगार रे। कष्ट सह्यो वेदना अति घणी, नेम करुणा न आणी लिगार रे॥ जीव०॥ १८॥ श्रीनेम जिनेश्वर जाणता, होसी गज सुकुमालरी घात रे। पहिलां अनुकम्पा आणी नही, और साधु न मेल्या साथ रे॥ जीव०॥ १९॥ श्रीवीर जिनेन्द्र चौवीसवां, जिण कल्पी मोटा अणगार रे। ज्यांने देव मनुष्य तिर्यञ्चना, उपसर्ग उपना अपार रे॥ जीव०॥ २०॥ सङ्गम देवता भगवान ने, दुःख दीधा अनेक प्रकार रे। अनार्य लोकां श्रीवीर ने, खङ्गादिक दीधा लार रे॥ जीव०॥ २१॥ चौसठ इन्द्र महोत्सव आविया, दीक्षा रे दिन भेला होय रे। पिण कष्ट पड्यो

श्रीवीर में, न आया उपसर्ग टालण कोय रे ॥ जीव० ॥ २२ ॥ दुःख देता देखी भगवान ने, देव अलगा न कीधा आय रे। समदृष्टि देव हुंता घणा, पिण किण ही न कीधी सहाय रे ॥ जीव० ॥ २३ ॥ देवां जाण्यो श्रीवर्द्धमान रे, उदय आया दीखे छे कर्म रे। अनुकम्पा आणी बीच में पड्यां, ओतो जिन भाख्यो नहीं धर्म रे ॥ जीव० ॥ २४ ॥ धर्म हुंतो तो आवो न काढता, वले वीर ने दुखिया जाण रे। परीषह देवण आया तेह ने, देव अलगा करता ताण रे ॥ जीव० ॥ २५ ॥ आतो मच्छ गलागल मड रही, सारा द्वीप समुद्रां मांय रे। भगवन्त कहता जो इन्द्र ने, तो थोड़ा में देता मिटाय रे ॥ जीव० ॥ २६ ॥ पड़ती जाणे अन्तराय तो, अचित खवाड़त पूर रे। एहवी शक्ति घणी छे इन्द्रनी, तिणथी कर्म न हुवे दूर रे ॥ जीव० ॥ २७ ॥ चूलणी पिया ने पोसा मध्ये, देव दीधो छे दुःख आय रे। कुण कुण हवाल तिणसे किया, ते सांभलज्यो चित्त लाय रे ॥ जीव० ॥ २८ ॥ तीन बेटारा नव सला किया, तिण रे मुंहडा आगे ल्याय रे। तेल उकालने मांहे तल्या, वलबलता मूं छांटो काय रे ॥ जीव० ॥ २९ ॥ सम परिणामा वेदना खमी, जाण्या आपरा सच्चा कर्म रे। करुणा न आणी अङ्ग जात री, तिण छोड़ो नहीं जिन

धर्म रे ॥ जीव० ॥ ३० ॥ मति मारणरो कह्यो नहीं, ते तो सावद्य जाणी वाय रे। करुणा न आणी मरता देख ने, सैंठो रह्यो धर्म ध्यान मांय रे ॥ जीव० ॥३१॥ देव कहै तूं धर्म न छोड़सी थांरे देव गुरु सम छै माय रे। तिण ने मारुं विध आगली, थारे मुंहडा आगै ल्याय रे ॥ जीव० ॥ ३२ ॥ जब तूं आर्त्तध्यान ध्याय ने, पड़सी माठी गति में जाय रे। इम सुणने चुलणीपिया चल गयो, मा नें राखणरो करे उपाय रे ॥ जीव० ॥३३॥ ओ तो पुरुष अनार्य कहै जिसो, झाल राखूं ज्यूं न करे घात रे। ओ तो भद्रा बचावण उठियो, इणरे थाम्भो आयो हाथ रे ॥ जीव० ॥ ३४ ॥ अनुकम्पा आणी जननी तणी, तो भाग्या व्रत ने नेमरे। देखो मोह अनुकम्पा एहवो, तिण में धर्म कहीजै कीम रे ॥ जीव० ॥ ३५ ॥ चुलणी पिया ने सुरादेवना, चूल शतक ने शकडाल रे। यां च्यारांरा मारया डीकरा, देव तलिया तेल उकाल रे ॥ जीव० ॥ ३६ ॥ जब बेटा ने मरता देखने, न आणी मोह अनुकम्पा एम रे। उठ्यो मात तियादिक राखवा, तो भाग्या व्रत ने नेम रे ॥ जीव० ॥ ३७ ॥ मात तियादिक ने राखतां, भाग्या व्रतने बंधिया कर्म रे। तो साध जाय विच में पड़ां, त्यांने किण विध होसी धर्म रे ॥ जीव० ॥ ३८ ॥

चेड़ा ने कोणिक नी वारता, निरयावलिका भगवती साख रे। मानव मुआ दोय संग्राम में, एक क्रोड़ ने अस्सी लाख रे॥ जीव०॥ ३९॥ भगवन्त अनुकम्पा आणी नहीं, पोते न गया न मेल्या साध रे। यांने पहिलां पिण वरज्या नहीं, ते तो जीवां री जाणी विराध रे॥ जीव०॥ ४०॥ एमां दया अनुकम्पा जाणता, तो वीर विचाले जाय रे। सगलां ने साता उपजावता, ए तो थोड़े में देता मिटाय रे॥ जीव० ॥ ४१॥ कोणिक भक्त भगवान रो, चेड़ो बारह व्रत धार रे। इन्द्र भीड़ आयो ते समकिती, ते किण विध लोपता कार रे॥ जीव॥ ४२॥ ज्ञान दर्शन चारित्र मांहिलो, किण रे वधतो जाणे उपाय रे। करे अनुकम्पा भव जीव री, वीर विगर बुलायां जाय रे॥ जीव०॥ ४३॥ समद्रपाल सुखा में भिल रह्यो, संसार विषय सुख लाग रे। तिण चोर ने मरतो देखने, उपनो उत्कृष्ट परम वैराग्य रे॥ जीव०॥ ४४॥ चारित्र लियो कर्म काटवा, जाणी मोक्ष तणो उपाय रे। करुणा न आणी चोर री, छुडावण री न काढ़ी वाय रे॥ जीव० ॥ ४५॥ साधु श्रावक नी एक रीत छै, तुमे जोवो सूत्र रो न्याय रे। देखो अन्तर मांहि विचारने, कूड़ी कांय करो बकवाय रे॥ जीव०॥ ४६॥

॥ दोहा ॥

दुखिया देखी तावड़ै, जो नहीं मेले छांय।
साध श्रावक न गिणै तेहने, ए अन्यतीर्थी नी वाय ॥ १ ॥
मार्‌यां मरायां भलो जाणियां, तीनूं ही करणा पाप।
देखण वाला ने कहै, खोटो कुगुरु सन्ताप ॥ २ ॥
कर्म करने जीवड़ा, उपजै नै मर जाय।
असंयम जीतव तेहनो, साधु न करै उपाय ॥ ३ ॥
देख मांछो मांही विणशतां, अलगा करदे जाय।
एम कहै तिण ऊपरै, साधु बतावै न्याय ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

(श्रीजिन धर्म जिन आज्ञा निहीं—एदेशी)

नाडो भरियो हो डेडक माछलां, मांही नीलण फूलण रो पूर हो। भविकजन, लट पुहरा आदि जलोक सूं, त्रस स्थावर भरियो अपूर हो। भविक जन, करज्यो पारिखा जिन धर्म री ॥ १ ॥ सुलिया धान तणा ढिगला पड़्या, मांहि लटां ने इल्यां अथाग हो ॥ भ० ॥ सुल-सुलिया ईयड़ा अति घणा, ते तो टलवल करै तिण सांग हो ॥ भ० क० ॥ २ ॥ गाडो भरियो जमीकन्द सूं, तिण में जीव कह्या छै अनन्ता हो ॥ भ० ॥ च्यार पर्याय च्यार प्राण छै, मार्‌यां कष्ट कह्यो भगवन्ता हो ॥ भ० क०

॥ ३ ॥ काचा पाणी तणा माटा भर्या, अणगण जीव है अणगल नीर हो ॥ भ० ॥ नीलण फूलण आदि दश घणी. तिणसे अनन्त बताया वीर हो ॥ भ० क० ॥ ४ ॥ खात भीनी उकरड़ी जठां वणी, गिंडोला ने गधेया जाग हो ॥ भ० ॥ टरबल टरबल कर रह्या, थाने कर्मां न्हाख्या आग हो ॥ भ० क० ॥ ५ ॥ कोइक जागां ने उन्दर घणा फिरै. आसा ने न्हासा अथाग हो ॥ भ० ॥ थोड़ो सो खड़को सांभलें, तो जाय दिशां दिशि भाग हो ॥ भ० क० ॥ ६ ॥ गुड खांड़ आदि मिठान्न सें. जीव चिहुंदिशि डोड्या जाय हो ॥ भ० ॥ माखी ने मांछा फिर रह्या, ते तो दुखको करै मांहो मांय हो ॥ भ० क० ॥ ७ ॥ नाडो देखि ने आवै भैंसिया, वान टूका है वकरा आय हो ॥ भ० ॥ गाडै आया वलद पाथरा माटें आय ऊभी छै गाय हो ॥ भ० क० ॥ ८ ॥ दबी दुबी उकरड़ो ऊपरै, उन्दर पासे तिनको जाय हो ॥ भ० ॥ मांखी ने माछो पकड़ ले, माथु किण ने बंचावै छुडाय हो ॥ भ० क० ॥ ६ ॥ भैंस्यां डांकल नाडा माहली. तो मगरां रे माता थाय हो ॥ भ० ॥ वकरा है अलगा किया थकां. ईगडादिक जीव बच जाय हो ॥ भ० क० ॥ १० ॥ थोड़ा सा बलदां ने हांकदे तो न मरै जन्तो काय हो ॥ भ० ॥ पाणी पुरुषादिक

किण विध न मरे, जो नेड़ी न आण दे गाय हो ॥ भ० क० ॥ ११ ॥ लट गिगडोलादिक कुशले रहै, जो ते पंखी ने देवे उड़ाय हो ॥ भ० ॥ मिनको धकाल उन्दर बचायले, तो उन्दर घर शोक न थाय हो ॥ भ० क० ॥ १२ ॥ थोड़ोसो माको आगो पाछो कियां, माखी नाठी उडजाय हो ॥ भ० ॥ साधां रे सगला सारखा, ते न पड़े बीच में जाय हो ॥ भ० क० ॥ १३ ॥ मिनको धकाल उन्दर बचायले, माखी राखे मांका ने धिकाय हो ॥ भ० ॥ और मरता देख राखे नहीं, यामे चूक पड़ी ते बताय हो ॥ भ० क० ॥ १४ ॥ साधु पीयर बाजे छ:कायरा, एक छुड़ावे लमकाय हो ॥ भ० ॥ पांच काय मरतो देख राखे नहीं, ते पीयर किण विधि थाय हो ॥ भ० क० ॥ १५ ॥ रजोहरणो लेइ ने उठिया, जोरी दावे देवे छुडाय हो ॥ भ० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप मांहिलो, यांरे वधियो ते मोय बताय हो ॥ भ० क० ॥ १६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप बिना, और मुक्ति रो नहीं है उपाय हो ॥ भ० ॥ छोडमेला उपकार संसार ना, तेथी सिद्ध गति किण विध थाय हो ॥ भ० क० ॥ १७ ॥ जितरा उपकार संसार रा, ते तो सगला ही सावद्य जाण हो ॥ भ० ॥ श्रीजिनधर्म मांहो आवे नहीं, ते कूड़ी म करो ताण हो ॥ भ० क० ॥ १८ ॥

दूजो पर ना प्राण। तीजो पिण भलो जाणि मारियां, ये तीनूं ही हो जीव हिंसक जाण॥ भ०॥ २॥ एक कुशील सेवै इण्यौं थको, सेवावे हो ते तो दूजो करण जोय। तीजो पिण भलो जाणै सेवियां, यां तीनां रै हो कर्म तणो बन्ध होय॥ भ०॥ ३॥ यां सगलांई ने सत गुरु मिल्या, प्रतिबोध्या हो आख्या मारग ठाय। हिवै किण २ जीवां ने साधां उद्धर्‌या, तिणरो सुणज्यो हो विवरा सुध न्याय॥ भ०॥ ४॥ चोर हिंसक ने कुशीलिया, यांरै तांई हो साधां दियो उपदेश। त्यांने सावद्य रा निर्वद्य किया, एहवो छै हो जिन दया धर्म रेस॥ भ०॥ ५॥ ज्ञान दर्शन चारित तप तणो, साधां कीधो हो तिण री उपकार। ए तो तरणतारण हुवा तेहना, उतार्‌या हो त्यांने संसार थी पार॥ भ०॥ ६॥ चोर तीनूं ही समझ्यां थकां, धन रह्यो हो धणी री कुशले खेम। हिंसक तीनूं ही प्रतिबोधिया, जीव बचिया हो किया मारण रा नेम॥ भ०॥ ७॥ जे शील आदरियो तेहनी, स्त्री हो पड़ी कूवा मांही जाय। यां रो पाप धर्म नहीं साधु ने, रह्या मुवा हो तीनूं अव्रत मांय॥ भ०॥ ८॥ धन रो धणी राजी हुवो धन रह्यो, जीव बचिया हो ते पिण हर्षित थाय। साधु तिरण तारण नहीं तेहना, नारी ने हो नहीं डुबोई आय॥ भ०॥ ९॥

केई मूढ मिथ्याती इम कहै. जीव बचिया हो धर्म रह्यो तिण रो धर्म। तो उण री श्रद्धा रे लेखे, मुई हो तिण रा लाग्या पाप कर्म॥ भ०॥ १०॥ जीव जीवे ते दया नहीं, मरै ते तो हो हिंसा मति जाण। मारणवाला ने हिंसा कही, नहीं मारै हो ते तो दया गुण खाण॥ भ०॥ ११॥ सर द्रह तालाव फोड़ण तणा, सूंस लेई हो मेट्या आवता कर्म। सर द्रह तालाव भर्या रह्या, तिण मांहि हो नहीं जितजी रो धर्म॥ भ०॥ १२॥ नीम्ब आमादिक वृच ना, किण ही कीधा हो वाढ़ण रा नेम। तो अव्रत घटी तिण जीव रै, वृच ऊभा रह्या हो तिण रो धर्म केम॥ भ०॥ १३॥ लाडू घेवर आदि पकवान ने, खावा छोड्या हो आत्म आणी तिण ठाय। तो वैराग्य वध्यो उण जीव रै, लाडू रह्या हो तिण रो धर्म न थाय॥ भ०॥ १४॥ दव देवो गांव जलाइवो. इत्यादिक हो सावद्य कार्य अनेक। साधु सर्व छुड़ावे समझाय ने, सगलां रो हो विधि जाणो तुमे एक॥ भ०॥ १५॥ केईक अज्ञानी इम कहै, छः काय काजे हो देवा छा उपदेश। एकण जीव ने समझावियां. मिट जावे हो घणा जीवां रा कलेश॥ भ०॥ १६॥ छः काय घर साता हुवे, एहवो भाषे हो अन्यतीर्थी धर्म। त्यां भेद न पायो जिन धर्म रो, ते तो भूला हो

रहे आया अशुभ कर्म ॥ भ० ॥ १७ ॥ हिवै साधु कहै
तुमे साम्भलो, छः काया रै हो साता किण विध थाय।
शुभाशुभ बांध्या ते भोगवै, नहीं पाम्यो हो त्यां मुगत
उपाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ इणा संस किया छः काय ना,
तिणरै टलिया हो मैला अशुभ कर्म पाप। ज्ञानी जाणै
साता हुई तेहने, मिट गया हो जन्म मरण सन्ताप ॥
भ० ॥ १९ ॥ साधु तिरण तारण हुवा तेहना, सिद्ध
गति में हो मेल्या अविचल ठाम। छः काय त्यांरै
भिलती रही, नहीं सीझ्या हो त्यांरा आत्म काम ॥
भ० ॥ २० ॥ आगे अरिहन्त अनन्ता हुवा, कहितां
कहितां हो नहीं आवै त्यांरो पार। ते आप तिर्‍या और
तारिया, छः काया रै हो साता न हुई लिगार ॥ भ०
॥ २१ ॥ एक पोते वच्यो मरवा थकी, दूजो कीधो हो
तिण रो जीवण रो उपाय। तीजो पिण भलो जाणै
जीवियां, यां तीनां मे हो सिद्ध गति कुण जाय ॥ भ०
॥ २२ ॥ कुशले रह्यो तिण रै अव्रत घटी नहीं, तो
दूजां ने हो तुमे जाणज्यो एम। भलो जाण्यो तिण रै
व्रत न नीपनो, ये तीनूं ही हो सिद्ध गति जासी केम
॥ भ० ॥ २३ ॥ जीवियां जीवायां भलो जाणियां, ए
तीनूं ही हो करण सरीखा जाण। कोई चतुर होसी ते
समझसी, अणसमझ्यां हो करसी ताणाताण ॥ भ०

केई मूढ मिथ्याती इम कहै, जीव बचिया हो धर्म रह्यो तिण रो धर्म। तो उण री श्रद्धा रे लेखे, स्त्री मुई हो तिण रा लाग्या पाप कर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ जीव जीवै ते दया नहीं, मरै ते तो हो हिंसा मति जाण। मारणवाला ने हिंसा कही, नहीं मारे हो ते तो दया गुण खाण ॥ भ० ॥ ११ ॥ सर द्रह तालाव फोड़ण तणा, सूंस लेई हो मेट्या आवता कर्म। सर द्रह तालाव भर्या रह्या, तिण मांहि हो नहीं जिनजी रो धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ नीम्ब आमादिक वृक्ष ना, किण ही कीधा हो वाढ़ण रा नेम। तो अव्रत घटी तिण जीव रै, वृक्ष ऊभा रह्या हो तिण रो धर्म केम ॥ भ० ॥ १३ ॥ लाडू घेवर आदि पकवान ने, खावा छोड्या हो आत्म आणी तिण ठाय। तो वैराग्य वध्यो उण जीव रै, लाडू रह्या हो तिण रो धर्म न थाय ॥ भ० ॥ १४ ॥ दव देवो गांव जलाइवो, इत्यादिक हो सावद्य कार्य अनेक। साधु सर्व छुड़ावै समझाय ने मरना री हो विधि जाणो तुम एक ॥ भ० ॥ १५ ॥ केईक अज्ञानी इम कहै, छः काय काजे हो देवां छां उपदेश। एकण जीव ने समझावियां मिट जावे हो घणा जीवां रा कलेश ॥ भ० ॥ १६ ॥ छः काय घर माता कुवे, एहवो भाषै हो अन्यतीर्थी वचन। त्यां भेद न पायो जिन धर्म रो, ते तो भूला हो

आया अशुभ कर्म ॥ भ० ॥ १७ ॥ हिवे साधु कहे रे साम्भलो, छः काया रे हो साता किण विध थाय। आशुभ बांध्या ते भोगवे, नहीं पाम्यो हो त्यां मुगत पाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ हणवा सूंस किया छः काय ना, तिणरे टलिया हो मैला अशुभ कर्म पाप। ज्ञानी जाणे साता हुई तेहने, मिट गया हो जन्म मरण सन्ताप ॥ भ० ॥ १९ ॥ साधु तिरण तारण हुवा तेहना, सिद्ध गति में हो मेल्या अविचल ठाम। छः काय लारे झिलती रही, नहीं सीझा हो त्यांरा आत्म काम ॥ भ० ॥ २० ॥ आगे अरिहन्त अनन्ता हुवा, कहितां कहितां हो नहीं आवे त्यांरो पार। ते आप तिरया और तारिया, छः काया रे हो साता न हुई लिगार ॥ भ० ॥ २१ ॥ एक पोते बच्यो मरता थको, दूजो कीधो हो तिण रो जीवण रो उपाय। तीजो पिण भलो जाणे जीवियां, यां तीनां में हो सिद्ध गति कुण जाय ॥ भ० ॥ २२ ॥ कुशले रह्यो तिण रे अव्रत घटी नहीं, तो दूजां ने हो तुमे जाणज्यो एम। भलो जाण्यो तिण रे व्रत न नीपनो, ये तीनूं ही हो सिद्ध गति जासी केम ॥ भ० ॥ २३ ॥ जीवियां जीवायां भलो जाणियां, ए तीनूं ही हो करण सरीखा जाण। कोई चतुर होसी ते समझसी, अणसमझ्यां हो करसी ताणाताण ॥ भ०

अवसरेजी, हाथ फेरयां सुख थाय ॥ च० ॥ ३ ॥ साधु पधास्या देखनेजी, गृहस्थी बोल्या आय। थे हाथ फेरो पेट ऊपरे, सो श्रावक जीवां जाय ॥ च० ॥ ४ ॥ जद कहे हाथ न फेरणोजी, साधां ने कल्पै नांय। थे कहता जीव बचावणा, अब बोल ने बदलो कांय ॥ च० ॥ ५ ॥ गोशाला ने वीर बचावियोजी, तिण में कहो छो धर्म। सो श्रावक नहीं बचावियां, ज्यांरी सरधा रो निकल्यो भ्रम ॥ च० ॥ ६ ॥ गोशालारे कारणे जी, लब्धि फोरी जगन्नाथ। सो श्रावक मरता देखने, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ७ ॥ धर्म कहो भगवन्त ने तो पोते कांय छोड़ी रीत। सो श्रावक नहीं बचावियां, त्यांरी कुण मानसी प्रतीत ॥ च० ॥ ८ ॥ गोशालाने बचावियां में, धर्म कहो साचात। सो श्रावक मरता देख ने, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ९ ॥ इम कह्यां जाब न ऊपजै, जब कूड़ी करै बकवाय। हिवै साध कहै तुमे सांभलोजी, गोशाला रो न्याय ॥ च० ॥ १० ॥ साधां ने लब्धि न फोड़णीजी, सूत्र भगवती मांय। पिण मोह कर्म वश राग थो, तिणसूं लियो गोशालो बचाय ॥च०॥११॥ छः लेश्यां हूंती जद वीर में जी, हूंता आठूं ही कर्म। छद्मस्थ चूक्या तिण समयजी, मूरख थापै धर्म ॥ च० ॥ १२ ॥ छद्मस्थ चूक पड्यो तिकोजी, मूंढै थापै बोल।

पिण निर्वद्य कोय म जाणज्योजी, अकल हियारी खोल ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्यूं आनन्द श्रावक ने वरेजो, गौतम बोल्या कूर। पड़िया छद्मस्थ चूक मे. शुद्ध हुय गया वीर हजूर ॥ च० ॥ १४ ॥ इम अवश उदय मोह आवियोजी, नहीं टाल सक्या जगन्नाथ। ए तो न्याय म जाणियोजी, ज्यांरे मांहे मूल मिथ्यात ॥ च० ॥१५॥ गोशालाने नहीं बचावता, तो घटतो अच्छेरो एक। निश्चय होनहार टलै नहीं, थे समझो आण विवेक ॥ च० ॥ १६ । गोशाले ने बचावियो तो, वधियो घणो मिथ्यात। लोहो ठाण कियो भगवन्त ने, वले दोय साधां री वात ॥ च० ॥ १७ ॥ गोशाले ने बचाविया मे, धर्म जाणो जो स्वाम। दोय साध बचावत आपणा, वले करता धाहिज काम ॥ च० ॥ १८ ॥ गोशाला ने बचाविया मे, धर्म जाणे जिनराय। तो दोय साध न राख्या आपणा, ओ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ १९॥ जगत ने मरता देखनेजी, आडा न दीधा हाथ। धर्म हुंतो तो पाछो न काढ़ता, ए तो तरणतारण जगन्नाथ ॥ च० ॥ २० ॥ ठहयो विवरो शुद्ध बतावियोजी, सूत्र भगवती माय। कोई कुबुद्धि करे कदाग्रहोजी, सुबुद्धि रे दाय ॥ च० ॥ २१ ॥ कहै साधां रे सुख पामलै, वर्षा पड़िवो माल्या थाय। तो मेला

ठेकाणे, हाथ सूं, म्हारे दया रहै घट मांय ॥च०॥२२॥ तपसी श्रावक उपासरेजी, काउसग दीधो ठाय। त्यांने मृगी आइ ने ढह पड़्योजी, गावर भांजी जीव जाय॥ च० ॥ २३ ॥ कोई गृहस्थ आय ने इम कहैजी, थे मोटा छो मुनिराज। बैठो न कीधो एह ने, ओ मरे छै गावर भांज ॥ च० ॥ २४ ॥ जद तो कहै म्है साधछांजी, श्रावक बैठो करां किम। म्हारे काम कांई गृहस्थमूंजी, बोलै पाधरा एम ॥ च० ॥ २५ ॥ श्रावक बैठो करै नही, पंखी मेलै माला रे मांय। देखो पूरो अन्धेरो एहनो, ओ चौड़े भूला जाय ॥ च० ॥ २६ ॥ पंखी माला मांहे मेलतांजी, शंके नहीं मन मांय। श्रावक ने बैठो कियां में, धर्म न श्रद्दे कांय ॥ च० ॥ २७ ॥ इतरी समझ पड़े नही, त्यामें समकित पावे किम। छकिया मोह मिथ्यात में, बोलै मतवाला जेम ॥ च० ॥ २८ ॥ कहै साधां ने उन्दर छुड़ावणोजी, मिनकी पासे जाय। श्रावक बैठो करे नहीं, ओ किण विध मिलसी न्याय॥ च० ॥ २९ ॥ मूसादिक ने बचावतांजी, मिनकी ने दुःख थाय। श्रावक ने बैठो कियांजी, नहीं किण रे अन्तराय ॥ च० ॥३०॥ मूसादिक रे कारणेजी, मिनकी नसाड़े डराय। श्रावक मरे मुख आगले, बैठो न करे हाथ संभाय ॥ च० ॥ ३१ ॥ ९ प्रत्यक्ष बात मिले

॥ दोहा ॥

मच्छ गलागल लोक में, सबला निबलां ने खाय।
तिण मे धर्म परूपियो, कुगुरां कुबुद्धि चलाय ॥१॥
मूला जमीकन्द खुवाइयां, कहै छै मिश्र धर्म।
र श्रद्धा पाखण्ड्यां आदर्‌यां, गाडा बन्धसी कर्म ॥२॥
मूला खुवायां पाणी पावियां, सचितादिक द्रव्य अनेक।
खाधां खवायां भलो जाणियां, यां तीनांरी विधि एक ॥३॥
ये तो न्याय न जाणियो, ऊजड़ पड़िया अजाण।
करण योग विकटाविया, ए मिथ्यादृष्टि अनाण ॥४॥
कुहेत लगावे जीवने, हिंसा धर्म भापन्त।
छिवे सात दृष्टान्त साधु कहै, ते सुणज्यो कर खन्त ॥५॥
मूला पाणी अग्नि नो, चौथो छोकारो जाण।
त्रस जीव कलेवर तणो, सातमो मनुष्य बखाण ॥६॥
त्यामें तीन दृष्टान्त करड़ा कह्या, ते जाणे अज्ञानी विरुद्ध।
समदृष्टि जिन धर्म ओलख्यो, ते न्यायसूं जाणे शुद्ध ॥७॥
केशीकुमर दृष्टान्त करड़ा कह्या, तो छोड़ी परदेशी रूढ़।
न्याय मेल हुवो समकिती, झगड़ो झाले ते मूढ़ ॥८॥
जिणरी बुद्धि छै निर्मली, ते लेसी न्याय विचार।
सुणे भारी कर्मा जीवड़ा, तो लड़वा ने छै त्यार ॥९॥
छिवे सात दृष्टान्त धुरसूं चले, आगे घणो विस्तार।
भिन्न भिन्न भवियण सांभलो, अन्तर आंख उघार ॥१०॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(वीर सुणो मोरी विनती—एदेशी)

मूला खवायां मिश्र कहै, लगावै हो खोटा दृष्ट एह। पाप लागो मूलां तणो, धर्म हुवो हो खाधां ववि तेह। भवियण जिन धर्म ओलखो ॥ १ ॥ कहै ग्रं वाव खिणावियां, हिंसा हुई हो तिण रा लाग्या कर्म। लोक पियै कुशले रहै, साता पामी हो तिण रो धं धर्म ॥ भ० ॥ २ ॥ इम कही मिश्र परूपतां, नहि श हो करता वकवाय। इण श्रद्धा रो प्रश्न पूछियां, जा न आवै हो जब लोग लगाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ हिवे सा दृष्टान्त री थापना, त्यांरी सुणज्यो हो विवरा सुध वात निर्णय कीजो घट भीतरै, बुद्धिवन्ता हो छोड़ि ने पक्ष पात ॥ भ० ॥ ४ ॥ सौ मनुष्यां ने मरता राखिया मूला गाजर हो जमीकन्द खुवाय। वले मरता राख्या सौ मानवी, काचो पाणी हो त्यांने अणगल पाय ॥भ०॥ ५ ॥ पो माह महीने ठारी पड़े, तिण काले हो वाजे शीतल वाय। अचेत पड्या सौ मानवी, मरता राख्या हो त्याने अग्नि लगाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ पेट दुखै तड़फड़ करै, जीव डोकरा हो करै हाय तिराय। साता उप-राई सौ जणा, मरता राख्या हो त्याने होको पाय। भ० ॥ ७ ॥ सौ जणा दुर्भिक्ष काल में, अन्न विना

ो मरै उजड़ मांय। कोईक मारै तसकाय ने, सौ
ाणां ने हो मरता राख्या जिमाय॥ भ० ॥ ८ ॥ किण-
हेक काले अन्न विना, सौ जणांरा हो जुदा हुवै जीव
ाय। सहजे कलेवर सुवो पड्यो, कुगले राख्या हो
यांने तेह खुवाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ वले मरता देखो सौ
ागला, समाई विना हो ते साजा न थाय। कोई
समाई करै एक मनुष्य री, सौ जणांरे हो साता कीधी
बचाय ॥ भ० ॥१०॥ जमीकन्द खुवायां पाणी पावियां,
त्यां में थापे हो पाप ने धर्म दोय। तो अग्नि लगाय
होको पाविया, इत्यादिक हो सगले मिश्र होय ॥ भ० ॥
११ ॥ जो धर्म कहे वचिया तिको, हण्या तिण रा हो,
लाग्या जावे कर्म। तो सातां ही सरीखा लेखवे, कह
देना हो सगले पाप ने धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ जो सातां
मे मिश्र कहे नहीं, तो किम आवे हो, यांरी बोल्यां री
प्रतीत। आप थापे आप उथापे, तो कुण माने हो, आ
घणा विपरीत ॥ भ० ॥ १३ ॥ जो सातां ही में मिश्र
कहे, तो नहीं लागे हो गमती लोकांमे वात। भिक्षुती
कयां भिन तेहनीं, कुण करै हो कूड़ां री पखपात
॥ भ० ॥ १४ ॥ एक दोय बोलां मे मिश्र कहे, सगलां
मे हो कहतां लाजे कूड। एहवो उलटो पन्थ झालियो,
त्यांरे फेंडे हो बूडे कर कर रूढ ॥ भ० ॥१५॥ सौ सौ

मनुष्य सगले बच्चा, थोड़ी घणो हो हुई सगले वात। जो धर्म वरोवर न लेखवे, तो उत्थप गयी हो सूत्रां पनी वात ॥ भ० ॥ १६ ॥ बाल उत्थपती जाणने, कदे कांई हो, सगले पाप ने धर्म। पिण समदृष्टि थई नहीं, ए तो काढ्यो हो खोटो थप्पा रो भ्रम ॥ भ० ॥ १७ ॥ असयती रो मरणो जीवणो, वांछा कीधां हो निश्चय राग न द्वेष। ए धर्म नहीं जिन भाषियो, संशय हुवे तो हो, अङ्ग उपांग देख ॥ भ० ॥ १८ ॥ काच तणा देख मिणकला, अणसमझु हो, जाणे रत्न अमोल। ते निः ग्या पडियां सराफ री, कर दीधा हो त्यांरा कोडां मोल ॥ भ० ॥ १९ ॥ मूला खुवायां मिश्र कहे, ए थप्पा हो काच मिणिया समान। तो पिण धारो रत्न अमोल ज्यूं, न्याय न सूझे हो चाला कर्मा रा जान ॥भ०॥२०॥ जीव मारी झूठ बोलने, चोरी करने हो पर जीव बचाय। वले करे अकारज एहवो, मरता राखे हो मैथुन सेवाय ॥भ०॥२१॥ धन दे राखे पर प्राणने, क्रोधादिक हो अठारे ई सेवाय। एहवा कामां पोते करी, पर जीवां ने हो मरता राखे ताय ॥भ०॥२२॥ हिंसा करी जीव राखिया, तिण मे श्रामा हो धर्म न पाप होय। तो इम अठारे ई जाणजो, ए चर्चा मां हो बिरला समझे कोय। भ० ॥ २३ ॥ जो एकण मे मिश्र कहे, सतरे मे पु

ापा बोलै और। ऊंधी श्रद्धा रो न्याय मिलै नहीं, ाद उलटो हो कर उठै झोर ॥ भ० ॥ २४ ॥ जीव मारि ीव राखण्या, सूत में हो नहीं भगवन्त वेण। ऊंधो न्थ कुगुरां चलावियो, शुद्ध न सूझै हो फूटा अन्तर ैण ॥ भ० ॥ २५ ॥ कोई जीवता मनुष्य तिर्यञ्च ना, ोम करै हो युद्ध जीतण संग्राम। एक तो ओ पाप मोटको, जीव होम्या हो दूजो सावद्य काम ॥ भ० ॥२६॥ कोई नाहर कसाई ने मारने, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक। जो गिणै दोयां ने सारखा, त्यांरी बिगड़ी हो श्रद्धा बात विवेक ॥ भ० ॥ २७ ॥ पहला कहता जीव बचावणो, तिण लेखे हो बोलै शुद्ध न काय। जीव बचियां रो धर्म गिनै नहीं, खिण थापै हो खिण में फिर जाय ॥ भ० ॥ २८ ॥ देवल ध्वजा तेहनी परै, फिरता बोलै हो न रहै एकण ठाम। त्यांने पाखण्डी जिन कह्या, झगड़ो झाल्यो हो नहीं चर्चा रो काम ॥ भ० ॥ २९ ॥ जो एकण में अधर्म कहै, दूजा में हो कहै धर्म ने पाप। ए लेखो कियां तो लड़ पड़ै, त्यांरै घट में हो खोटी श्रद्धा री थाप ॥ भ० ॥ ३० ॥ बलै गरथो लेई श्रेणिक तणो, सावद्य बोले हो तिण री खबर न कांय। जीवां रा ने पैसा ने बदलियां, तिण मांहि हो जिन धर्म बताय ॥ भ० ॥ ३१ ॥ कहै श्रेणिक पडहो बजा-

यां परणियां, उच्छवादिक हो थोरी शीतला जाण।
वे कारण कोई जपनें, श्रेणिक राजा हो फेरो नगर
आण ॥ भ० ॥४०॥ ते तो रुकिया नहीं कर्म भावता,
हीं कटिया हो तिण रा आगला कर्म। वले नरक
ातो रह्यो नहीं, न सिखायो हो भगवन्त यो धर्म ॥
० ॥ ४१ ॥ भगवन्त मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या
। आख्या मारग ठाय। साधु श्रावक धर्म बतावियो,
सिखायो हो पड़हो फेरणो ताय ॥ भ० ॥ ४२ ॥ तो
णिक सीख्यो किण आगले, भगवन्तने हो पूछ्यां माऊ
न। यले न जणावे आमना, आज्ञा बिना हो करणी
ाणो जबून ॥ भ० ॥ ४३ ॥ वासुदेव चक्रवर्ती मोटका,
ांरी वर्त्ते हो तीन छः खण्ड में आण। जो पड़हो
ियां मुगत मिले, तो कुण काढे हो थांघो जिन धर्म
जाण ॥ भ० ॥४४॥ कोई विमन वाला मिनख ने, विमन
मातं हो बिना मन दे छुड़ाय। जो इण विध जिन
धर्म निपजे, तो छः खण्ड में हो बरजे आण फिराय ॥
भ० ॥ ४५ ॥ फल फूलादिक अनन्त काय में, हिंसा-
दिक हो अठारह पाप जाण। जोरी दावे पेला ने सर्व
कियां, धर्म हुवे तो हो फेरे छः खण्ड में आण ॥ भ०
॥ ४६ ॥ वले तीर्थंकर घर में थकां, त्यां में हुंता हो
तीन ज्ञान विशेष। वले फल-फूलन री सीम में, त्यां

न फेर्यो हो पड़हो सूत्र देख ॥ भ० ॥ ४७ ॥ बलदे
दिक मोटा राजवी, घर छोड़ी हो किया पाप रा
खाण। श्रेणिक जिम पड़हो न फेरियो, जोरी
हो न बरताई आण ॥ भ० ॥ ४८ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रव
र्तीह ने, चित्त मुनि हो समझावण आय। साध श्रा
वक रो धर्म बताबियो, पड़ह री हो न कही आमना काय।
भ० ॥ ४९ ॥ बीसां भेदे रुके कर्म आवता, बारह भेदे
हो कटे आगला कर्म। ए मोक्ष रो मारग पाधरो, शेष
मेला हो सगला पाखण्ड धर्म ॥ भ० ॥ ५० ॥ दोय श्रावक
कसाई वाड़े गयो, करता देखो हो जीवां रा संहार
दोनूं जणा मतो करी. मरता राख्या हो जीव दोय
हजार ॥ भ० ॥ ५१ ॥ एक गहणो देई आपणो, तिण
छुड़ाया हो जीव एक हजार। दूजो छुड़ाया द्रव्य दिये,
एक दोयमूं हो चौथो आस्रव सेवाड़ ॥ भ० ॥ ५२ ॥
एकण ने पाखण्डी मिश्र कहे, दूजो ने हो पाप किण
विध होय। जीव बराबर बचाविया, फेर पड़सी हो ते
तो पाप में जोय ॥ भ० ॥ ५३ ॥ एकण सेवायो आस्रव
पांचमो, तो उण दूजो हो चौथो आस्रव सेवाय। फेर
पड्यो तो द्रव्य पाप में, धर्म होसी हो ते तो सरीखो
थाय ॥ भ० ॥ ५४ ॥ एकण ने धर्म कहतां लाजे
नहीं, दूजो ने हो कहतां आणे गाढ़। जब लोका मु

रै लगावणो, एहवा जाणो हो चौड़े कुगुरां डङ्क ॥भ०॥
॥ एक वेश्या सावद्य कामो करी, सहस्र नाणो हो
चली घर मांय। दूजी कर्त्तव्य करी आपणो, मरता
लया हो सहस्र जीव छुड़ाय॥ भ० ॥ ५६ ॥ धन
ाण्यो खोटा कर्त्तव्य करी, तिण रै लाग्या हो दोनूं
ाप कर्म। तो दूजी छुड़ाया तेह ने, उण लेखे हो
वो पाप ने धर्म॥ भ० ॥ ५७ ॥ पाप गिणे मैथुन में,
ीव वचिया हो तिण रो न गिणे धर्म। पोते ब्रह्मचारी
ावर पोते नहीं, ताण ताण हो बांधे भारी कर्म ॥भ०॥
८॥ इण प्रश्न रो जाब न उपजे, चर्चा में हो चटके
ामो ठाम। तो पिण निर्णय करे नहीं, बक उठे हो
ीवां रो ले नाम॥ भ० ॥ ५९ ॥ जीव जीवे काल
ानादि रो, मरै तिण री हो पर्याय पलटी जाण।
ंवर निर्जरा तो न्यारा कह्या, ते ले जावे हो जीव ने
िर्वाण॥ भ० ॥ ६० ॥ पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायरो,
ानस्पति हो छठो त्रसकाय। मोलसूं छुड़ावे तेह ने,
र्म होसी हो ते तो सगलां में थाय॥ भ० ॥ ६१ ॥
त्रसकाय छुड़ायां में धर्म कहै, पांच काय में हो बोलै
नहीं निःशंक। भ्रम में पाड्या लोक ने, त्यां लगाया हो
मिथ्यात रा डङ्क॥ भ० ॥६२॥ त्रिविधे छः काय हणवां
नहीं, एहवी छै हो भगवन्तरी वाय। तीन त्रियां धर्म

॥ ढाल आठवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—एदेशी)

द्रव्ये लाय लागी भावे लाय लागी, द्रव्य कूवो ने
वे कूवो । ये भेद न जाणे मूढ मिथ्याती, संसार ने
ात रो मारग जूवो ॥ भेष धरने भूलां रो निरणो
ज्यो ॥१॥ कोई द्रव्य लाय सूं बलता न राखे, द्रव्य
में पड़ता ने झाल बचायो । ए तो उपकार कियो इण
व रो, विवेक विकल त्यांने खबर न कायो ॥ भे०
२ ॥ घट में ज्ञान घाली ने पाप पचखावे, तिण
ड़तो राख्यो भव कूवा मांयो । भावे लाय बलता ने
ाढ़े ऋषीश्वर, ते पिण गहिला भेद न पायो ॥ भे०
३ ॥ सूने चित्त सूल वांचे मिथ्याती, द्रव्य ने भाव
ा नहीं निवेरा । परिवार सहित कुपन्थ में पड़िया,
यां नरकां रे सन्मुख दीना डेरा ॥ भे० ॥ ४ ॥ गृहस्थ
ा औषध भेषज देई ने, अनेक उपाय कर जीवां
ाचायो । ए संसार तणो उपकार कियां में, मुक्ति रो
ारग मूढ बतायो ॥ भे० ॥ ५ ॥ करे यन्त्र मन्त्र झाड़ा
कपटा, सर्पादिक रो जहर देवे उतारी । काढ़े डाकण
ााकण भूत यक्षादिक, तिण में धर्म कहे स्वांगधारी
॥ भे० ॥ ६ ॥ एहवा कर्त्तव्य सावद्य जाणी, तिविधे
तिविधे साधां त्यागज कीधो । भेषधारी भोलां ने भिन्तने,

गो त्यांरो न चावे, समझता दीखे तो साधु समझावे । नादिक घट मांही घाले, मुक्त नगर मे सत पहुंचावे ॥ १५ ॥ गृहस्थ रै पग हेठे जीव आवे, तो भेषधारी है रहे तुरत बतावां । ते पिण जीव बचावण काजे, सर्व जीवां रो जीवणो चावां ॥ भे ॥ १६ ॥ अव्रती जीवां जीवणो चावे, तिण धर्म रो परमार्थ नहीं पायो । ह्रा अज्ञान्यां रो पगपग अटके, न्याय सुणज्यो भवि- ण चित लायो ॥ भे० ॥ १७ ॥ गृहस्थ रै तेल जावे ण फूट्यां, कीडांरा दल मांहि रेला आवे । बीच में ोव आवे तेलसूं वहता, तेल बुझे बुझे अग्नि में जावे भे० ॥ १८ ॥ जो अग्नि उठे तो लाय लागे छै, त्रस थावर जीव मार्या जावे । गृहस्थ रा पग हेठे जीव तावे, तो तेल ढुले ते वासण क्यूं न बतावे ॥ भे० ॥ १६ ॥ पग सूं मरता जीव बतावे, तेलसूं मरता जीव नहीं बतावे । ए खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसे, पण अभ्य न्तर आंधारो नजर न आवे ॥ भे० ॥ २० ॥ भेषधारी विहार करतां मारग में, त्यांने श्रावक रहामा मिलिया आयो । मारग छोड़ने ऊजड़ पड़िया, त्रस स्थावर जीवां ने खुंधता जायो ॥ भे० ॥२१॥ श्रावक ने ऊजड़ पड़िया जाणे, त्रस स्थावर जीवां ने मरता देखे । गृहस्थ रै पग हेठे जीव बतावे, तो मारग बतावणो कुण

लेखे ॥ भे० ॥ २२ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे पड़ते
ठाले बादल अम्बर जिम गाजे। श्रावक उजाड़
मारग पूछे, जद मौन साजे बोलतां कांय लाजे ॥
॥ २३ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे, त्यां में थोड़ा
जीवां ने बचता जाणो। श्रावकां ने उजाड़मं चा
चाल्यां, घणा जीव बचे त्रस स्थावर प्राणी ॥ भे०॥
थोड़ी दूर बतायां थोड़ो धर्म हुवे, तो घणी दूर बता
घणो धर्म जाणो। घणी दूर रो नाम लियां बच
ते खोटा श्रद्धारो ये अहिनाणो ॥ भे० ॥ २५ ॥
अस्या पुरुष ग्रामान्तर जातां. श्रावक विना जीव
विध जोवे। कोड़ो माकादिक चीथतो जावे, त
स्थावर जीवां रा घमसाण होवे ॥ भे० ॥ २६ ॥ भेषधा
मरुधर मांहि ही जाता, आस्यारा पगसूं मरता जीवां
देखे। ओ पग पग जीवां ने नहीं बतावे, तो
श्रद्धा जाणज्यो इण लेखे ॥ भे० ॥ २७ ॥ त्यांने बता
बतायने जीव बचावणा, पूंज पूंजने करणा दूरो। इन
धर्म क्रिया में पोते न लाजे, तो बीजो कुण मानसी ओ
कूरो ॥ भे० ॥ २८ ॥ ईर्ष्या सुमसुमियां सहित माटी
रे ढूंढ्या में ढूंढ़न मारग साधो। आ तपती रेत उन्हा
ला दिन में, पड़त प्रमाण हुवे जुदा जीव कायो ॥ भे०।
२९ ॥ ढूंढ्या नहीं देखे माटी ढूंढता, ते भेषधा

निजरां पावे । ए पग हेठे जीव बतावे अज्ञानी तो,
ो ढुलता जीव क्यूं न बचावे ॥ भे ॥ ३० ॥ इत्या-
क गृहस्थ रै अनेक उपधि सूं, त्रस स्थावर जीव मुवा
मरसी । एक पग हेठे जीव बतावे, त्यां ने सगलो ही
ड़ बतावणा पड़सी ॥ भे० ॥ ३१ ॥ किणहिक ठौड़
व बतावे, किणहिक ठौड़ शंका मन आणे । समझ
ां विन श्रद्धा परूपे, पीपल बांधी मूरख जिम ताणे
भे० ॥३२॥ पग पग जावक भटकता देखे, कदा सर्व
रै हुवा अज्ञानी भूलो । कूड़ कपट रो मत कुशले
खणने, पिण बुद्धिवन्त बात न माने लूलो ॥भे०॥३३॥
हस्थ रो न वंछणो जीवणो मरणो, वंछ्यां बतायां लागे
प कर्मो । राग द्वेष रहित रहणो निरदावे, एहवो
केवल श्रीजिन धर्मो ॥

आ श्रद्धा श्रीजिनवर भाषी ॥ ३४ ॥

समवसरण एक योजन मांडला मे, नर नार्यांना वृन्द
ावे ने जावे । अरिहन्त आगल आणी सुणावा, भगवन्त
न्न भिन्न धरम सुणावे ॥आ०॥२५॥ चार कोस मांही
स स्थावर रूंता, मर गया जीव उराणे आया । नर-
र्यां रा पग सूं विना उपयोगे, भगवन्त कठे ही न दीसे
ताया ॥ आ० ॥ २६ ॥ नन्दन मणिहारो डेडको हुय
, वीर वांदण जातां मारग मांयो । सिष मे चांथ

माख्यो श्रेणिक ने वछेरै, वीर साध मांहमा मेल
बचायो ॥ श्रा० ॥ ३७ ॥ गृहस्थ रा पग हेठे जीव
तो, साधां ने बचावणो कठैं ही न चाल्यो। भारी
लोगां ने भ्रष्ट करण ने, श्रोपिण घोचो कुगुरां वाल्यो।
श्रा० ॥३८॥ साधां रो नाम तो अलगो मेलो, श्रावक
री चर्चा मुख लावै। साधु साधु सूं मरता जीव बतावै
ज्यूं श्रावक श्रावक ने जीव बतावै ॥ श्रा० ॥३९॥ मिथ्या
त्वरा बल विना बोले अज्ञानी, श्रावकारे सम्भोग साध
ज्यूं बतायो। ए गाला रा गोला मुख सूं चलावै, तै
न्याय सुणज्यो भवियण चित्त लायो ॥ श्रा० ॥ ४०
साधु सूं मरता जीव देखिने, सम्भोगी साधु देखो जो ना
बतावे। तै अरिहन्त री आज्ञा लोपावै, पाप लागै ने
विराधक थावै ॥ श्रा० ॥ ४१ ॥ साधु तो साधु ने ...
बतावै, तै पोता रो पाप टालण रै काजे। श्रावक श्रावक
ने जीव नहीं बतावै, तो किसो पाप लागे किसो व्रत
भाजै ॥ श्रा० ॥ ४२ ॥ श्रावक श्रावक ने न बताया पाप
लागो कहै, ए भेषधाऱ्या मत काढ्यो कूरो। श्रावकां रै
सम्भोग साधां ज्यूं हुवे तो, पगपग बंध जाय पाप रो
पूरो। श्रा० ॥ ४३ ॥ पाट बाजोटादिक साधु आं
नेता, टाढे मात्रादिक कारज जावै। लारे श्रौर साधु
दान भोगवता देवें, जो ए भेद न श्रावै तो प्रायश्चित

े ॥ आ० ॥ ४४ ॥ गरढा गिलाण साधु री वैयावच,
ु न करै तो जिन आज्ञा बारै । महा मोहनी कर्म
ो बन्ध पाड़े, इह लोक ने परलोक दोनूं बिगारै ॥
० ॥ ४५ ॥ आहार पाणी साधु वहरी ने आणे,
भोगी साधु ने वांटदेवा री रीतो । आप भाग्यो जो
धिक लेवे तो, अदत्त लागे ने जाय प्रतीतो ॥ आ० ॥
४६ ॥ इत्यादिक साध साधां रे अनेक बोलांरो, संभोगी
ाधां सूं न कियां अटके मोखो । एहिज बोलांरो
ावक श्रावकांरे, न करै तो मूल न लागे दोषो ॥
ा० ॥ ४७ ॥ श्रावकांरे संभोग साधां ज्यूं हुवे तो,
ावक श्रावकां ने मिल इण विध करणो । ए श्रद्धा रो
नर्णय न काढे अज्ञानी, त्यां विटल थई लियो लोकां
ा शरणो ॥ आ० ॥ ४८ ॥ जो ए श्रावक श्रावकां रो
ाहीं करै तो, भेषधारयां रे लेखे भागल जाणो । श्रावकां
े संभोग साधां ज्यूं परूपे, ते पड़ गया मूरख उलटी
ाणो ॥ आ० ॥ ४९ ॥ श्रावकांरे संभोग तो श्रावकां सूं
छे, वले मिथ्याती सूं राखे मिलापो । त्यांरा संभोग
तो अव्रत मे छे, तिके त्याग कियां सूं टलसी पापो ॥ आ०
॥ ५० ॥ त्यां सूं शरीरादिक नो संभोग टालि ने, ज्ञाना
दिक गुण रो राखे मिलापो । उपदेश देई निरद
रणो, पिण सतर्कीने टालें तो टलसी पापो ॥ आ

५१ ॥ लाय लागी जो गृहस्थ देखि, तो तुरत छ:काय ने मारी। ए सावद्य कर्त्तव्य लोक को तिण मांही धर्म कहे सांगधारी ॥ आ० ॥ ५२ ॥ अग्नि पाणी छ:काय मुई त्यांरो, थोड़ोसो पाप कहे कानी। और जीव बच्या त्यांरो धर्म बतावे, बुझावण री करे सानी ॥ आ० ॥ ५३ ॥ ए धर्म रो मिश्र परूपे, टोटा बिचे लाभ घणो बतावे। भेषधार्यां री प्रतीत आवे, तो लाय बुझावण दौड्या जावे ॥ आ० ॥५४॥ एहवी दया बतावे छ:कायारा पीहर नाम धरावे। मिश्र धर्म छ:काया ने मार्या, पिण प्रश्न पूछे ज्यांरो जाब न आ० ॥५५॥ छ:काय जीवां री हिंसा कीधां, और बचे त्यांरो कहे छे धर्मों। ए श्रद्धा सुण सुणने बुद्धि खोटा नाणा जिम काढियो भरमो ॥ आ० ॥ कोई नित्य नित्य पांच सौ जीवां ने मारे, कोई कमाई अनारज कर्मी। जो मिश्र धर्म हुवे बुझाया, तो इणने हो मार्यां हुवे मिश्र धर्मी ॥ आ० ५७॥ लाय मूं बलता जीव जाणी ने, छ:काय हणी ने बुझाई। जो कमाई सूं मरता जीवां ने देखी, और बचावण अर्थ कमाई ॥ आ० ॥ ५८ ॥ जो बुझाया और बचे तो, कमाई ने माह्यां बचे

णो। लाय बूझायां कसाई ने मार्‍यां, दोयां रो लेखो
लेखो जाणो ॥ पा० ॥५९॥ वले सिंह सर्पादिक चीता
चेरा, दुष्टी जीव करे पर घाता। मिश्र धर्म छे लाय
झायां, तो यांने ही मार्‍यां घणारे साता ॥पा०॥६०॥

॥ दोहा ॥

जीव हिंसा है अति बुरी, तिणमें अवगुण अनेक।
दया धर्म में गुण घणा, ते सुणज्यो आण विवेक ॥१॥

॥ ढाल नवमीं ॥

(औ भव रत्न चिन्तामणि सरिखो—एदेशी)

दया भगवती जीवां ने सुखदाई, आ मुक्तपुरीनी साई-
जी। साठ नाम दयारा कह्या जिन, दशमा अङ्गरे मांई
जी। दया धर्म श्री जिनजीरो वाणी ॥१॥ पूजनीक नाम
दया रो भगवती, मङ्गलीक नाम छे नीकोजी। जे भव जीव
आया इण शरणे, त्यांने मुक्ति नजीकोजी ॥ दया० ॥२॥
तिविधे तिविधे छःकाय न हणवीं, आ दया कही जिन-
रायोजी। दया भगवती रा गुण छे अनन्ता, ते पूरा
केम कहायोजी ॥ दया० ॥ ३ ॥ तिविधे तिविधे छःकाय
जीवांने, भय न उपजावे तामो जी। ए अभयदान
कह्यो अरिहन्तां, ते पिण दया रो छे नामोजी ॥ दया०

॥ ४ ॥ त्रिविधे त्रिविधे छ:काय मारणा रा, कोई त्या करे मन सूंस्येजो। आ पूरी दया भगवन्तां भाषी, ति सूं पाप रा वारणा रुस्येजो ॥ दया ॥ ५ ॥ कोई न क्रियां विन हिंसा टाले. तीड़ो कर्म निर्जरा थावे, हिंसा टाल्यां शुभ योग वर्त्ते छे, तिड़ां पुण्य रा ठ वन्धावेजी ॥ दया० ॥ ६ ॥ इण दया सूं पाप कर्म रु जावे, वलि कर्म हुवे चकचूरोजी। यां दोय गुण अनन्त गुण आया, ते पाले छे विरला शूरोजी ॥ दया ॥ ७ ॥ छ:काय हणे हणावे नाही, वलि हणतां ने न सरावेजी। इसड़ी दया निरन्तर पाले, त्यांरे तुले कु आवेजी ॥ दया० ॥ ८ ॥ आहिज दया ने महाव पहिलो, तिण मे दया दया सर्व आईजी। पूरी दया साधुजी पाले, वाकी दया रही नही काईजी ॥ दया ॥ ९ ॥ आहिज दया चोखे चित पाले, ते केवलिया छे गाढोजी। आहिज दया सभा मे परूपे, त्या ने कह्या न्यायवादीजी ॥ दया ॥ १० ॥ आहिज दय केवलिया पाली. मन.पर्यव ने अवधि ज्ञानीजी। चौ ज्ञानी ने श्रुत ज्ञानी रे. आहिज दया मनमानी ॥ दया० ॥ ११ ॥ आहिज दया लब्धिधार्‍यां पाली आहिज पूर्वधर ज्ञानीजी। गड़ा हुवे तो नि.ग ने रे. सूत्र मे नहीं वात छानीजी ॥ दया० ॥ १२

[illegible] थकी दया श्रावक पाले, तिणने पिण साधु बखाणे
[illegible] । श्रावक हिंसा करै घर बैठो, तिण में धर्म न
[illegible]णेजी ॥ दया ॥ १३ ॥ प्राण, भूत, जीव ने सत्व,
[illegible]ांरी घात न करणी लिगारोजी । आ तीन काल रा
[illegible]र्थङ्करांरी वाणी, आचारङ्ग चौथा अध्ययन मझारोजी
दया० ॥१४॥ मति हणो मति हणो कह्यो अरिहन्तां,
[illegible]ो जीव हणो किण लेखेजी । अभ्यन्तर आंख हिया री
[illegible]टी, ते सूत्र स्हामो नहिं देखे जी ॥ दया० ॥ १५ ॥
[illegible]हंसा धर्म जीवांने दुःखदाई, ते नरकतणी छे साईजी ।
[illegible]ीस नाम खोटा खोटा हिंसारा, कह्या दशमां अङ्ग रे
[illegible]ांईजी ॥

हिंसा धर्म कुगुरांरी वाणी ॥ १६ ॥

प्राणघात हिंसा छे खोटी, ते सर्व जीवां ने दुःख दाईजी । जीव हिंसा में अवगुण अनेक छे, ते पूरा केम कहाईजो ॥हिंसा०॥ १७ ॥ कोई कहे म्हे हिंसा किया में, जाणांछां पाप एकान्तोजी । पिण हिंसा कियां विना धर्म न हुवे, म्हे किण विध पूरां मन खन्तोजी ॥ हिंसा० ॥ १८ ॥ केई कहे म्हे एणां एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीवांरे तांईजी । एकेन्द्रिय मार पंचेन्द्रिय पोष्यां, म्हाने धर्म घणो तिण मांईजी ॥ हिंसा० ॥ १९ ॥ कहै एकेन्द्रिय मूं पंचेन्द्रियरा, मोटा घणा पुण्य भारीजी । [illegible]

एकेन्द्रिय मार पंचेन्द्रिय पोष्यां, म्हाने पाप न क
लिगारीजी ॥ हिंसा० ॥ २० ॥ केई डूमड़ो धर्म भाखे
येठा, ते तो कुगुरां तणो सिखायोजी। निःशङ्क थ
छःकाया ने मारै, वले मन मांही हर्षित थायोजी।
हिंसा० ॥ २१ ॥ कोई पांच स्थावर ने सहल गिणे
त्यां ने मार्‍यां न जाणै पापो जी। तिणसूं त्यांने जरा
शङ्क न आणै, ते तो कुगुरां तणो प्रतापोजी ॥ हिंसा०।
२२ ॥ पांच स्थावर रा आरंभ सेती, दुर्गति जा
पधारैजो। कह्यो दशवैकालिक छठे अध्ययने, तो
बुद्धिवन्त किण विध मारैजो ॥ हिंसा० ॥ २३ ॥ छः
जीवां ने जीव सूं मारी ने, सगा सयण न्यात जिमावेजी
ए प्रत्यक्ष छे सावद्य संसारनो कामो, तिणमें धर्म बता
वेजी ॥ हिंसा० ॥ २४ ॥ जीवां ने मार जीवां ने पोषे
ते तो मारग संसारनो जाणोजी। तिण मांही साधु धर्म
बतावे, ते पुरा मूढ़ अयाणोजी ॥हिंसा०॥ २५ ॥ मूला,
गाजर, शकरकन्द कान्दा, इत्यादिक नीलोती
अनेकोजी। त्यांरा दान दिया में पुण्य परूपे, ते डूबे
छे बिना विवेकोजी ॥ हिंसा० ॥ २६ ॥ जीव खवायां
में पुण्य परूपे, कोई मिश्र कहे छे मूढ़ोजी। ये दोनं
ां हिंसा धर्मी अनार्य, ते डूबे छे कर कर रूढोजी॥
हिंसा० ॥२७॥ केई जीव खवायां में पुण्य परूपे, त्यां

भ वहे तरवारोजी। वले पहिरण सांग साधां रो
खे, धिक् त्यांरो जमवारोजी॥ हिन्सा० ॥ २८॥ कोई
धु रो विरद धरावे लोकां मे, वले बाजे भगवन्त रा
काजी। पिण हिन्सा मांहो धर्म परूपै, त्यांरे तीन
त भागे लगताजी॥ हिन्सा० ॥ २९॥ छः काय मास्यां
धर्म परूपै, त्यांने हिन्सा छः काया री लागेजी।
ीन काल री हिन्सा अनुमोदी, तिण सूं पहिलो महा-
त भागेजी॥ हिन्सा० ॥ ३०॥ हिन्सा मे धर्म तो
जन कह्यो नहीं, हिन्सा में धर्म कह्यां झूठ लागेजी।
सड़ो झूठ निरन्तर बोलै, त्यांरो बीजो ही महाव्रत
ागेजी॥ हिन्सा० ॥ ३१॥ जीवां ने मास्यां धर्म परूपै,
यां जीवां रो अदत्त लागेजी। वले आज्ञा लोपी श्री
रिहन्त नी, तिण सूं तीजो महाव्रत भागेजी॥ हिन्सा०
। ३२॥ छः काय मास्यां में धर्म बतावे, त्यांरी श्रद्धा
रणी छे आंधीजी। ते मोह मिथ्यात में जड़िया
प्रज्ञानी, त्यांने श्रद्धा न सूझे सूंधीजी॥ हिन्सा० ॥३३॥
यांने पूछ्यां कहे म्हे दया धर्मी छां, पिण निश्चय छः
काय ना घातीजी। त्यां हिन्सा धर्मियां ने साधु श्रद्धै,
ते पिण निश्चय मिथ्यातीजी॥ हिन्सा० ॥ ३४॥ कोई
कहे साधु जीव बचावे, राखे रखावे भलो जाणेजी। ते
जिन मारग ना अजाण अज्ञानी, इमड़ी चर्चा चाखे

जी ॥ हिन्सा० ॥३५॥ साधु तो जीवां ने क्यां ने बचावे, ते तो पच रह्या निज कर्मोंजी। कोई साधु री सर्ण आय करे तो, सिखाय देवै जिन धर्मोंजी ॥ हिन्सा० ॥ ३६ ॥ छः काय रा शस्त्र जीव अव्रती, त्यांरो जीवणो मरणो न चावेजी। त्यांरो जीवणो मरणो साधु वंछे तो, राग द्वेष वेहुं आवेजी ॥ हिन्सा० ॥ ३७॥ छः काय रा शस्त्र जीव अव्रती, त्यांरो जीवणो मरणो छै खोटोजी। त्यांने हणवारा त्याग किया त्यांरे, दया तणो गुण मोटोजी ॥ हिन्सा० ॥ ३८ ॥ असंयम जीवितव्य ने बाल मरण यांरी, आशा वांछा नहीं करणीजी। पण्डित मरण ने संयम जीवितव्यनी, आशा वांछा मन धरणीजी। हिन्सा० ॥ ३९ ॥ छःकाय रा शस्त्र जीव अव्रती, त्यांरो असंयम जीवितव्य जाणोजी। सर्व सावद्य रा त्याग किया त्यांरो, संयम जीवितव्य एह पिछाणोजी ॥ हिंसा० ॥ ४० ॥ त्रिविधे त्रिविधे वाल्हि छ.काय री साधु, त्यांरी दया निरन्तर राखेजी। ते छःकाय रा पीहर छःकाय ने मार्यां, धर्म किसे लेखे भाषेजी ॥ हिन्सा ॥४१॥ छ.काय रा शस्त्र हणे समारो. त्यारे बीच न पड़णो जायोजी। बीच पड्या व्रत भागे साधुरा, ते विचारलां ने खबर न आयोजी। हिन्सा० ॥ ४२ ॥ कोई कहे साधु ने बीच न पड़णो, कोई अर्थ बीच पड़णोजी। साधु ने समभा

हणो, ते विकलां ने नहीं निरणोजी॥ हिन्सा०॥ ४३॥ साधु ने बीच पड़णो तिविधे निषेध्यो, ते हणतां बीच पड़े नहीं जायोजी। पिण गृहस्थ ने धर्म कहे बीच पड़ियां, तो घर रो धर्म कांई गंवायोजी॥ हिन्सा०॥ ४४॥ हणे जीतवने प्रशंसा हेते, हणे मान पूजा रे कामोजी। वले जन्म मरण मुकावण हणे छे, हणे दुःख गमावण कामोजी॥ हिन्सा०॥४५॥ ए छः कारण छः काय ने मारे तो, अहित रो कारण थायोजी। जन्म मरण मुकावण हणे तो, समकित रत्न गमायोजी॥ हिन्सा०॥ ४६॥ ये छः कारण छः काय ने मार्यां, आठ कर्मां री गांठ बन्धायोजी। मोहनी मार वधे घणो निश्चय, वले पड़े नरक में जायोजी॥ हिन्सा०॥ ४७॥ अर्थ अनर्थे हिन्सा कीधां, अहित रो कारण तासोजी। धर्म रे कारण हिन्सा कीधां, बोध बीजरो नाशोजी॥ हिन्सा०॥ ४८॥ ये छः कारण छः कायने मारे, ते तो दुःख पावे इण संसारोजी। ए तो आचाराङ्ग पहले अध्ययने, छः उद्देशा में कह्यो विस्तारोजी॥ हिन्सा०॥ ४८॥ केई श्रमण माहण आचार्य पण, करे हिन्सा धर्मनीं थापोजी। कहे प्राण भुत जीव ने सत्व, धर्म हेतु हण्यां नहीं पापो जी॥ हिन्सा०॥५०॥ एहवी ऊंधी परूपणा करे अनार्य, त्यांने आर्य बोल्या धर प्रेमोजी। थे मुंडो देठो मुंडो

वतावे, ते अनार्य री भापाजी ॥ हिंसा० ॥ ५९ ॥
जीव मार्‌यां मांहे धर्म कहे छे, ते पूरा अज्ञानी
धाजी। त्यांने जाण पुरुष मिले जिन मारग रो, ते
ण विध बोले सूंधाजी ॥ हिंसा० ॥ ६० ॥ लोहनो
लो अग्नि तपाय, ते अग्निवर्ण कर तातोजी। ते पकड़
डासो लायो तिण पासे, कहे बलतो गोलो झेलो
तोजी ॥ हिंसा० ॥ ६१ ॥ जब पाखण्डियां हाथ पाछो
च्यो, जब जाण पुरुष कहे त्यांनेजी। थे हाथ पाछो
चो किण कारण, थांरी श्रद्धा मत राखो छानेजी ॥
हिंसा० ॥ ६२ ॥ जब कहे गोलो म्हे हाथ में ल्यांतो,
हारो हाथ बले लागे तापोजी। तो थांरो हाथ वाले
तिण ने पापके धर्म, जब कहे उणने लागे पापोजी ॥ हिंसा
॥६३॥ थांरा हाथ वाले तिणने पाप हुवे तो, औरांने मार्‌यां
धर्म नाहीं जी। थे सर्व जीव सरीखा जाणो, थे सोच देखो
मन मांहींजी ॥ हिंसा ॥ ६४ ॥ जे जीव मार्‌यां में धर्म
कहे छे, रुले काल अनन्तोजी। सूयगडाअङ्ग अध्ययन
अठारह में, भाप गया भगवन्तोजी ॥ हिंसा० ॥ ६५ ॥
थानक करावे छः काय हणने, करे अनन्ता जीवां री
घातोजी। प्रच्छित नो कारण निश्चय हुयो छे, धर्म जाणे
तो आवे मिथ्यातोजी ॥ हिंसा० ॥ ६६ ॥ जब कहे म्हे
थानक करावां तिण में, जाणाछां एकान्त पापोजी।

तिण कहिवाने पाप कह्यो झूठ बोले, सदा गोर ि
आपोजी ॥ हिंसा० ॥ ६७ ॥ कोई मनुष्य
के तिण काले, धन उदके थानक काजोजी। जो
पाप जाणे परभव जातो, इसड़ो कांई कियो
॥ हिंसा० ॥ ६८ ॥ घर रो धन देई जीव मा
धार्य न दीसे काईजी। अनर्थ पण जाण्यो नहीं
धर्म जाण्यो दीसे तिण मांईजी ॥ हिंसा० ॥
हिंसारी करणी मे दया नही छै, दया री
हिंसा नाही जी। दया ने हिंसारी करणी
ज्यूं तावड़ो ने छांहीजी ॥ हिंसा० ॥ ७० ॥
मे भेल हुवे पिण, दया मे नही हिंसा रो भेलोजी।
पुर्व ने पश्चिम रो मारग, किण विध खावे मेलो
हिंसा० ॥ ७१ ॥ कोई दया ने हिंसारी मिश्र
कहै, ते कूड़ा कुहेतु लगावेजी। मिश्र थापण
मिथ्याती, भोला लोकां ने भरमावेजी ॥ हिंसा
जो हिंसा कियां मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवे पाप
जी। एक फिर्यां अठारह फिरे छै, बुद्धिवन्त
विचारोजी ॥ हिंसा० ॥ ७३ ॥ जिन मारग री
दया ऊपर, खोजी हुवे ते पावेजी। जो हिंसा कि
धर्म हुवे तो, जल मथियां घी आवेजी ॥ हिंसा० ॥७
संवत् अठारह वर्ष चवाले, फागुण सुदी नवमी

ारोजी । जोड़ कीधी दया धर्म दीपावण, बगड़ी मझारोजी ॥ हिंसा० ॥ ७५ ॥

॥ दोहा ॥

वीर शासण धणी, गणधर गौतम स्वाम ।
मोटा पुरुषां रा नाम थी, सीझै आतम काम ॥१॥
घर छोड़ी संयम लियो, भगवन्त श्री वर्द्धमान ।
ह वर्ष ने तेरह पख, छद्मस्थ रह्या भगवान ॥२॥
गोशाला ने चेलो कियो, ते निश्चय अयोग्य साचात ।
ाग भाव आयो तेह थी, ते पिण छद्मस्थ पणारी वात ॥३॥
र्थङ्कर छद्मस्थ थकां, चेलो न करै दीचा देवे नाहिं ।
ेकथा पिण कहे नहीं, जोवो सूत्र रे मांहि ॥४॥
ारह वर्ष तेरह पच मझे, दीचा दे चेलो न कस्यो कोय ।
क गोशाला अयोग्य ने चेलो कियो,
निश्चय होणहार टले नहिं कोय ॥५॥
ीर्थङ्कर साथे दीचा लिये, तिणने दीचा दे जिनराय ।
छे केवली हुवे नहीं त्यां लगे, दीचा न देवे ताय ॥६॥
ोशाला ने बचावियो, छद्मस्थ पणा रो स्वभाव ।
ोह राग आयो तिण ऊपरे, ते विकल न जाणे न्याय ॥७॥
गोशाला ने बचावियो तिण में मूर्ख थापे धर्म ।
सुने चित्त मकरीकरे. ते भूला अज्ञानी भर्म ॥८॥

खिओ चोर निःशंक रे। वली कूड़ कपट तणो तो
थलो रे, तिणरो करड़ो मिथ्यात तणो छै बङ्क रे॥
गो० ॥ ६ ॥ तिण ने वीर बचायो बलतो जाणने रे,
लब्धि फोरी शीतल लेश्या मूक रे। राग आण्यो तिण
पापी ऊपरै रे, छद्मस्थ गया तिण काले चूक रे ॥ गो०
॥७॥ कोई भेषधारी भागल इसड़ो कहै रे, गोशाले ने
बचायां हुवो धर्म रे। त्यां धर्म जिनेश्वर नो नहिं
ओलख्यो रे, ते तो भूला अज्ञानी भ्रम रे ॥ गो० ॥ ८ ॥
वली भगवन्त तो घर छोड्यां पछै रे, दोष न सेव्यो मूल
लिगार रे। प्रमाद किञ्चित मात सेव्यो नहीं रे, वलि
आस्रव न सेव्यो किण ही वार रे ॥ गो० ॥ ९ ॥ इम कहि
कहि समझाया हुवैरे, पण एकान्त बोलै मृषावाय रे।
त्यां धर्म जिनेश्वरनो नहिं ओलख्यो रे, फूटा ढोल ज्यूं
बोलै विरूआ वाय रे ॥ गो० ॥ १० ॥ ते झूठा बोलै छै
सुधबुध बाहिरा रे, त्यांरी अज्ञानी त्यांने खबर न काय
रे। त्यां विकलां री श्रद्धा प्रगट करूं रे, ते भवियण
साम्भलज्यो चित्त लाय रे ॥ गो० ॥ ११ ॥ भगवन्त
आहार कियो छै जाणने रे, तिण में कहै छै प्रमादाश्रव
पाप रे। वली निद्रा लीधा में कहै पाप छै रे, ते निद्रा
पण लीधी भगवन्त आप रे ॥गो०॥१२॥ प्रमाद न सेव्यो
कहै भगवानने रे, वली कहता आवे पापो प्रमाद रे।

॥ २० ॥ ये सातूं ही थानक सावद्य रा कह्या रे, स्थ सेवै के किणही वार रे। त्यांरो पिण प्राय- । यथा योग्य छै रे, जाण अजाण सेव्यां रो करै ार रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ ये सातूं ही बोल न सेवै ली रे, छद्मस्थ पिण निरन्तर सेवै नांय रे। सेवै तो ह कर्म उदय हुवां रे, शंका हुवै तो जोवो सूत्र मांय ॥ गो० ॥ २२ ॥ भगवन्त ने पिण केवल ज्ञान उपनो पहिले तो छद्मस्थ होता ताम रे। पड़िकमणो पिण ह करताथा पापनो रे, त्यांरो उपयोग न रहतो एकण स रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ गोशाला ने वीर वचायो जिण हने रे, छद्मस्थ होता जिण दिन भगवान रे। मोह ाग आयो भगवन्त ने जिण दिने रे, निश्चय होणहार ले नहीं आसान रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ छद्मस्थ थकां पिण ोभगवन्तरै रे, समय समय लागता कर्म सात रे। मोह कर्म अवश्य उदय हुवो रे, कुपातने वचाय लियो साचात ॥ गो० ॥ २५ ॥ गोशालो दावानल छै श्रीजिनधर्मरो , ते दुष्टां में दुष्ट घणो अतीव रे। वले कूड़ कपटनो कोथलो तेहने रे, वचायां रो फल सुणो भव जीव रे ॥ गो० ॥ २६ ॥ गोशालो तेजु लेश्या मेलने रे, दोय साधां रा कीधां घात रे। ऊंधो अंवलो बोल्यो भगवानने रे, वार मैं पड़ियज्जियो मिथ्यात रे।

कुपात ने वचायां धर्म किहां थकी रे॥ २७॥
वली लेश्या मेली छे पापी वीरने रे, त्यांने
एकान्त करवा घात रे। जाण्यो जमाऊं शासन
रे, एहवो गोशाला दुष्ट कुपात रे॥ कु०॥ २८॥
रो प्रश्न पूछ्यां भगवन्त कह्यो रे, सांगलो मांडी
वताया सात रे। जव वीर ने झूठा वालण पाडिया
तिन उखाड़ने कीधी घात रे॥ कु०॥ २९॥ तेजू
सिखाई गोशाला भणी रे, इण लेश्या थी कीधी
घात रे। वले लोहीठाण कियो भगवन्तने रे,
काम कियो पापी साक्षात रे॥ कु०॥ ३०॥ गोशा
पापी ने वीर वचायियो रे, तो वधियो भरत मे
मिथ्यात रे। घणा जीवां ने पापी वोड़्या रे,
श्रद्धा हिये मे घात रे॥ कु०॥ ३१॥ कूड़ कपट
पापिये रे, झूठा ही शासन दियो थाप रे।
तीर्थङ्कर वाज्या लोक मे रे, वीरनो शासन दियो
रे॥ कु०॥ ३२॥ गोशाला ने वीर वचायो तठा
रे, घणा जीवारे हुआ विगाड़ रे। ओ पापी धाड़ा
हुवो धमनो रे, इण गुण तो न कीधो पापी लिगार रे।
कु०॥ ३३॥ गोशालो पापीड़ो वचिया पछे रे, तिण
कीधा पापीड़े घनक अकाज रे। तिण दुष्टी न वर्त
... निशायकी रे निकनां ने मन न आवे लाज रे।

॥ ३४ ॥ गोशाले ने बचाया धर्म कहे तिके रे, लारा फेड़ायत नाण रे। त्यां धर्म न आण्यो जनराजनो रे, यूंही बूड़े अज्ञानी कर कर ताण रे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ जो धर्म होसी गोशाले ने बचावियां रे, छः ही काय बचायां होसी धर्म रे। तो वे जीव बचायां धर्म गिणे नहीं रे, तो विकलां री श्रद्धा रो भल्यो भ्रम रे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ गोशालेने वीर बचायो जिण विधेरे, श्रावक ने तिण विध बचावे नांय रे। कहे तिणहिज विध करे नहीं रे, तो धूल छै त्यांरी श्रद्धा य रे ॥ कु० ॥३७॥ पेट दुखे छै सौ श्रावकां तणो रे, हा हुवे छै जीव ने काय रे। साध पधाय्या छै तिण अवसरे रे, त्यांरे हाथ फेर्यां साता थाय रे ॥ कु० ॥ ३८ ॥ लब्धिधारी तो साधु पधाय्या देखने रे, गृहस्थ बल्या छै द्रस जाय रे। हाथ फेरो त्यांरा पेट ऊपरे रे, हाथ फेर्यां तो श्रावक जीवां जाय रे ॥ कु० ॥ ३९ ॥ साध कहे म्हाने तो हाथ न फेरणो रे, ये मरे भावे दुखिया घणा हुवे तास रे। मरणो जीवणो मूल न वंछणो रे, म्हारे कांई गृहस्थ सूं काम रे ॥ कु० ॥ ४० ॥ गोशाला दुष्टी ने वीर बचावियो रे, इण मांही कहे छै निश्चल धर्म रे। ते श्रावक मरतां ने नहि बचावियां रे, यांरी श्रद्धा रो त्यांहिज काढ्यो भ्रम रे ॥ कु० ॥ ४१ ॥

रे। तिण मे एक गोशालाने बचावियो रे, किणने
चायो श्रीवर्द्धमान रे ॥ कु० ॥ ४६ ॥ गोशाला दुष्टो
चावियां रे, जो धर्म कठेही जाणे स्वाम रे। तो
हो साध बचावत आपरा रे, वले रात दिन
ता श्रोह्रिज काम रे ॥ कु० ॥ ५० ॥ गोशाले दुष्टोने
ावियां रे, तिण मांही धर्म जाणे जिनराय रे। दोय
। मरता न राख्या आपरा रे, श्रो पिण किण विध
ासो न्याय रे ॥ कु० ॥ ५१ ॥ अकाले जगतने मरता
ाया रे, पिण आडा नहीं दीधा भगवन्त हाथ रे। जो
। कुवे तो भगवन्त आघो न काढता रे, तरण-तारण
ान्नाथ रे ॥ कु० ॥ ५२ ॥ अनन्त चौवोसी तो आगे हुई
शिवड़ां तो ऋषभादिक चौवीस रे। त्यां ताख्या भव
वां ने समभायने रे, पिण मरता न राख्यो श्रीजगदीश
॥ कु० ॥ ५३ ॥ एक गोशालो वीर बचावियोरे, ते तो
ाय श्री होणहार रे। मोह राग आयो भगवानने रे,
णरो न्याय न जाणे मूढ़ गिंवार रे ॥ कु० ॥ ५४ ॥
वत अठारह तेपने समय रे, आषाढ़ वदी ग्यारस
गलवार रे। गोशाले पापीने ओलखायवा रे, जोड़
ाधी छे मांढा गांव मझार रे ॥ कु० ॥ ५५ ॥

यांमें केई कहे गोशालोजी साचा, यांने किण विध
ां काचा रे ॥ स० ॥ यांमें उघाड़ी दीसै करामातो,
कीधी वे साधां री घातो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इण
ां वे इण रा वाल्या दोय चेला, इण सूं पाछा न
हेला रे ॥स०॥ इण ने खोटो कहतो जब बोलतो
पछे अणबोल्यो कांई बेठो रे ॥ स० ॥ ८ ॥
ालोजी बोले गुञ्जार करतो, वीर पाछो बोले सोई
ो रे ॥ स० ॥ गोशालोजी सिंह तणी पर गुंज्या,
ा साधु सगला धूज्या रे ॥ स० ॥ ९ ॥ वीर री तो
ां देख लोधी सिद्धाई, इण में कला न दीखे कांई
स० ॥ जो सिद्धाई होवे तो देखावता याने, जब
ण ऊभा रहता क्यांने रे ॥ स० ॥ यो तो इण
र चलायने आयो, इण कोठण वागरे सांयो रे ॥स०॥
शूरपणो तो दीसे इण मांई, इण मे कमी न दीखे
ई रे ॥स०॥ ११ ॥ जब पिण लोकां मे हूंतो इमड़ो
ारो, ते विकलां ने नहीं विचारो रे ॥ स० ॥ यो
ालो पाखण्डी प्रत्यक्ष पापी, तिण ने दियो तीर्थंकर
पी रे ॥ स० ॥ १२ ॥ केई चतुर विचक्षण था तिण
लो, त्यां खोटो जाण्यो गोशालो रे ॥ स० ॥ यो
शालो कुपात्र मूढ़ मिथ्याती, तिण कीधी साधां री
तो रे ॥ स० ॥ १३ ॥ क्षमा शूरा अरिहन्त भगवन्त,

ात किण री मूल नहीं कीजे, साचो मारग
ाख लीजे रे ॥ स० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

य उपकार जिन भाषिया, त्यांरो बुद्धिवन्त करो विचार।
थमें एक उपकार छे मोक्षरो, बीजो संसारनो उपकार॥
ाकार करे कोई मोक्षरो, तिणरी आज्ञा दे आप।
ाकार करे संसार नो, तिणमें आप रहे चुपचाप ॥२॥
कार करे कोई मोक्षरो, कुण कुण संसारनो उपकार।
ांरा भाव भेद प्रगट करुं, ते सुणज्यो विस्तार ॥३॥

॥ ढाल ग्यारहवीं ॥

(आ अनुकम्पा जिन आज्ञा में—एदेशी)

ज्ञान दर्शन चारित्र ने वली तप, यां च्यारां रो
ोई करे उपकारो। तिण ने निश्चय ही निर्जरा धर्म
ाख्यो जिन, वली जिन आज्ञा छे श्रीकारो ॥ ओ तो
ापकार निश्चय ही मुगत रो ॥ १ ॥ आंकड़ी ॥ ज्ञान
र्शन चारित्र ने तप, यां च्यारां बिन कोई करे उप-
ार। तिण ने निश्चय ही धर्म नहीं जिन भाख्यो, वले
जिन आज्ञा नहीं छे लिगार ॥ ओ उपकार संसार तणो
छे ॥ २ ॥ आंकड़ी ॥ संसार तणो उपकार करे छे,

अव्रत मे, ते सेवे सावद्य योग व्यापारो । वले नव
जातरो परिग्रह अव्रत में, तिण ने सेवे छे कोई
वारो ॥ श्री० सं० ॥ १० ॥ श्रावक रो खाणो पीणो
सर्व अव्रत मे, तिण ने त्याग करावे चढावे वैरागो ।
ले नवही जात रो परिग्रह अव्रत मे, ते छोडे छुडावे
ारे शिरे भागो ॥ श्री० मु० ॥ ११ ॥ कोई लाय सूं
लता ने काढ वचायो, वले कूवे पड़ताँ ने वचायो ।
ले तालाव मे डूवता ने वारे काढे, वले ऊंचा थी
ड़तां ने भाल लियो तायो ॥ श्री० मं० ॥ १२ ॥ जन्म
रण री लायथी वारे काढे, भाव कूवा मांय थी काढे
ारे । नरकादि नीच गति पड़तां ने राखे, संसार
मुद्रथी वारे काढे उधारे ॥ श्री० मु० ॥१३॥ किणरे
ाय लागी घर वले छे तिण में, नाना मोटा जीव वल
ाय । कोई लाय बुझाई त्यांने वारे काढे, घणां रे
साता दीधी वपराय ॥ श्री० सं० ॥ १४ ॥ किणरे तृष्णा
लाय लागी घट भीतर, ज्ञानादिक गुण वले त्यां मांई ।
उपदेश देई तिण री लाय बुझावे, समय समय साता
दीधी वपराई ॥ श्री० मु० ॥ १५ ॥ किंई टावर ने पालने
मोटा यारे छै, खाऊँ खाऊँ वस्तु तिणने खवाय । वले
मोटे मगडाय करी परणाऊँ, धन माल देई कामाय
कमाय ॥ श्री० सं० ॥ १६ ॥ कोई वेटां ने रूड़ी रीत

मु० ॥ २३ ॥ गृहस्थ भूलो उजाड़ वन मे, अटवी
ले ऊजड़ जावे। तिण ने मार्ग बतायने घरे
वावे, वले थाको हुवे तो कांधे बेठावे ॥ ओ० सं०
२४ ॥ संसार रूपिणी अटवी भूल्या ने, ज्ञानादिक
रग शुद्ध बतावे। सावद्य भारने अलगो मेले, सुखे
वे शिवपुर मे पहुंचावे। ओ० मु० ॥ १५ ॥ नाग
गिनी हूंता बलता लकड़ा मे, त्याने पार्श्वनाथजी
ढा। काढे बारे। अग्नि में बलतां ने राख्या जीवता,
ो अग्नि आदिक जीवां ने मारे॥ ओ० सं० ॥ २६ ॥
र्श्वनाथजी घर छोड़ काउसग कीधो, जब कमठ
सर्ग कर वर्षायो पाणी। जब पद्मावती हेठे सिंहासन
धो, धरणेन्द्र छत्र कियो शिर आणी ॥ ओ० मु० ॥
७ ॥ नाग नागिनी ने नवकार सुणावे, चारूं शरणा
सूंस कराया जाणी। ते शुभ परिणामां सूं मरने हुवा,
रणेन्द्र ने पद्मावती राणी ॥ ओ० मु० ॥ २८ ॥ सुग्रीव सूं
पकार कियो राम ने लक्ष्मण, जब सुग्रीव हुयो त्यांरो
खाई। सीता री खबर आण रावण ने मरायो, पाछो
पकार कियो भीड़ आई ॥ ओ० सं० ॥ २९ ॥ कोई
ो जीव जूं जीव ने मारतो थो, तिण ने वर्जने जूं ने
चाई। ते जूं री जीव मनुष्य हुवो जब, दुख रा
किया दुख पिण दियो मिटाई ॥ ओ० सं० ॥ ३० ॥

ला चलावे ॥ आ० ॥ ३७ जिलरा उपकार संसार
ा छे, जे जे करे ते मोह वश जाणो। साधु तो त्यांने
े न सरावे, संसारी जीव तिण रा करे वखाणो॥
० ॥ ३८ ॥ संसार रो उपकार कियां में, जिन धर्म
अंश नहीं छे लिगार। संसार तणा उपकार किया
धर्म कहे ते तो मूढ़ गिंवार॥ आ० ॥३९॥ किणही
व ने खप करने बचायो, किणही उपाय ने कीधो
टो। जो धर्म होसी तो दोयां ने होसी, जो टोटो
सो तो दोयां से टोटो॥ आ० ॥ ४० ॥ बचावणवाला
चे तो पालणवालो, साम्प्रत दीसे उपकार मोटो।
रो निर्णय कियां विन धर्म कहे छे, त्यांरो मत निश्चि-
त खोटो॥ आ० ॥४१॥ बचावणवालो उपजावणवालो,
तो दोनूं संसार तणा उपकारी। एहवो उपकार
रे मामा सामा, तिण में केवलियां रो धर्म नहीं छे
लगारी॥ आ० ॥ ४२॥ जीव ने जीवां बचावे तिण सूं,
ध जावे तिण सूं द्वेष विशेष। जो पर भव मांही
ाय मिले तो, देखत मात्र जागे तिण सूं द्वेष॥ आ०
॥ ४४ ॥ मित सूं मित्रपणो चलियो जावे, वैरी सूं
ैरीपणो चलियो जावे। ए तो राग द्वेष कर्मां रा
ाला छे, श्रीजिन धर्म मांही नहीं आवे॥ आ० ॥४५॥
कोई अनुकम्पा आणी घर मण्डावे, कोई मण्डाता घर

ने टेवे भंगाय। ए तो प्रत्यक्ष राग ने द्वेष उधाड़े आगे लागा चलिया जाय ॥ आ० ॥ ४६ ॥ कोई पैलेरा काम भोग वधारे, कोई काम भोग रे अन्तराय। ओ पिण राग ने द्वेष उघाड़ो, ते लागा दोनूं चलिया जाय ॥ आ० ॥ ४७ ॥ कोई देवे धन गमियो वतावे, वले स्त्री आदिक पण वतावे। कोई लाभ ने टोटो लोकां ने वतावे, तिण आगे लाग्यो राग चलियो जावे ॥ आ० ॥ ४८ ॥ वेदगरी करने लोकां रो, रोग गमावे ने जीवां वच ओ उपकार लोकां मूं कीन्हो, आगे लग्यो राग व[illegible] जावे ॥ आ० ॥ ४९ ॥ कहो कहो ने कितरा एक संसार तणा उपकार अनेक। ज्ञान दर्शन चारित्र विना, मोक्ष रो उपकार नहीं छै एक ॥ आ० ॥ [illegible] संवर ना वीस भेद कह्या जिन, निर्जरा तणा भेद [illegible] छै वार। ए बत्तीस भेद उपकार मुक्ति रो, और [illegible] उपकार नहीं छै लिगार ॥ आ० ॥ ५१ ॥ संसार ने [illegible] तणो उपकार, समदृष्टि हुवे ते न्यारा न्यारा जाणे। [illegible] मिथ्याती ने खवर पड़े नहीं सूंधी, तिण सूं मोहकर्म [illegible] [illegible] ॥ आ० ॥ ५२ ॥ संसार ने मोक्ष रो उपकार [illegible] [illegible] जोड़ [illegible] सहर मझार। संवत् अठा[illegible] [illegible], भादवा सुदी बीज शुक्रवार ॥ आ० ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

चोसमा जिनवर हुवा, महावीर विख्यात।
पहली वाणी निष्फल गयी, हुवो अच्छेरो अचरज वात॥१॥
जम्भिका ग्राम बाहिरे, श्याम नामे कर्षणीरे खेत।
तिहां शाल नाम वृक्ष छै, गहर गम्भीर मान समेत॥२॥
तिण शाल वृक्ष हेठै आविया, भगवन्त श्रीवर्द्धमान।
वैशाख सुदी दशमी दिने, उपनो केवल ज्ञान॥३॥
केवल महोत्सव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक।
तिण मनुष्यांनेठीकपड़ीनहीं, तिणसूं मनुष्य न आयो एक॥
देवतासे वाणी वागरी, विति सांचववा काम।
कोई साध श्रावक हुवो नहीं, तिणसूंवाणीनिष्फलगईचाम
जो धन थकी धर्म निपजै, तो देवता पिण धर्म करन्त।
और वाणी सफली करै, मनमांही पिण हर्ष धरन्त॥६॥
व्रत पचखाणनहुवे देवतातणे, धनसूं पिण धर्म न थाय।
तिणसूंवीरवाणीनिष्फलगयी, तिणरोन्यायसुणोचित्तलाय॥७

॥ ढाल बारहवीं ॥

(शील सुरतरु वर सेवियै—देशी)

जिन धर्म हुवे सोनइया दियां, तो देवता देता [illegible]णी हायजी। पूरता मन रा मनरलीं, और वाणी निष्फल [illegible] गमातजी। भवि करज्यो पारखा जिन धर्म री॥१॥

॥ दोहा ॥

चौवीसमा जिनवर हुवा, महावीर विख्यात।
पहली वाणी निष्फल गयी, हुवो अच्छेरो अचरज वात॥१॥
जंभिका ग्राम बाहिरे, श्याम नामे कर्षणीरे खेत।
तिहां शाल नाम वृक्ष छै, गहर गम्भीर पान समेत॥२॥
तिण शाल वृक्ष हेठै आविया, भगवन्त श्रीवर्द्धमान।
वैशाख सुदी दशमी दिने, उपनो केवल ज्ञान॥३॥
केवल महोत्सव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक।
तिण मनुष्यांमेठीकपड़ीनहीं, तिणसूं मनुष्य न आयो एक॥
देवतासे वाणी वागरी, थिति सांचववा काम।
कोई साध श्रावक हुवो नहीं, तिणसूंवाणीनिष्फलगईआम
जो धन थकी धर्म निपजै, तो देवता पिण धर्म करन्त।
और वाणी सफली करै, मनमांहीं पिण हर्ष धरन्त॥६॥
व्रत पचखाणनहुवे देवतातणै, धनसूं पिण धर्म न थाय।
तिणसूंवीरवाणीनिष्फलगयी, तिणरोन्यायमुणोचित्तल्याय॥७

॥ ढाल बारहवीं ॥

(शील सुरतरु फल साधियै—देशी)

जिन धर्म हुवै सोनइया दियां, तो देवता देता तिणी ठायजी। पूरता मन री मनरली, और वाणी निष्फल न गमाताजी। भवि करज्यो पारखा जिन धर्म री॥१॥

॥ दोहा ॥

चौवीसमा जिनवर हुवा, महावीर विख्यात।
पहिली वाणी निष्फल गयी, हुवो अच्छेरो अचरज वात॥ १॥
जम्भिका ग्राम बाहिरे, श्याम नामे कर्षणीरे खेत।
तिहां शाल नाम वृक्ष छै, गहर गम्भीर पान समेत॥२॥
तिण शाल वृक्ष हेठै आविया, भगवन्त श्रीवर्द्धमान।
वैशाख सुदी दशमी दिने, उपनो केवल ज्ञान॥३॥
केवल महोत्सव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक।
पिण मनुष्यांनेठीकपड़ीनहीं, तिणसूं मनुष्य न आयो एक॥
देवतासे वाणी वागरो, थिति सांचववा काम।
कोई साध श्रावक हुवो नहीं, तिणसूंवाणीनिष्फलगईआम
जो धन थकी धर्म निपजे, तो देवता पिण धर्म करन्त।
वीर वाणी सफली करे, मनमांहीं पिण हर्ष धरन्त॥६॥
व्रत पचखाणनहुवे देवतातणे, धनसूं पिण धर्म न थाय।
तिणसूंवीरवाणीनिष्फलगयी, तिणरीन्यायसुणोचित्तलाय॥७

॥ ढाल बारहवीं ॥

(शील सुरतरु वर सेविये—ऐ देशी)

जिन धर्म हुवे सोनइया दियां, तो देवता देता आयो श्रावजी। पुरता मन री मनरली, वीर वाणी निष्फल न जाताजी। भवि तरज्यो पारखो जिन धर्म रा ॥१॥

गवानजी॥ भ० ॥१०॥ उत्तराध्ययन अट्ठावीसमें, मोक्ष
। मार्ग भाख्या च्यारजी। बाकी सर्व कामा संसार ना
ावद्य योग व्यापारजी॥ भ० ॥ ११ ॥ धर्म हुवै सावद्य
ान मे, असंयति ने बचायां हुवे धर्मजी। ते निश्चय
मदृष्टि जीवड़ा, ओ धर्म कर काटै कर्मजी॥ भ० ॥
१२॥ कर्म काटै एह सावद्य धर्म सूं, एहवा सावद्य
ामा अनेकजी। ते तो थोड़ा सा प्रगट करूं, ते सुणज्यो
आण विवेकजी॥ भ०॥ १३॥ मच्छ गलागल लग रही,
सारा द्वीप समुद्रां मांयजी। मोटो मच्छ छोटा ने भखै,
उण सूं मोटा मोटा उण ने खायजी॥ भ० ॥ १४॥
जो उद्यम करै एक देवता, एक दिन मे बचावे अनेक
जी। धर्म हुवे तो आघो काढै नही, ओ तो छै देवता
मे विवेकजी॥ भ० ॥ १५॥ जीव बचायां अभयदान
हुवे तो, अभयदान घणां ने देतजी। धर्म जाणे जीव
बचावियां, देव भव मे पिण लाहो लेतजी॥ भ० ॥१६॥
मछला बचावे एक दिन मझे, लाखां क्रोड़ां ही गिणि-
याई न जायजी। इण मे धर्म हुवै जिनराज रो, तो
देवता देवे बचायजी॥ भ० ॥ १७॥ मच्छ आगा सूं
मच्छ छोड़ावियां, उणरै पड़तो जाणे अन्तरायजी। तो
अचित मच्छला उपाय ने, उण ने पिण देवे खवायजी
॥भ०॥१८॥ जो धर्म हुवै माछला बचावियां, माछलाने

नागरजी ॥ भ० ॥२७॥ एकैका समदृष्टि देवता, त्यांरी
शक्ति घणी छै अत्यन्तजी। अढ़ाई द्वीपनो आरम्भ मेटने,
बचावै जीव अनन्तजी ॥ भ० ॥ २८ ॥ अढ़ाई द्वीपना
मनुष्यां भणी, भूख तृषा न राखे सोयजी। अचित अन्न
पाणी निपाय ने, सगलां ने तृप्त करे सोयजी ॥ भ० ॥
२९ ॥ विविध प्रकार ना भोजन करै, विविध प्रकार ना
पकवानजी। खादम स्वादम विविध प्रकारना, विविध
प्रकार ना खानपानजी ॥ भ० ॥ ३० ॥ शाक व्यञ्जन
विविध प्रकार ना, फल नीलोती विविध प्रकारजी।
मनसा भोजन सगला मनुष्यां भणी, करावै देवता
वारम्वारजी ॥ भ० ॥ ३१ ॥ ठाम ठाम अचित पाणी
तणा, कुण्ड भर भर राखे साम्हजी। वले भोजन विविध
प्रकार ना, त्यांरा ढिगला करै ठाम ठामजी ॥ भ० ॥
३२ ॥ चारों आहार अचित निपायने, दीधां हुवे धर्म
ने पुण्य तामजी। धर्म हुवे जीव बचावियां, तो देवता
करता ओहिज कामजी ॥ भ० ॥ ३३ ॥ देवता खाणो
देवे मनुष्यां भणी, तो खेत रो आरम्भ टल जायजी।
वले गहणा कपड़ा देवे देवता, तो घणा जीव मरै नहीं
तायजी ॥ भ० ॥ ३४ ॥ घर हाट हवेलियां महलायतां,
इत्यादिक कमठाणा तायजी। ए पिण निपजाए देवी
देवता, तो अनन्त जीव मरता रह जायजी ॥भ०॥३५॥

ते कारणा लोपणा न पड़ै, ते तो सुन्दर ने शोभा-
मानजी। ते पिण दीसे घणा रलियामणा, देवता न
करणां श्रासानजी॥ भ०॥ ३६॥ एहो कारणी क्रिया
धर्म निपजे, तो देवता आवो न काढन्तजी। आ कारण
कर कर्म काटने, काम मिराड़े चाढन्तजी॥ भ०।
३७॥ दान दियां ने जीव बचावियां, जो कर्म तणो
होय शोपजी। तो दान दे जीव बचाय ने, देवता किम
जावे मोक्षजी॥ भ०॥ ३८॥ अनेराने दिया पुण्य
निपजे, देवता रे हुवे पुण्य रा थाटजी। वलि धर्म हुवे
जीव बचाविया, देवता मोक्ष जावे कर्म काटजी॥भ०।
३९॥ असयति जीवा रो जीवणो, ते सावद्य जीतव
माखातजी। तिण ने देवे ते सावद्य दान छे, तिण में
धर्म नहीं अंग मातजी॥ भ०॥ ४०॥ धर्म हुवे तो
सगला मनुष्या तणा, रत्न जड़्या कर दे महलजी।
ते पिण थोडा में निपावदे, देवता ने करता सहलजी।
भ०। ४१। खाणो पीणो गहणो कपड़ादिक, गुहस्थ
ना [illegible] काम भोगजी। त्यारो कर [illegible] तेह ने
[illegible] [illegible] सजोगजी॥ भ०॥ ४२॥ काम भोग
[illegible] गृहस्थ ना, दुःख ने दुःख रा छे खानजी।
[illegible] किंपाक फल री उपमा, उत्तराध्ययन में कही
[illegible]। भ०। ४३॥ त्यांने भोगवावे धर्म [illegible]।

, तिणरे धंधे छे पाप कर्मजी। तिण में समदृष्टि वता, अंश मात न जाणे धर्मजी ॥ भ० ॥ ४४ ॥ केई ई अज्ञानी इम कहे, श्रावक ने पोष्यां हुवे धर्मजी। ाडू खवाय दया पलावियां, तिणरा कट जावे पाप र्मजी ॥ भ० ॥४५॥ लाडुवां साटे उपवास बेला करे, तण रा जीवितव्य ने छे धिक्कारजी। तिण ने पोषे छे, ोल ले, तिण में धर्म नहीं छे लिगारजी ॥ भ० ॥४६॥ ाडुवां साटे पोषा करे, तिण में जिन भाष्यो नहीं र्मजी। ते तो इह लोक रे अर्थे करे, तिण रो मूर्ख न जाणे मर्मजी ॥ भ० ॥ ४७ ॥ धर्म हुवे तो समदृष्टि देवता, अचित लाडुवादिक निपजायजी। भले पाणी पिण अचित निपजायने, श्रावकां ने जिमावे धपायजी ॥ भ० ॥ ४८ ॥ यावज्जीव सगला श्रावकां भणी, लाडू आदिक अचित खवायजी। अढ़ाई द्वीप रा श्रावकां भणी, दया पलाय पोषो करायजी ॥ भ० ॥ ४९ ॥ त्यां ने आरम्भ करवा दे नहीं, कल्पे ते देवता देतजी। धर्म हुवे तो आघो न काढता, सो पिण देवता लाहो लेतजी ॥ भ० ॥ ५० ॥ श्रावकां ने वस्तु हुवे चाहती, ऊणायत न राखे कायजी। धर्म हुवे तो आघो काढे नहीं, त्यांरे कमी न दीसे कायजी ॥ भ० ॥ ५१ ॥ जो धर्म हुवे श्रावक ने पोषियां, तो देवता पक्ष करे को

धर्मजी । असंख्याता श्रावक पोषमे, काटता निज पाप कर्मजी ॥ म० ॥ ५२ ॥ असंख्याता द्वीप समुद्र रे असंख्याता श्रावक छै तामजी । त्यांने पोषे समदृष्टि देवता, जो जाणे धर्म नो कामजी ॥ म० ॥ ५३ ॥ याने नो खाणो पीणो सर्वथा, अव्रत मे कह्यो छै भगवंजी। तिण सूं समदृष्टि देवता, एहवो किम करसी कामजी ॥ म० ॥५४॥ शक्र इन्द्र ने ईशान इन्द्र छै, तिरछा लोक तणा सरदारजी । हाल हुकम छै सगलां ऊपरे, असंख्याता द्वीप समुद्र मझारजी ॥म०॥५५॥ मच्छ गलागल लग रह्यो. सारा द्वीप समुद्रां मांयजी । जो धर्म हुवे जीव बचावियां, तो इन्द्र थोड़ा मे देता मिटायजी। म० ॥५६॥ भगवन्त कह्यो हुवे इन्द्र ने, जीव बचावियां धर्म होयजी । तो दोनूं इन्द्र जीव बचावता, आलस नहीं करता कोयजी ॥ म० ॥ ५७ ॥ मच्छ मच्छ आगा सूं छुडायने, मच्छां ने देता जीवां बचायजी । त्यांने दि॥ भूखा नहीं मारता, अचित्त मच्छ कर देता [illegible] जी ॥ म० ॥५८॥ यूं कियां जिन धर्म निपजे. तो [illegible] वल दिखावता आपजी । यने आज्ञा देता [illegible] [illegible] करता श्रावक [illegible] ॥ म० ॥ ५८ ॥ [illegible] बचावियां. यो तो संसार नो उपकारजी । [illegible] [illegible] नहीं धर्म जिन नहीं छै [illegible]

भ० ॥ ३० ॥ छः कायरा शस्त्र बचावियां, छः काया नो बैरी होयजी। त्यांरो जीवितव्य पिण सावद्य कह्यो, त्यांने बचायां धर्म न होयजी ॥ भ० ॥ ६१ ॥ असंयतीरा जीवणा सभे, धर्म नहीं अशसातजी। वले दान देवे छे तेहने, ते पिण सावद्य साक्षातजी ॥ भ० ॥ ६२ ॥ दान देवो ने जीव बचायवो, ओ तो देवता रे आसानजी। जो यूं कियां धर्म हुवे तो देवता, जाय पचमी गति प्रधानजी ॥ भ० ॥ ६३ ॥ जीव बचावणो ने सावद्य दान ने, ओलखायो पुर शहर मझारजी। संवत् अठारह ने वर्ष सतावने, कार्तिक बदी चौदस ने शुक्रवारजी ॥ भ० ॥ ६४ ॥

॥ इति श्री वृद्ध सिद्धान्त सारोपरि अनुकम्पा की चौपाई समाप्त ॥

॥ दोहा ॥

भेषधारी भूल्या घणा, त्यांरे दया नहीं घट मांय।
हिंसा धर्म परुपियो, बिना सूत्र रे न्याय ॥१॥
दया दया मुख सूं कहे, पिण दयारी खबर न काय।
भोलां ने पाड्या भ्रम में, ते हणे जीव छः काय ॥२॥

रांक जीवां रे अशुभ उदय सूं, लोकां सहित लागू उठ्या भेषधारी ॥ यां० ॥ ५ ॥ कुपात्र दान में पुण्य परूपे, तिण सूं लोक हणे जीवां ने विशेषो । कुगुरु एहवा चाला चलावे, ते भ्रष्ट हुवा लेई साधु रो भेषो ॥ यां० ॥६॥ पूछे तो कहे म्हे मौनज साजां, साखी कर जीव मरावण लागा, हेठलो झीवरो खेंच अलगा हुवा, त्यांने व्रत विहुणा कहीजे नागा ॥ यां० ॥ ७ ॥ कोई माली रे खोडे भूखो आय ऊभो, गाजर मूला धपाय खुवावे । एकान्त पाप उघाड़ो दीसे, तिण मांही मूरख धर्म बतावे ॥ यां० ॥ ८ ॥ बेंगण वालोरादिक अनेक नीलोतरी, कोई रान्धी रान्धी पोषे पर प्राणी । तिण मांहो दुष्टी धर्म बतावे, तो दुर्गति जावा री ए सहनाणी ॥ यां० ॥ ९ ॥ खर्च आघरणी ने भात बरोठी, अनेक आरम्भ कर न्यात जिमावे । ये सर्व संसार तणा कर्त्तव्य छे, तिण मांही मूरख धर्म बतावे ॥ यां० ॥ १० ॥ भेष-धारी श्रावक ने सुपात्र थापे, तिण ने नूंत जिमायां कहे मोक्ष रो धर्मो । उणमें सूत्र मन्त्र ज्युं परगमिया. हिंसा दढाय बांधे मूढ कर्मो ॥ यां० ॥११॥ कोई बीस पचीस श्रावक न्योतर ने, घरे आय घरकां ने धंधे लगावे । कोई मूंग दले कोई गेहूं पीसे, कोई अग्नि सूं चूल्हो धुंकावे ॥ यां० ॥ १२ ॥ कोई गवला पाणी आणी

हिन्सा कियां पाछे धर्म बतावे, तो कुगुरु वाणी जेहवी वहती घाणी ॥ यां० ॥ २० ॥ किण ही रांक भिखारी ने दान उदकियो, उदकियो दान श्रावक ने दिरावे । धनवन्त धर्म रो लेवण लागा, तो रांका रे हाथ कठा सूं आवे ॥ यां० ॥ २१ ॥ लाडू खोपरा रोकड़ नाणो, सानी कर सामग्री मे दिरावै । कुगुरु एहवा चाला चलावे, पेट भरा जाणे पात रै आवै ॥ यां० ॥ २२ ॥ माय सुखी हुवां गर्भ सुखी हुवे, कूवे पाणी हुवे तो उवारै आवे । इण दृष्टान्ते पेट काजे भेषधारी, आप आप तणी सामग्री मे दिरावे ॥ यां० ॥ २३ ॥ जद देवणवाला ने तो धर्म कहे छे, लेवणवाला ने कहे पापज होवे । तो धर्म करण ने मूढ अज्ञानी, सर्व साथी ने कांय डूबोवे ॥ यां० ॥ २४ ॥ सर्व सामग्री में पाप लगायां, ते पिण होसी निश्चय पापां सूं भारी । साची श्रद्धा ने ऊंधी बोले, तो विकलां ने गुरु मिल्या भेष-धारी ॥ यां० ॥ २५ ॥ धर्म करे औरां पाप लगावे, ओ धर्म कदे मत जाणज्यो रूड़ो । भारी कर्मा लोगां रे अशुभ उदय सूं, भेषधारयां मत काढ्यो कूड़ो ॥ यां० ॥ २६ ॥ कुपात्र दान री चर्चा करतां, पड़िमाधारी श्रावक ने सुज आवे । भोला लोकां ने भ्रष्ट करण ने, तो पिण भेद मिथ्याती न आवे ॥ यां० ॥ २७ ॥ पड़िमाधारी

॥ साधां रा आचार ॥

॥ दोहा ॥

पहिलां अरिहन्त ने नमुं, ज्यां सार्या आतम काम।
वले विशेषे वीर ने, ते शासण नायक स्वाम ॥१॥
तिण कारज साभी आपणा, पहुन्ता छै निरवाण।
सिद्धां ने वन्दणा करूं, ज्यां मेट्या आवण जाण ॥२॥
आचारज सहु सारसा, गुण रतना री खाण।
उपाध्याय ने सरव साधुजी, ए पांचूं पद वखाण ॥३॥
वांदीजे नित तेहने, नीचो शीश नमाय।
गुण ओलख वन्दणा करो, ज्यूं भव भवरा दुःख जाय ॥४॥
सुगुरु कुगुरु दोनूं तणो, गुण बिना खबर न काय।
प्रथम कुगुरु ने ओलखो, सुणो सूतर रो न्याय ॥५॥
सूतर साख दियां बिना, लोक न माने बात।
सांभल ने नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात ॥६॥
कुगुरु चरित अनन्त छे, ते पूरा किम कहाय।
थोड़ा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥७॥

कह्यो वाणियो, तीनां रो एक हवालजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ क्रय विक्रय में वरते ते तो, महा दोष छे एहजी। पेंतीसमां उत्तराध्ययन में, साधु न कह्यो तेहजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ नित को वहिरे एकण घर को, च्यारां मे एक आहारजी। दशवैकालिक तीजे अध्ययने, साधु ने कह्यो अणाचारजी ॥ सा० ॥ १० ॥ जो लावे नित धोवण पाणी, तिण लोप्यो सूतर रो न्यायजी। बतलायां बोले नहीं सूधा, दूषण देवे छिपायजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ नहिं कल्पै ते वस्तु वहिरे, तिणमे मोटी खोड़जी। आचारङ्ग पहिले श्रुतखंधे, कहि दियो भगवन्त चोरजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ पहिलो वरत तो पूरो पड़ियो, जब आडा जड़े किंवारजी। कोटा आगल होडा अटकावे, ते निश्चय नहीं अणगारजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ पोते हाथे जड़े उघाड़े, करे जीवां रा ध्यानजी। गृहस्थ उघाड़ने आहार वहिरावे, जद करे अणहुन्ता फेनजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ साधवियां ने जड़णो चाल्यो, तिण री म करो सांपजी। यां लारे कोई साधु जड़े तो, भागल रा अहनाणजी ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन करने जो जड़णो थपे, तिण नहीं जाणी परपीड़जी। पेंतीसमां उत्तराध्ययनमें, नरक गया महावीरजी ॥१६॥ परनिन्दा मे राता माता, चित्त मे नहीं सन्तोषजी। वीर कह्यो दशमां अङ्ग मांहि,

॥ ढाल पहली ॥

(ऊंधी सरधा कोई मत राखो—एदेशी)

ओलखणा दोरी भव जीवां, कुगुरु चरित अनन्त जी। कहितां छेह न आवे तिण रो, इम भाख्यो भगवन्त जी। साधु मत जाणो इण चलगत सूं॥ १॥ आ॥ कारणी थानक मे रहै तो, पड़ै चारित में भेदजी। निशीथ रे दशमे उद्देशे, चार मास रो छेदजी॥ सा० ॥ २॥ अठारे ठाणा कह्या जूवा जूवा, एक विराधे सोयजी। बाल कह्यो श्री वीर जिनेश्वर, साधु म जाणो सोयजी॥ सा० ॥ ३॥ आहार सिज्या ने वसतर पातर, असुध लियां नहीं सन्तजी। दशवैकालिक छट्ठे अध्ययने, भीट कह्यो भगवन्तजी॥ सा० ॥ ४॥ अचित वस्तु ने मोल लिरावे, तो सुमत गुपत हुवे खण्डजी। सास्त्र साधु री भाखे, तिण रो चौमासी डंडजी॥ सा० ॥ ५॥ ए तो सार निशीथ मे चाल्या, उगणीसमें उद्देशजी। सूत्र साधु बिन कुण सुणावे, सूत्र नो ऊंडो [illegible]नजी॥ सा० ॥ ६॥ पुस्तक पातरा उपासरादिक [illegible] ने नामजी। [illegible] मुण्डा [illegible] मोल [illegible] [illegible] नामजी। सा० ॥ ७॥ [illegible] [illegible] [illegible] कुगुरु [illegible] [illegible]जी। [illegible]

रो डडजी ॥ सा० ॥ २६ ॥ गृहस्थ साथे कहे सदेशो, तो मेलो हुवे संभोगजी। तिण ने साधु किम सरधीजे, लागो जोगने रोगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ समाचार विवरासुध कहि कहि, सानी कर गृहस्थ बोलायजी। कागद लिखावे करी आमना, पर हाथ देवे चलायजी॥ सा० ॥ २८ ॥ आवण जावण बेसण उठण री, जायगा देवे बतायजी। इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो बेहुं बराबर थायजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ गृहस्थ ने देवे लोट पातरा, पूठा परत विशेषजी। रजोहरणा ने पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुवा लेई भेषजी ॥ सा० ॥३०॥ पूछे तो कहे परठ दिया मे, कूड कपट मन मांहिजी। काम पड़े जब जाय उराले, न मिटी अन्तर चाहिजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ कहे परठ्या गृहस्थ ने देई, बोले वले अन्यायजी कह्यो आचाराङ्ग उत्तराध्ययन में, साधु परठे एकांत जायजी॥ सा० ॥३२॥ करे गृहस्थ सूं सदला बदलो पंडित नाम धरायजी। पूरी पड़ी सगलां बरतां री, भेष ले भूला आयजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ थोरी उपधि गृहस्थ ने दीधां, बरत रहे नहीं एकजी। चौमासी डंड निशीथ में गूंथ्यो, तिण छोड़ी जिन धर्म टेकजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ जिन आज्ञा जिम शाधो चाले, छांड़ो निगर नगामजी। एहवा आगम कुगुरां री नाखी, कहवाने साधु नामजी ॥ सा० ॥३५॥

करै भारी कर्म द्वेषजी । सूतर रो न्याय निन्दा कर जाने, तो डूबै बले विशेषजी ॥ सा० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

भेष पहर्यो भगवान रो, साधु नाम धराय ।
आचार में ढीला घणा, ते कह्यो कठा लग जाय ॥१॥
त्यांने वांदे गुरु जाणने, बले कूड़ी करै पखपात ।
त्यां झूठा ने साच करण खपै, त्यांरे मोटो चाल मिथ्यात ॥
कुगुरु तणा पग वांदने, आगे बूडा जीव अनन्त । २ ।
बले बूडे ने बूडसी घणा, त्यांरो कहतां न आवे अंत ॥३
साध मारग छै सांकडो, तिण में न चालै खोट ।
आगार नहीं त्यांरे पापरो, त्यां वरत किया नवकोट ॥४॥
भेषधारी भागल घणा, त्यांसूं पले नहीं आचार ।
कुण कुण अकारज कर रह्या, ते सुणज्यो विसतार ॥५॥

॥ ढाल बीजी ॥

([illegible])

कुगुरु तणा चरित्त चाला कर सूं, सूतरनी देऊं साखजी । सुमता आण सुणो भव जीवां, थें जोर गया छै आपजी ॥ साध मत जाणो इण आचार ॥ १ ॥
जो थे कुगुरु मेंठा कर झाल्या, तो सुध बुध न कोई

॥ सा० ॥१०॥ गृहस्थ ने घर जाय गोचरी, जो जड़ियो देखे दुवारजी । तिहां सुध साधु तो फिर जाय पाछा, भागल जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ केई भेषधाऱ्यां रे एहवी सरधा, जो जड़ियो देखे दुवारजी । तो धणी तणी आगन्या लेई ने, मांहि जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ हाथ सूं साध किंवार उघाड़े, मांहि जावे वहिरण ने आहारजी । इसड़ी ढीली करे परूपणा, ते थिटल हुआ विकरालजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ किंवार उघाड़ो ने आहार वहिरण रो, मूल न सरधे पापजी । कदा न गया तो पण गया सरीखा, आ कर राखी छे थापजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ किंवार उघाड़ ने वहिरण ने जावे, तो हिंसा जीवां री थायजी । ते आवसग सूतर मांहि वरज्यो. चौथा अध्ययन रे मांय । जो ॥ सा० ॥ १५ ॥ गांव नगर बारै उतरियो. फाटक सघरा री नाहिजी । जो आवे रात रहे तिण ठामें, ते नहीं जिण आज्ञा मांहिजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ एक रात रहे फाटक में तिण ने, च्यार मास रो छेदजी । ए बृहत् कल्प रे तीजे उद्देशे, ते सुण सुण म करो खेद जी ॥ सा० ॥ १७ ॥ इसड़ा दोष साधां ने सेवे, तिण छोड़ा जिन धर्म रा रीतजी । पछ्या भिष्ट आचारी आगल, त्यां री कुण करसी परतीतजी ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ सा० ॥१०॥ गृहस्थ ने घर जाय गोचरी, जो जड़ियो देखे दुवारजी। तिहां सुध साधु तो फिर जाय पाछा, आगल जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ केई भेषधाखां रे एहवी सरधा, जो जड़ियो देखे दुवारजी। तो धणी तणी आगन्या लेई ने, मांहि जावे खोल किंवारजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ हाथ सूं साध किंवार उघाड़े, मांहि जावे वहिरण ने आहारजी। इसड़ी ढीली करै परूपणा, ते विटल हुवा विकरालजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ किंवार उघाड़ी ने आहार वहिरण रो, मूल न सरधै पापजी। कदा न गया तो पण गया सरीखा, आ कर राखी छै थापजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ किंवार उघाड़ ने वहिरण ने जावे, तो हिंसा जीवां री थायजी। ते आवसग सूतर मांहि वरज्यो, चौथा अध्ययन रे मांय। जो ॥ सा० ॥ १५ ॥ गांव नगर बारै उतरियो, कटक सघवारो ताहिजी। जो साधु रात रहै तिण ठामे, ते नहीं जिण आज्ञा मांहिजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ एक रात रहै कटक में तिण ने, च्यार मास रो छेदजी। ए वृहत् कल्प रे तीजे उद्देसे, ते सुण सुण न पावै खेदजी ॥ सा० ॥ १७ ॥ इसड़ा दोष साधां में सेवे, तिण छोडी जिन धर्म री रीतजी। एहवा भेष धारी आगल, त्यांरी कुण करसी परतीतजी ॥ सा० ॥ १८ ॥

हिर बिगाड़्यो सांगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ न्यातीला ने
ास दिरावे, तिण रे मोह न मिटियो कोयजी । वले
ार संभार करावे त्यांरो, ते निश्चय साध न होयजी ॥
ा० ॥ २८ ॥ अनरथ रो मूल कह्यो परिगरो, ठाणांग
ीजे ठाणजी । तिण रो साध करै दलाली, ते पूरा मूढ
अजाणजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ ऋतु उन्हाले पाणी ठारै,
गृहस्थ रा ठाम मझारजी । मनमाने जब पाछा सूंपे,
ते पी जिन आज्ञा बारजी ॥ सा० ॥ ३० ॥ गृहस्थ
रा भाजन में साधु, जीमे असणादिक आहारजी ।
तिण ने भिष्ट कह्यो दशवैकालिक में, छठा अध्य-
यन मझारजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ कोई सांग पहिर
साधवियां वाजे, पिण घट मांहि नहीं विवेकजी ।
आहार करे जद जड़े किंवाड़, वले दिन मांहि बार
अनेकजी ॥ सा० ॥ ३२ ॥ ठरडे मातरे गोचरी जावे,
जब आडा जड़े किंवारजी । वले साधां कने आवे ताडो
जतने, त्यांरो बिगर गयो आचारजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥
साधवियां ने जड़णो चाल्यो, ते शीलादिक राखण
काजजी । और काम जो जड़े साधवी, तिण छोड़ी
संजम लाजजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ आवस्यग मांहि हिंसा
कही जड़ियां, आलोयण जाने ताहिजी । कम करणे
जड़नो नहिं पड़े, उत्राध्ययन बैतीसमां मांहिजी ।

जीव अनेक मरै तिण लिखतां, करै तस थावर री घात
जी ॥ सा० ॥४४॥ इण विध साधु परत लिखावै, तिण
संयम दीधो खोयजी। जे दया रहित छै एहवा दुष्टी,
ते निश्चय साध न होयजी ॥सा०॥४५॥ छःकाय हणी ने
परत लिखी ते, आधा करमी जाणजी। तेहिज परत
जो साधु वहिरै, तो भागल रा एहनाणजी ॥सा०॥४६॥
वले तेहिज परत टोला में राखे, आधा करमी जाण
जी। जे शामिल हुवा ते सघला डूवा, तिणमें शङ्का
मत आणजी ॥ सा० ॥ ४७ ॥ आधा करमी रा लेवाल
रुलै तो, उत्कृष्टो काल अनन्तजी। दया रहित कह्यो
तिण साधु ने, भगवती में भगवन्तजी ॥ सा० ॥ ४८ ॥
कोई श्रावक साध समीपे आए, हरषे वांदे पग झाल
जी। जद साधु हाथ दे तिण रे माथे, आ चोडे कुगुरु
री चालजी ॥ सा० ॥४९॥ गृहस्थ रै माथे हाथ देवै तो,
गृहस्थ बरोबर जाणजी। एहवा विकलां ने साधु सरधे,
ते पिण विकल समानजी ॥ सा० ॥५०॥ गृहस्थ रै माथे
हाथ दियो तिण, गृहस्थ सूं कीधो संभोगजी। तिण ने
साध जिम सरधीजे, लागे जोग ने रोगजी ॥ सा०
॥ ५१ ॥ दशवैकालिक आचारांग मांही, वले लीजो
सूत निशीथजी। गृहस्थ रे माथे हाथ देवै तो, आ पर-
त्यक्ष कही रीतजी ॥ सा० ॥ ५२ ॥ ऐसा करै ते चोर

तीजी भावना, तिहां वरज्यो दृष्टांत अङ्गजी ॥ सा० ॥ ६१ ॥ इता साधवियां छै टोला में, वले कारण न पड्यो जोयजी। तो पिण दोय साधवियां रहे छै, ओ दोष उघाड़ो जोयजी ॥ सा० ॥ ६२ ॥ एक वितर्णो रहे दोय साधवी, ते जिन आज्ञा में नाहिंजी। त्यांने वरज्यो छै व्यवहार सुतर में, पांचमा उद्देशा मांहजी ॥ सा० ॥६३॥ कारण विना एकली साधवी, असणादिक वहिरण जायजी। वले ठरडे पण एकलड़ी जावे, ते नहिं जिन आज्ञा मांयजी ॥ सा० ॥ ६४ ॥ वले एकलड़ी ने रहयो वरज्यो. इत्यादिक बोल अनेकजी। वृहत्कल्प रे पांचमे उद्देशे, ते समझो आप विवेकजी ॥ सा० ॥ ६५॥ कुगुरु एहवा भेष चाचारी, साधां सूं दे भिड़कायजी। आप तणा किरतब सुं डरतां, जिन मारग दियो छिपायजी ॥ सा० ॥ ६६ ॥ इसड़ा कुगुरां ने गुरु कर जाने, त्यांरे अभिन्तर में अन्धारजी। गुरु में खोट घाव अज्ञानी, ते चान्या जनम बिगारजी ॥ सा० ॥६७॥ अशुभ कर्म ज्यांरे उदय हुआ जब, इसड़ा गुरु मिलिया आयजी। दर्शन रो पाय आवक बुड़ा, पड़े चिडूंगत गोता खायजी ॥ सा० ॥ ६८॥ इम सांभल उत्तम नर नारी, छोड़ो कुगुरु नो संगजी। सतगुरु सेवो शुद्ध आचारी, दिन दिन चढ़ते रङ्गजी ॥ सा० ॥ ६९ ॥

कीजो॥ १॥ अनन्त चौवीसी मुगत गई ते, आहार ल्याया था दोषण टाली। तिण मांही पाप बतावे अज्ञानी, त्यां सगलां रे शिर दीधो आलो॥ इ०॥ २॥ सरब सावद्य जोग रा त्याग करी ने, सरब व्रती सुध साध कहावे। तिरण तारण पुरुषां रे अज्ञानी, इव्रत रो आगार बतावे॥ इ०॥ ३॥ गोतम आदि दे साध अनन्ता, साधवियां रो छेह न पारो। सगलां रो आहार अधर्म मांहि घाल्यो, तिण आंख मीची ने कीधो अंधारो॥ इ०॥४॥ साधु रो जनम हुवो जिण दिन थी, वालपे ते वस्तु वहिरी ने लावे। ते पिण अरिहन्त नी आगन्या सूं, तिण मांही मूरख पाप बतावे॥ इ०॥ ५॥ वसतर पातरा रजूहरणादिक, साधु रा उपध सूतर मांहे घाल्या। अरिहन्त री आगन्या सूं राख्या, अधर्म मांहे अज्ञानी घाल्या॥ इ०॥ ६॥ दशवैकालिक ठाणा अंग में, प्रश्न व्याकरण उववाई मांयो, धरम उपध साधु रा वरत में, तिण मांहि दुष्टी पाप बतायो॥ इ०॥ ७॥ किण ही गृहस्थ लीलोतरी ने त्यागी, जीवे ज्यां लग आप वैरागी। साधपणो लेई इव्रत सरधै, तो विवेक विकल ग्रायवा आई लागी॥ इ०॥ ८॥ अधर्म जाणै लीलोतरी खाधां, तो पचखाण भागो किम लेवै। घर में थकां जावजीव त्यागी थी, इण न्याइ मूरख क्यूं

पिण सरधा कहै भेषधारी ॥ डू० ॥१७॥ जो पाप लागे साधु आहार कियां में, तिण रे पाप रो साज दियो दातारो। तिण री आशा राखे किण लेखे, भूला रे भूला थे मूढ गिंवारो ॥ डू० ॥ १८ ॥ साधां तो पाप अठारे ही त्याग्या, चोखी छे ज्यांरी सुमति ने गुपती। दातार कने सुध जांच लियां मे, पाप कठे सूं लागो रे कुमती ॥ डू० ॥ १९ ॥ गुरु दीक्षा देई शिष्यणी करे ते, निर्जरारा फेट मांहे चाल्या। मोह मिथ्यात सूं भारीकरमा, ए पिण परिगरामां घाल्या ॥डू०॥२०॥ छठे गुणठाणे पर-माद कहीने, साधां रा डूब्रत थापे खावारी। पूछे तो कहै म्हे सरब ब्रती छां, ओ पिण झूठ बोले भेषधारी ॥डू० ॥ २१ ॥ छठे गुणठाणे परमाद कह्यो ते, किण हिक वेलां लागतो जाणो। विषे कषाय अशुभ जोग आयां, पिण मूढ़मती करे अन्धी ताणो ॥ डू० ॥ २२ ॥ प्रमाद कहे आहार उपध सूं, कर रह्या कुबुधि कूड़ी विषवादो। आहार उपध केवली पिण आणे, कठे गयो त्यांरो पर-मादो ॥ डू० ॥२३॥ अप्रमादी कह्या सात मे गुणठाणे, प्रमाद नहीं तिण गुण ठाणा आगे। आहार उपध उवे-पिण भोगवता, त्यां साधां ने परमाद क्युं नहीं लागे ॥ डू० ॥२४॥ केवली आचरियो छद्मस्थ आचरियो, केवली त्यागो ते छद्मस्थ त्यागे। आहार उपध केवली क्युं

करै वखाणो। उण उलट बुद्धि री सरधारै लेखै, ए पिण पाप तणा पचखाणो॥ दु०॥ ३३॥ कोई साधु साधां ने आहार देवण रा, त्याग करै मन उछरङ्ग आणो। उण उलट बुद्धि री सरधारै लेखै, ए पिण पाप तणा पचखाणो॥ दु०॥ ३४॥ कोई साधु साधां री न करै वेयावच, त्याग करै मन उछरङ्ग आणो। उण उलट बुद्धि री सरधारै लेखै, ए पिण पाप तणा पचखाणो॥ दु०॥ ३५॥ साधां मूल गुण में सरब सावज त्याग्यो, तिण सूं नवा पाप न लागे जाणो। आगला कर्म काटण साधां रे, उतर गुण छै दश विध पचखाणो। आ सरधा श्री जिनवर भाषी॥ आंकड़ी॥३६॥ कोई वास वेलादिक करै संथारो, कोई साध करै नितरो नित आहारो। पाप रा त्याग दोयां रे सरिखा, पिण तप तणो छै भेदज न्यारो॥ आ०॥ ३७॥ जैणा सूं चाल्या जैणा सूं ऊभा, जैणा सूं बैठा जैणा सूं सुवन्ता। जैणा सूं भोजन किया जैणा सूं बोल्या, तिण साधु ने पाप न कह्यो भगवन्ता॥ आ०॥ ३८॥ दशवैकालिक चौथे अध्ययने, आठमी गाथा अरिहन्त भाषी। छः बोल साधु जैणा सूं कियां में, पाप कहे भारी करमा अन्दाखी॥ आ०॥ ३९॥ निरवद गोचरी ऋषेश्वरां री, मोचरी साधन भगवन्त भाषी। दशवैकालिक पांच मे अध्ययने,

साधु अलप पूजा हुसी, ठाणा अङ्ग में साख ।
असाधु महिमा अति घणी, श्रीवीर गया छै भाख ॥३॥
कुदेव कुगुरु कुधर्म में, घणा लोक रह्या बंध होय ।
ओलखने निरणो करै, ते तो विरला जोय ॥४॥
साध मारग छै सांकड़ो, भोला ने खबर न काय ।
जिम दीवे पड़े पतंगियो, तिम पड़े पगां मे जाय ॥५॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार ।
उलटा पड़ो जिण धर्म थी, पड़सी नरक मझार ॥६॥
महा निशीथ मे में सुणी, गुण बिण धारी भेष ।
लाखां क्रोड़ां गमे सांवठा, नरक पडन्ता देख ॥७॥
लीधा व्रत न पालसी, खोटी दिष्ट अयाण ।
तिणने कही छै नारकी, कोई आप म लेज्यो ताण ॥८॥
आगम थी अवला चले, साधु नाम धराय ।
सुध करणी थी वेगला, ते कह्या काठा लग जाय ॥९॥

॥ ढाल चौथी ॥

(चन्द्रगुप्त राजा सुणो-- पदेशी)

सीधा घर आपे साधु ने, वले और करावे आगे रे ।
एहवा उपासरा भोगवे, त्यांने वजर किरिया लागे रे ।
तिणने साधु किम जाणिये ॥ १ ॥ आचारांग दूजे कह्यो,
सघा दुष्ट दोषण छै तिणमें रे । जो वीर वचन सरधो

रे। साधु अरथे करावे ते भोगवे, ज्यांरा ज्ञानादिक गुण न्हाठा रे॥ ति०॥ ११॥ थापीतो थानक भोगवे, त्यां दिया महाव्रत भांगो रे। भावे साधुपणा थो वेगला, त्यां ने गुण विन जाणे सांगो रे॥ ति०॥ १२॥ काच चशमो वरज्यो ते राखियो, वले जाणे छै दोषण थोरो रे। पांचमों व्रत पूरो पखो, वले जिण आगन्या रो चोरो रे॥ ति०॥ १३॥ गृहस्थ आयो देखी मोटका, हाव भाव सूं हरषित हुआ रे। विछावण री करै आमना, ते साधपणा थो जूवा रे॥ ति०॥ १४॥ गृहस्थ आयो साधु तेड़वा, कपड़ो वहिरावण लई जावे रे। इण विध वहिरै तेह से, चारित किण विध पावे रे॥ ति०॥ १५॥ साहमो आण्यो लेजावे तेड़िया, ए दोषण दोनूंई भारी रे। यांने टाले छेड़ायत वीरना, सेव्यां नहीं साध आचारी रे॥ ति०॥ १६॥ धोवणादिक मे नोलोतरो, जीवां सहित कण भीना रे। एहवा वहिरै शकी नहीं, ते परभव सूं नहीं बिहना रे॥ ति०॥ १७॥ एहवो अन्न पाणी भोगवे, त्यांने साधु किम थापीजे रे। जो सूतर ने साचो करो, त्यांने चोरां री पांत मे थापीजे रे॥ ति०॥ १८॥ गृहस्थ ना समाचार घोल कागदा, साधु लिखे तो दोषण लागे रे। निशीथ ने अध्ययन-दोय कारण अपरला भागे रे॥ ति०॥ १९॥

रहो, वले दोहिलो रे मानव अवतार के ॥ चेतो रे० ॥ १४॥ आरम्भ थी छोड़ो आतमा रे, पीवो संजम रस पूर। शिव रमणी वेगी वरो, इम भाषे रे विजयदेव सूर के ॥ चेतो रे० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल श्रीपार्श्वचन्द्र सूरि कृत ॥

दुलहो नर भव पामणो जीवने, दुलहो श्रावक कुल अवतारो। गुणवन्त गुरुनो संग छे दोहिलो, ते पामी नें मत हारो रे ॥ प्राणी जीव दया व्रत पालो ॥ गुरु गम सांभल आगम वाणी ॥ घे परमार्थ संभालो रे प्राणी जीव दया व्रत पालो ॥ १ ॥ आस्रव प्रति पक्ष संवर बोल्यो, तेहनी रहस्य विचारो। आरम्भ आस्रव सयम सम्वर, इम जाणी जीव म मारो रे ॥ प्राणी जी० ॥ २ ॥ जीव सहु ते जीवणो वंछे, मरणो न वंछे कोई। आपणने दुख छे जिम छे परने, हिये विमासी जोई रे ॥ प्राणी जी० ॥ ३ ॥ अङ्ग उपाङ्ग शस्त्र धारा घणी सूं, नख चख छेदे भेदे कोई। जेहवी वेदना मनुष्य ने होवे, तेहवी एकेन्द्रिय ने होई रे ॥ प्राणी जी० ॥ ४ ॥ जोजरा पुरुष ने बलवन्त तरुणो, देवे मुष्टि प्रहारो। जे दुःख वेदे तेहवो एकेन्द्रिय में, भोषां हाग सभारो रे ॥ प्राणी जी० ॥५॥

हिंसा में धर्म प्ररूपे, यो म्हांने अचरज आयो रे ॥ प्राणी जी० ॥ १४ ॥ पार्श्वचन्द्र सूरि भणे इण परे, आणा सहित करुणा पाले । ते नर दुर्गति ना दुःख टाले, ज्ञान कला उजवाले रे ॥ प्राणी जी० ॥ १५ ॥

॥ ढाल दूजी चाल तेहिज ॥

चैत्य मन्दिर मांहि वृक्ष ज ऊग्यो, अनन्त जीवां नो वासो । लोह कुल्हाड़ी ले आपण छेदे, कांई करो दुर्गति वासो रे ॥ मुनिवर हिन्सा धर्म कांई भाखो ॥१॥ सांच कहे तो ते नहीं माने, कूड़ कहे ते कीजे । असत्य भाखी ने हीनाचारी, ते गुरु कर आघा लीजे रे ॥मुनि०॥२॥ चारित्र पाली मुक्ति पहुंता, ते मारग नहीं थापो । सूक्ष्मतो होई जीव विराधो, न्याय करो एहवो पापो रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ धर्म उथापो ने हिन्सा थापो, छः काय प्राण लुटावो । धर्म तणो छांटो नहीं मांहीं, अहलो जन्म गुमावो रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ वन से बावरी बावर मांडे, लोकां में हुवे पुकारो । भगवन्त आगल बावर माडो, लाखां कोड़ां रो सहारो रे ॥ मुनि० ॥५॥ ऊणा ने चाम चाहिजै ने, मांस खाइजे पेट रै कारण खावै । ये जीव विराधी ने मन पछतावै, इण री जाण न आवै रे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ थे चाम न भींटो मांस न खावो, पांहे तुमे जीव हणावो । ए भगवन्त मार्ग दूषण

॥ अथ हुराडी लूंकारी लिख्यते ॥

शहर जेतारण मध्ये लूंका गुजराती सरूपचन्दजी रामचन्दजी रा उपासरा थी हुराडी आणी तिण में शुद्ध प्ररूपणा जाणो ने उण रे देखादेख लिखी छे :—

(१) तीन ही काल का भाव केवल ज्ञानी देख्या कोई जीव ने नवतत्वरे जाणपणा विना संसार समुद्र सूं तिरतो देख्यो नहीं। साख सूत्र प्रथम सूयगडांग, अध्ययन १२ गाथा १६।

(२) जीव ने अजीव राश दो कही, तीसरी राश कहवे तिण ने तिराशियो निन्हव कहीजे। सा॰ सू॰ उववाई, प्र॰ १८।

(३) जीव अजीव त्रस स्थावर जाणे नहीं तिणरा पच्चक्खाण दुपचक्खाण कह्या। सा॰ सू॰ भगवती, श॰, ७, उ॰ २।

(४) जीव अजीव ने जाणे नहीं, जीव अजीव दोनां ने जाणे नहीं, तिण ने संजमरी ओलखना नहीं। सा॰ सू॰ दशवैकालिक, अ॰ ४, गा॰ १२।

(५) सम्यक्त बिना चारित्र नहीं, सम्यक्त विना ज्ञान नहीं। सा॰ सू॰ उत्तराध्ययन, अ॰ २८, गा॰ २९।

साख सूत्र प्रथम सूयगडांग अ० १, उद्देशे २, गाथा १४।

(१४) श्रावक ने केवल ज्ञानी परूप्यां विना दूसरो धर्म माननो नहीं। साख सूत्र उववाई प्रश्न २०

(१५) सम्यक्ती ने धर्म केवल ज्ञानी परूप्यो माननो दूसरो माननो नहीं। साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० २८, गाथा ३१।

(१६) केवली ज्ञानी री पाखण्डियां री वचनां री खबर नहीं। जिकां रे घणो अकाममरण बाल मरण होसी। साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ३६, गाथा २६५।

(१७) पर वचन सोई अर्थ परमार्थ शेष थाकता रह्या सोई सर्व अनर्थ। साख सूत्र उववाई प्रश्न २०।

(१८) केवल्यां रो आचार सोई छद्मस्थ रो आचार केवल्यां रो अनाचार सोई छद्मस्थ रो अनाचार। साख सूत्र प्रथम आचारांग अध्ययन २, उद्देशे ६।

(१९) वक्तव्या दोय कही—१ समसय वक्तव्य, २ पर समय वक्तव्य। समसय वक्तव्य की तो साधु आज्ञा देवे। पर समय वक्तव्य मे सात औगुण—अनर्थ १, अहित २, असंजम भाव ३, अक्रिया ४, अनुमारग ५, उपयोग रहित ६. मिथ्यात ७। साख सूत्र अनुयोगद्वार ७ नय पूरी हुई जठे।

(२०) केवली परूपियो एकान्त धर्म कह्यो। साख सूत्र प्रथम सुयगडांग अध्ययन ६ गाथा ७।

(२१) केवली परूपियो धर्म यथार्थ सरल शुद्ध माया कपटाई रहित। साख सूत्र प्रथम सुयगडांग अध्ययन ८, गाथा १।

(२२) जिन कारणों से किंचित मात्र हिंसा नहीं ते करणी ज्ञान रो सार कह्यो। सा० सू० प्र० सुयगडांग, अ० १, उ० ४ गा० १०।

खादम स्वादम, वत्थ, पडिग्गह, कम्मल, पायपुञ्छण, ए ८ बोल देवे, दिरावे, देवतां ने भलो जाने तिण ने चौमासी प्रायश्चित आवै। साख सूत्र निशीथ, उ० १५, बोल ७४-७५।

(२९) वोसराया ने अणवोसराया कहे अणवोसराया ने वोसराया कहे तिण ने प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० १६, बोल १३-१४।

(३०) सरीखा साधु होकर के सरीखा साधुवों ने थानक देवे नहीं दिरावे नहीं देवतां ने भलो जाने नहीं तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० १७, बोल २२३।

(३१) गृहस्थ री व्यावच्च करे करावे करता ने भलो जाने तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० ११ बोल ११

(३२) सरीखी साध्वियां ने थानक देवे नहीं दिरावे नहीं देवता ने भलो जाने नहीं तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० १७ बोल २२४।

(३३) साधु वसे तिण थानक में न्याति, अन्य न्याति, श्रावक अथवा श्राविका आधी रात वा सारी रात राखे तो प्रायश्चित। साख सूत्र निशीथ, उ० ८, बोल १८।

असमर्थ कह्यो। मिश्र धर्म परूपणेवालो आपरो मत थापवा भणी छल बल मांडो छै। साख सूत्र प्रथम सूयगडांग, अध्ययन १२, गाथा ५।

(४२) साधुरी आज्ञा बारे धर्म सरधै तिणने काम भोग में खूतो कह्यो, हिंसा रो करणेवालो कह्यो। साख सू० प्रथम आचारांग, अ० ६, उ० ४।

(४३) साधु री आज्ञा बारे धर्म कहसी तिण रा तप ने नेम भ्रष्ट कह्या ने मूर्ख कह्या। सा० सू० प्रथम आचारांग अ० २, उ० २।

(४४) आज्ञा बारै धर्म कहै आज्ञा मांहि पाप कहै, ए दो बोल कोई जीव ने छोज्यो मतो। साख सू० प्रथम आचारांग अ० ५ उ० ६।

(४५) पर वचन सूं विरुद्ध परूपणे वाले ने भगवान् निन्नव कह्यो निन्नवां रो आचार छै। सा० सूत्र उववाई प्रश्न १८।

(४६) राग द्वेष ने पाप कह्यो। साख सू० उत्तराध्ययन अ० ३१, गाथा ३।

(४७) कोई कोई इम कहै सातां दियां साता होवै तिणांरै श्री भगवान् छव बोल परूणा—१ आरज मार्ग सूं वेगलो, २ समाधि मार्ग सूं न्यारो, ३ जैन धर्म रो हीलणा करणहार कह्यो, ४ गाढ़ा सुखां रे कारणे

घणा सुखां रो हारणहार कह्यो, ५ अमोल रो कार कह्यो, लोह वाणियां नी परे घणो झूरसी। साख सू प्रथम सूयगडांग अध्ययन ३, उ० ४, गाथा ६-७।

(४८) साधु होकर पिण अणुकम्पा रे वास्ते जीव ने बांधे बंधावे बांधता ने भलो जाणे, छोड़े छुड़ा छोड़तां ने भलो जाणे तिण ने चोमासी प्रायश्चि आवे। साख सू० निशीथ उ० १२, बोल १—२।

(४९) मोक्ष रो मार्ग जाणे नहीं तिण ने श्री भगवान् री आज्ञा रो लाभ नहीं। साख सू० प्रथम आचारांग अ० ५, उद्देशा ४।

(५०) ब्राह्मण ने जिमायां तमतमा पड़े। साख सू० उत्तराध्ययन अ० १४ गाथा १२।

र्गां ने भलो जाने तो प्रायश्चित्त। साख सू० निशीथ उ० ६, बोल २२।

(५५) पुण्य पाप सूं जीव ने मचतो दीठो। सा० उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १५।

(५६) पुण्य पाप ने खपावनो कह्यो। साख सू० उत्तराध्ययन अ० २१. गाथा छेहली।

(५७) उसन्ना पासत्था ढीला ने वन्दना प्रशंसा करे करावे करतां ने भलो जाने तो चौमासी प्रायश्चित्त। साख सू० निशीथ उ० १३. बोल ४२—४३ ४४—४५।

(५८) साधु गृहस्थी की औषधि करे करावे करतां ने भलो जाने तो प्रायश्चित्त। साख सू० निशीथ उ० १२ बोल १७।

(५९) सामायक दोय कही—१ आगार सामायक, २ अणागार सामायक। साख सू० ठाणांग ठाणा २, उ० ३ बोल ६।

(६०) चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र, २ अणागार चारित्र। साख सू० ठाणांग ठाणा २. उ० १, बोल २५।

(६१) धर्म दोय कह्या—१ श्रुत धर्म, २ चारित्र धर्म। साख सू० ठाणांग ठाणा २, उ० १. बोल २५।

श्री श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी कृत उपदेश की ढाल लिख्यते।

॥ दोहा ॥

अरिहन्त देव अराधिये, निर्मल गुरु निग्रन्थ।
धर्म जिन आज्ञा चित धरो, तत्व अमोलक तन्त ॥१॥
मूढमती मन मोहवा, थापे हिंसा धर्म।
वन्दे निर्गुण देव गुरु, ते भूल्या अज्ञानी भ्रम ॥२॥
कहे धर्म ने कारणे, प्राणी हण्या नहीं पाप।
देव गुरु कारणे हण्या, आज्ञा दे जिन आप ॥३॥
इम कही विरुद्ध परूपता, नहीं आणे मन लाज।
देवल प्रतिमा कारणे, करे अनेक अकाज ॥४॥
हिन्सा धर्मी जीव ना, भाख्या पाल भगवन्त।
ठाम ठाम सूत्र मध्ये, ते सुणज्यो करि खन्त ॥५॥

॥ ढाल ॥

(भवियण जोवोरे हृदये विमासी -- एदेशी)

पृथ्वी हणी देवल प्रतिमा करावे, धर्म हेत जीव मारे। त्यांने मन्द बुद्धि कह्या दसमें अंग, धर्मी

पोल रे ॥ कु० ॥ १० ॥ धर्म ठिकाणे जीव हणे तो, दया किसी ठौड़ पालो। कुगुरां ना बहकाया आतम ने कांय लगावो कालो रे ॥ कु० ॥ ११ ॥ उत्तराध्ययन रे बारमें अध्ययने, तीर्थ शील बतायो। ये शत्रुंजयादिक तीरथ थापो, कोई पिण झूठ चलायो रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ ज्ञान दरशण रा जतन करे ते, यात्रा कही सुखदायो। ज्ञाता सूत्र पांचमें अध्ययने. तो थाने तो खबर न कायो रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ इम ही महावीर सोमल ने, यात्रा भगवती में भाखी। शतक अठारमें दशमे उद्देशे, चारित्र यत्न ते यात्रा दाखी रे ॥ कु० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम तीर्थ यात्रा अमोलक, जिन कह्यो आगम मांहि। ते तीर्थ यात्रा थां स्यूं करनो न आवे, तिण सूं मांडी विकलाई रे ॥ कु० ॥ १५ ॥ शत्रुंजय ने पर्वत कह्यो जिनेश्वर, पिण तीर्थ न कह्यो लिगारो। अनागढ़ ज्ञाता सूत्र मांहे, देखो पाठ उघाड़ो रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ तीर्थ कहै तिण माहे पग देवो. तिण पर चढ़ो लूती नुधा। वले मन्त्र सूत्र तिण ऊपर नाख्यो, त्यांरे लिखे ते पूरा ऊन्धा रे ॥ कु० ॥ १७॥ मुख सूं कांइ कहै चूर्णी टीका मानो. वले माना आगम पैंताली। तें पिण बोल्यां रो नहीं ठिकाणो, त्यांरे कर्म तणी रेख काली रे ॥ कु० ॥ १८ ॥ नशा

पिछाणो रे ॥ कु० ॥ २६ ॥ "पच्छा" पाठ लारे निसेस्साय कह्यो छै, ते इण भव मांहे द्रव्य मोच जोय। लाय धक्को धन बारे काढ्यां, मुकावो ते दरिद्र होय रे ॥कु०॥२७॥ राज्य वेसतां सुर्याभ प्रतिमा पूजी, त्यां पिण "पच्छा" पाठ लारे "निसेस्साय"। ते पिण इणभव मे, विघ्न मेटन ने मोच सुहाय रे ॥ कु० ॥ २८ ॥ तुंगीया नगरीना श्रावकां पिण, किया विघ्न मेटण ने द्रव्य मंगलीक। सरसव द्रोव दही ने अचत, तिम सुर्याभ कियो लौकिक रे॥ कु० ॥२६॥ भगवन्त ने वांदतां दीचा लेतां "पेचा परलोए" लारे "निसेस्साय" ॥ तो लोकोत्तर खाते परलोकनी मोच, यो जाणो कर्म धक्को मुकायरे ॥ कु० ॥ ३० ॥ भस्मग्रह उतरियां पाछे, श्रमण निग्रन्थनो उदय २ पूजा थायो। यह प्रत्यच पाठ कह्यो कल्प सूत्र मे, ते पिण विकलां ने खबर न कायो रे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ संघपट्टो कियो जिनवल्लभ खरतरो, तिण तीर्थ यात्रा उडाई। जिन प्रतिमा थापि करी पेट भराई, भस्मग्रह प्रताप बताई रे ॥ कु० ॥३२॥ इत्यादिक प्रकरण टीका में, थोन पाना छे अनेक। ये कही प्रकरण टीका म्हे माना, पिण थोन नहीं मानो एक रे ॥ कु० ॥ ३३ ॥ जद कहे ये प्रकरण टीका नहीं मानो, तो थांरो नाम लेवो किण न्याय। मूल नो उत्तर करं इण ऊपर, ते

जीव निध्वंस रे ॥ कु० ॥४२॥ कही कही ने कितराएक कहूं, आज्ञा दया एक जाणो। पिण आज्ञारो निर्णय करे न्यायवादी, तो पासें पद निरवाणो रे ॥ कु० ॥ ४३॥ आज्ञा बारे धर्म कहे अज्ञानी, आज्ञा मांही पाप माने भ्रान्त। द्रव्य लिंगी साधां रा वेष मांही, ते पिण हिंसा धर्मियां री पांत रे॥ कु० ॥ ४४ ॥ मुख सूं कहे म्हे दया धर्मी छां, चाले हिंसा धर्म री चाल। जीव खवायां में पुण्य परूपे, तो मोह मिथ्यात में लाल रे ॥ कु० ॥ ४५ ॥ अव्रत सेवायां में पुण्य परूपे, पाप सेव्यां कहे पुण्य। त्यां ने ही हिन्सा धर्मी जानो, त्यांरी सरधा आचार जवुन रे॥ कु० ॥ ४६ ॥ इम सांभल उत्तम नर नारी, हिंसाधर्मी नो संग न कीजे। दया धर्मी जिन आज्ञा में चाले, त्यांरो सिक्षो शिर पर धर लीजे रे॥ कु० ॥ ४७ ॥ सम्वत अठारह से नव्वे वर्षे, द्वितीय भाद्रवा सुदी पांचम बुधवारो। हिंसा धर्मी ओलखावण काजे, जोड़ कीधी मालोतरे शहर मझारो रे॥ कु० ॥ ४८ ॥

अमृत के कन्द जैसी सुकृत समन्द जैसी।
सर्दरा का चन्द जैसी दिव्य सरसानी है॥
दिप्त मणि हीर जैसी नव्य कीर नीर जैसी।
देत भव तीर सहु भव्य मन मानी है॥
कहै मुनि सत्त आज रत्नगढ़ वीच मानो।
पुरन्दर प्रभा जैसी सभा दरसानी है॥

॥ ढाल ॥

(हां क जिनवर पास पियारो—पदेशी)

हां क छोगांनन्द तिहारी, मोहक छवि मोय लागत प्यारी। नन्दन वन सम आज यह फूली, फुलवारी रे क॥ छोगांनन्द तिहारी॥ ए आंकड़ो॥ श्री भिक्षु पट अष्टम सारी, गणिवर कालू गण रखवारी। मिथ्या ध्वान्त विडारवास, प्रगट्यो दिन कारी रे क॥ छो०॥ १॥ वरमित वाक्य सुधा रस धारी, श्रवण करत जन हरषित भारी। चातक दादुर मोद लहै मन, मेघ निहारी रे क॥ छो०॥ २॥ प्रभुता पूरण पेख तिहारी, सभय युत् रम्भा विपुरारी। ए कुण देव हरि हर ब्रह्मा, भयो अवतारी रे क॥ छो०॥ ३॥ तत्क्षिण दर्शी कदपि डरी, जाग्यो मदपति मदन उचारी। पयो [illegible] हुई, कीरति भारी रे क॥

तारन विच चंद्रक वृन्द निज कल्प विच।
सभा स्थित विष्णु वर चक्री चक्र अट्टा में॥
शची उर राजत है हार वर मोतिन को।
राम लघु भ्रात जेम सोहत सुभट्टा में॥
ऐसे ही सोहत अहो कालु गणिराज आज।
बीकानेर नयहु के मोछव की छट्टा में॥२॥
फिरत हैं शृगाल अति वन में निशंक धर।
भाजत हैं शीघ्र तव देखत मृगेन्द्र को॥
करत हैं चोरी नित तसकरहु हर्षयुत।
जहां लौं पहुँचे नांहि सिपाही नरेन्द्र को॥
भूसत है स्वान अति करत है ध्वनि हू हू।
पड़त हैं लट्ठ तब दौड़े तजि दम्भ को॥
ऐसे ही पाखण्ड सब पुलिंद पुलात जात।
देखत दीदार एक मूलचन्द नन्द को॥३॥

॥ स्रग्धरा छन्द ॥

दृष्ट्वा कालूं वसंतं, भवि जन विटपाः, फुल्लि-
तार्थं प्रकामाः। निष्पन्ना निर्गताशा, म्लानफूल मुकुटा,
धैर्य्यं वीराः कठोराः॥ लब्ध्वा कालूं दिनेशं विलपति
कमलं वृत्ति भाजां कदंबं घोतं मिथ्यात्व वृन्दं, ब्रजति
च हरणं, वेर भूत चामुण्डा सु ॥ १ ॥

अथ दश दान नी ढाल ।

॥ दोहा ॥

दशदान भगवन्त भाखिया, सूत्र ठाणांग मांय ।
गुण निपन्न नाम छै तेहना, ओलांमे खबर न काय ॥१॥
धर्म अधर्म दो मूलका, प्रसिद्ध लोक में एह ।
आठां को अर्थ ऊंधो करे, मिश्र धर्म कहे तेह ॥ २ ॥
मिश्र धर्म परूपता, कुड़ो वाद करन्त ।
आठां में अधर्म कह्यो, साम्भलज्यो हद्दन्त ॥ ३ ॥
आम नीम के रूंखनो, जुदो जुदो विस्तार ।
नीम निमोली तेल खल, नीम तणो परिवार ॥ ४ ॥
इमहिज आठों दाननो, अधर्म तणो परिवार ।
धर्म दान में मिले नहीं, श्रीजिन आज्ञा बाहर ॥५॥
इतरा मे समझो नहीं, तो कहूं भिन्न भिन्न भेद ।
विवरा सहित बताइयां, मत कोई करज्यो खेद ॥६॥

॥ ढाल ॥

कृपण हीन अनाथ ए, म्लेच्छादिक त्यांरी जात ए । रोग शोक में आरत ध्यान ए, त्याने दे अनुकम्पा

गारी लज्जावश थाय ए, सांकड़े पड्यां देवे ताय ए।
देवे सचित्तादिक धन धान्य ए, यह तो पांचमों लज्जा
दान ए॥ ११॥ यह तो सावद्य दान साक्षात ए, ते
दियो कुपात्र शाख ए। तिण में कहे मिश्र धर्म ए, तिण
थी निश्चय बंधसी कर्म ए॥ १२॥ मुकलावो पहरावणी
मुसाल ए. सगां ने जुवा जुवा संभाल ए। त्यांने द्रव्य
देवे यश ने काम ए, गर्वदान छे तिणरो नाम ए॥१३॥
कीर्तियावादी मल्ल ए, रावलियां रामत चल्ल ए। नट
गोपा आद विशेष ए, दान देवे त्यांने द्रव्य अनेक ए
॥ १४॥ इण दान थी बंधे कर्म ए, मूर्ख कहे मिश्र धर्म
ए। जेहनी प्रत्यक्ष खोटी वात ए, खोटी श्रद्धा ने मूल
मिथ्यात ए॥ १५॥ गणिकादिक सेवे कुशील ए, दान
दे त्यांने करावे केल ए। यह तो प्रत्यक्ष खोटो काम
ए, अधर्म दान छे तिण रो नाम ए॥ १६॥ सूत्र अर्थ
सिखाय ए, शुद्ध मार्ग आणे ठाय ए। आपे समकित
चारित्र एह ए, धर्म दान छे आठमों तेह ए॥ १७॥
वली मिले सुपात्र आण ए, देवे निर्दोषण द्रव्य जाण
ए। यह तो दान मुक्त रो मार्ग ए, तिण दियां दारिद्र
जावे भाग ए॥१८॥ छःकाय मारण रा त्याग ए, कोई
पशुवे आणी वैराग ए। अभयदान कह्यो जिन राय ए,
इसी दान में मिलियो आय ए॥ १९॥ सचित्तादिक

चौपने, तिहां कियो घणो उपकारजी ॥ सु० ॥ ५ ॥ बगड़ी में पूज्य विध सूं किया, तीन चौमासा श्रीकार जी। सत्तावीसे ने तीसांमेजी, तीजो छतीसे लीजो विचारजी ॥ सु० ॥६॥ नाथद्वारे में नीका किया, तीन चौमासा तहतीकजी। तयालीसे पचासे छपने, ज्यांरी रुड़ी राखजो ठीकजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ कंटालिया मांये किया, पूज्य किया चौमासा दोयजी। चौवीस अठावीसा वरस मां, जिहां जन्म कल्याणक होयजी ॥ सु० ॥८॥ पीपाड़ में पाखण्डी हुन्ता घणा, दोय दिया चौमासा ठायजी। चौंतीसे पैंतालीसे वरस में, घणु दियो मिथ्यात मिटायजी ॥ सु० ॥ ९ ॥ गढरणतमभर किलो तिहां, तलेटी माधुपुर मझारजी। एकतीसे अड़तालीसे दोनूं किया, तिहां अधिक हुवो उपकारजी ॥ सु० ॥१०॥ दोय चौमासा किया पुर शहर में, तिहां उपकार जाजेरो जाणजी। सैंतालीसे सतावने, ते गिण लीजो चतुर सुजाणजी ॥ सु० ॥ ११ ॥ अठारै वरसे वरसु कियो, बीसे राजनगर विचारजी। पंतीसे आमेट पाटू सैंतीसे में, तेपने सोजत शहर मझारजी ॥ सु० ॥ १२ ॥ पनरे गाम में किया पूज्यजी, चौमालीस चौमासा सारजी। एतो परम भगता शिष्य पाटवो, घणा रह्या पूज्य रे लारजी ॥ सु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

आद हुवा आदिमरू, आदिनाथ अरिहन्त।
तीजा आरा तेह मां, मुक्त गया मतिवन्त ॥१॥
त्यां आद काढ़ी जिन धर्म नी, युगलियां वारो मिटाय।
ससारी ने धर्म नो, दीधो रीत बताय ॥२॥
आद काढ़ो अरिहन्त ज्यूं, भिक्खु भरतज साध।
इण दुषम आरा मध्ये, लिया अरिहंत वचन आराध ॥३॥
भव्य जीवां रा भाग सूं, कियो घणो उद्योत।
मति श्रुत रा जोर सूं, घण घट घाली जोत ॥४॥
उपकार कीधो अति घणू, ते पूरो किम कहाय।
पण थोड़ो सो प्रगट करू, ते सुणजो चित्त लाय ॥५॥

॥ ढाल नवमीं ॥

दियो एक सौ तीन आसरे, सगलां ने संवेग चढ़ाय हो
। महा० । केई पाखण्ड मांहि सूं खांचने, आण्या
मारग मांय हो ॥ महा० ॥ धे० ॥३॥ जोड़ां कीधी मुनि-
वर युक्त सूं, सहस्र अड़तीस आसरे गिणाय हो। महा०।
निरणो न्याय बताव्यो निर्मलो, जाणे भाष गया जिन-
राय हो ॥ महा० ॥ धे० ॥ ४ ॥ समकित शुद्ध स्वरूप
बताविया, निज गुण पर गुण न्याय हो। महा० ।
सावद्य निर्वद्य पिछाण न्यारा किया, नहीं दोसे किण
मत मांय हो ॥ महा० ॥ धे० ॥ ५ ॥ हाड़ोती ढूंढाड़
वली कछ देश में, मरुधर देश मेवाड़ हो। महा० ।
घणा रात दिवस रटे रामनाम ज्यूं, आप इसड़ो कियो
उपकार हो ॥ महा० ॥ धे० ॥ ६ ॥ परवचन करे पर
भावना, शुद्ध मारग देवे देखाय हो। महा० । ज्ञाता
अङ्ग में अरिहन्त भाषियो, तीर्थङ्कर नाम गोत बंधाय
हो ॥ महा० ॥ धे० ॥७॥ इम लेखे आपरे अति ओपतो,
बन्धो दिसे तीर्थंकर नाम गोत हो। महा० । धर्म आद
काढ़ी अरिहन्त आदिनाथ ज्यूं, कियो अत्यन्त उद्योत
हो ॥ महा० ॥ धे० ॥ ८ ॥ आप इण भवे पर उत्तम
थया, परभव में पण शोभाय हो ॥ महा० ॥ [illegible]
अनुपम लोक हैं, आप पोंहतो तिण [illegible] मांय [illegible]
महा० ॥ धे० ॥९॥ जन्म कल्याणक [illegible]

टीका महोच्छव वगडी मझार हो। महा०। पांच कल्याणिक मिरियारी में शोभतो, ए तीनूं जोड़ विचार हो॥ महा०॥ ये०॥१०॥ वीर जिणंद री गादी विराजिया, सुवनित सुधर्मा स्वाम हो। महा०। इण विध पूज्य रे पाट प्रगट थया, भारीमालजी स्वामी ज्यारो नाम हो॥ महा०॥ ये०॥ ११॥ ए चरित कियो भिक्खु अणगार रो, वगडी शहर मझार हो। महा०। सम्वत् अठारे साठा वरस में, फागण वद तेरस शुक्रवार हो॥ महा०॥ ये०॥ १२॥ कोई अक्षर आघो पाछो आयो हुवे, अधिको ओछो आयो हुवे कोय हो। महा०। ऋष वेणीदास कहे कर जोड़ि ने, मिच्छामि दुक्कड़ होय हो॥ महा०॥ ये०॥ १३॥

॥ इति श्री भिक्खु चरित्र समाप्त॥

देखो अपने पूज्य वा पूर्व ऋषियों ने क्या क्या वाक्य कहे हैं—अहिंसा, सत्य, अदत्तादाननिवर्तन ब्रह्मचर्य, निर्लोभता आदिही शिव-मार्ग को साधना कही है। देखो श्रीविजयदेव सूरि ने क्या आत्म-हितोपदेश कहा है :—

॥ ढाल श्रीविजयदेव सूरि कृत ॥

चेतो रे चेतो प्राणियां, मति राचो रे रमणी रे संग, के सेवो रे जिनवाणी ॥ ए आंकड़ी ॥

सुर-तरु नी परे दोहिलो रे, लाधो नर अवतार। अहलो जन्म किम हारिये, कांई कीज्यो रे मन मांहि विचार के ॥ चेतो रे० ॥१॥ पहलो तो समकित सेविये रे, जे छे धर्मनो मूल। संजम समकित बाहिरो, जिन भाख्यो रे तुस खंडवा तुल्य के ॥ चेतो रे० ॥२॥ अरिहन्त देव आराधज्यो रे, गुरु गिरवा शुद्ध साध। धर्म जिनेश्वर भाषियो ए समकित रे सुरतरु सम लाध के ॥ चेतो रे० ॥ ३ ॥ तहत करीने सरधज्यो रे, जे भाख्यो जगनाथ। पांचों ही आस्रव परिहरी, जिम मिलिये रे शिवपुरनो साथ के ॥ चेतो रे० ॥ ४ ॥ जीव वंछे सर्व जीवणो रे, मरण न वंछे कोय। आप समो कर लेखवो,

द्रव्य अनेक ए. उधारा जेम देवे विशेष ए। पाको लश्या रो मन मे ध्यान ए. नवमों कायन्ती दान ए ॥ २० ॥ लेणायतने देवे जेह ए, हांती नेतादिक तेह ए। पाको लेवण रो एकान्त काम ए. कन्तिति दान छै तिण रो नाम ए ॥ २१ ॥ नवमे दशमे दान नो चाल ए, धुर वोरे वालो ख्याल ए। ज्ञानो माने सावद्य मांय ए, तिणमें मिश्र किहां थी थाय ए ॥२२॥ दश दानरो यह विचार ए, संक्षेप कह्यो विस्तार ए। वीर नी आज्ञा मे दान एक ए, आज्ञा बारे दान अनेक ए ॥ २३ ॥ असं-यती बर आवियो ए. निर्दोषण आहार वेरावियो ए। तिण ने दियां एकान्त पाप ए. भगवती मे कह्यो जिन आप ए ॥ २४ ॥ एम जाणी ने करो विचार ए, आठ अधर्म तणो परिवार ए। वणा सूत्रां नो साख ए. श्रीवीर गया छै भाष ए ॥ २५ ॥ धर्म अधर्म दान दोय ए मिश्र म जाणो कोय ए। जिम जाणे मिथ्यात्वी जीव ए, मूल मे नहीं सम्यक्त नींव ए ॥ २६ ॥

। इति ।

३२ सूत्रों का नाम ।

तिण में ११ अंग सूत्र, १२ उपांग सूत्र,
४ मूल सूत्र, ४ छेद सूत्र,
१ आवश्यक सूत्र ।

११ अंग सूत्र का नाम ।

१ आचारांग, २ सूयगडांग, ३ ठाणांग, ४ समवायांग, ५ भगवती, ६ ज्ञाता धर्म कथा, ७ उपासक दसांग, ८ अंतगड़ दसांग, ९ अनुत्तरोववाई, ११ प्रश्न व्याकरण, ११ विपाक ।

१२ उपांग सूत्र का नाम ।

१ उववाई, २ रायप्रसेणी, ३ जीवाभिगम, ४ पन्नवणा, ५ जम्बूद्वीप पन्नत्ती, ६ चन्द पन्नत्ती, ७ सूर पन्नत्ती, ८ निरयावलिया, ९ कप्पवडंसिया, १० पुप्फिया, ११ पुप्फचूलिया, १२ वन्हिदिसा ।

जीव के १४ भेदों की अल्पाबोहत।

१ जीव के तेरहमे भेदवाला सर्व सूं थोड़ा।
२ तेहथी जीव के १४मे भेदवाला असंख्यात गुणा।
३ ,, ,, १०में भेदवाला संख्यात गुणा।
४ ,, ,, १२में भेदवाला विशेषाईया।
५ ,, ,, ६ठे भेदवाला विशेषाईया।
६ ,, ,, ८मे भेदवाला विशेषाईया।
७ ,, ,, ११में भेदवाला असंख्यात गुणा।
८ ,, ,, ६में भेदवाला विशेषाईया।
६ ,, ,, ७मे भेदवाला विशेषाईया।
१० ,, ,, ५में भेदवाला विशेषाईया।
११ ,, ,, ४थे भेदवाला अनन्त गुणा।
१२ ,, ,, ३जे भेदवाला असंख्यात गुणा।
१३ ,, ,, १ले भेदवाला असंख्यात गुणा।
१४ ,, ,, २जे भेदवाला संख्यात गुणा।

पच्चीस बोल की चरचा।
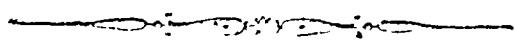
१ पहले बोले गति चार ४—

१ एक गति किण में पावे ? मनुष्य में पावे।

२ दोय गति किण में पावे ? श्रावक में-मनुष्य, तिर्यञ्च।

३ तीन गति किण में पावे ? नपुंसक वेद में पावे, (देवता टल्यो)।

४ चार गति किण में पावे ? समचे जीव में।

२ दूजे बोले जात पांच ५—

१ एक जात किण में पावे ? एकेन्द्री में।

२ दोय जात किण में पावे ? वैक्रिय शरीर में एकेन्द्री, पंचेन्द्री।

३ तीन जात किण में पावे ? तीन विकलेन्द्री में।

४ चार जात किण में पावे ? त्रसकाय में (एकेन्द्री टल्यो)।

५ पांच जात किण में पावे ? समचे जीव में।

३ तीजे बोले काय छव ६—

१ एक काय किण में पावे ? साधु में-त्रसकाय।

२ दोय काय किण मे पावे ? वैक्रिय शरीर में वायुकाय, त्रसकाय।

३ तीन काय किण में पावे ? तेजूलेश्या एकेन्द्री मे—पृथ्वी, पानी, वनस्पति।

४ चार काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे (तेऊ, वाऊ टल्या)।

५ पांच काय किण में पावे ? एकेन्द्री मे पावे (त्रस टल्यो)।

६ छव काय किण में पावे ? समचे जीव में।

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५—

१ एक इन्द्री किण में पावे ? पृथ्वीकाय मे-स्पर्श।

२ दोय इन्द्री किण मे पावे ? लट गिंडोला में-रस, स्पर्श।

३ तीन इन्द्री किण में पावे ? कीड़ी मकोड़ा में-घ्राण, रस, स्पर्श।

४ चार इन्द्री किण मे पावे ? मांखी मच्छर में (श्रुत इन्द्री टली)

५ पांच इन्द्री किण में पावे ? समचे जीव में।

५ पांचवें बोले पर्याय छव ६—

१ एक पर्याय किण मे पावे ? शरीर पर्याय ने अनभिया में—आहार, पर्याय।

२ दोय पर्याय किण मे पावे ? इन्द्री पर्याय रे अन्तविचा मे, आहार शरीर।

३ तीन पर्याय किण मे पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता मे—आहार, शरीर, इन्द्री।

४ चार पर्याय किण मे पावे ? एकेन्द्री मे (मन, भाषा टली)

५ पांच पर्याय किण मे पावे ? मांखी मे पावे (मन पर्याय टली)

६ छव पर्याय किण मे पावे ? समचे जीव में।

६ छट्ठे बोले प्राण दश १०

१ एक प्राण किण मे पावे ? चउदमे गुण स्थान में—आयुष वल प्राण।

२ दोय प्राण किण मे पावे ? वाटे वहता जीव मे—काया, आयुष।

३ तीन प्राण किण मे पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता मे—स्पर्श, काया, आयुष।

४ चार प्राण किण मे पावे ? एकेन्द्री मे—स्पर्श, काया, श्वासोश्वास, आयुष।

५ पांच प्राण किण मे पावे ? तेरहवें गुणस्थान मे (पाच इन्द्रियां का टल्या)।

६ छव प्राण किण मे पावे ? बेइन्द्री मे—रस,

स्पर्श, वचन, काया, श्वासोश्वास, आयुष।

७ सात प्राण किण में पावे? तेइन्द्री में (श्रुत, चक्षु, मन टल्या)।

८ आठ प्राण किण मे पावे? चौइन्द्री में (श्रुत, मन टल्या)।

९ नव प्राण किण में पावे? असन्नी पञ्चेन्द्री में (मन टल्यो)।

१० दश प्राण किण में पावे? समचे जीव में।

७ सातवें बोले शरीर पांच ५—

१ एक शरीर किण में पावे? एक शरीर किण ही में नहीं पावे।

२ दोय शरीर किण में पावे? वाटे वहता जीव मे—तैजस, कार्मण।

३ तीन शरीर किण मे पावे? पृथ्वीकाय मे-औदारिक, तैजस, कार्मण।

४ च्यार शरीर किण मे पावे? वायुकाय में (आहारिक टल्यो)

५ पांच शरीर किण मे पावे? समचे जीव में।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह १५—

१ एक योग किण में पावे? चौदमा थान के जाता ने—औदारिक।

२ दोय योग किण मे पावे ? उड़ती माखी मे—
औदारिक, व्यवहार, भाषा।

३ तीन योग किण मे पावे ? तेउकाय मे—औदारिक मिश्र, कार्मण।

४ चार योग किण मे पावे ? बेइन्द्री मे-औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।

५ पाच योग किण मे पावे ? वायुकाय मे—
औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण।

६ छव योग किण मे पावे ? असन्नी मे-औदारिक औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।

७ सात योग किण मे पावे ? केवल्यां मे—सत्य मन व्यवहार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा, औदारिक औदारिक मिश्र, कार्मण।

८ आठ योग किण मे पावे ? तीजे गुणस्थान मे—
जेसा ४ मन, ४ वचन का।

९ नव योग किण मे पावे ? परिहार विशुद्ध चारित्र मे—४ मन का, ४ वचन का, १ औदारिक।

१० दश योग किण मे पावे ? तीजे गुणस्थान मे—
४ मन का ४ वचन का औदारिक, वैक्रिय।

११ इग्यारह योग किण मे पावे ? नारकी मे—४ मन का, ४ वचन का, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण।

१२ बारह योग किण मे पावे ? श्रावक में (आहारिक, आहारिक मिश्र, कार्मण टल्यो)

१३ तेरह योग किण मे पावे ? तिर्यंच मे (आहारिक, आहारिक मिश्र टल्यो)

१४ चउदह योग किण मे पावे ? मन योगी में (कार्मण टल्यो)

१५ पन्द्रह योग किण मे पावे ? समचे जीव में।

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२—

१ एक उपयोग किण मे पावे ? वाटे वहता सिद्धां मे - केवल ज्ञान।

२ दोय उपयोग किण मे पावे ? सिद्धा में—केवल ज्ञान, केवल दर्शन।

३ तीन उपयोग किण मे पावे ? एकेन्द्री मे— मति, श्रुति, अज्ञान अचक्षु दर्शन।

४ च्यार उपयोग किण मे पावे ? दसवें गुण स्थान में—४ ज्ञान (केवल वरजी ने)

५ पांच उपयोग किण मे पावे ? बेइन्द्री में—मति, श्रुति ज्ञान, मति श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन।

६ छव उपयोग किण मे पावे? मिथ्यात्वो मे—
३ अज्ञान, ३ दर्शन (केवल वरजी ने)।

७ सात उपयोग किण मे पावे? छट्ठे गुणस्थान
में—केवल वरजी ने ४ ज्ञान ने ३ दर्शन।

८ आठ उपयोग किण में पावे? अधर्म में—३
अज्ञान. ४ दर्शन. १ केवल ज्ञान।

९ नव उपयोग किण में पावे? देवता में (मन
पर्यव. केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)

१० दश उपयोग किण में पावे? स्त्री वेद में (केवल
ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)।

११ इग्यारह उपयोग किण में पावे? अभाषक में
(मन पर्यव टल्यो)

१२ वारह उपयोग किण मे पावे? समचे जोव में।

१० दशमें बोले कर्म ८—

१, २, ३ कर्म किण मे पावे? किणही मे नही
पावे।

४ चार कर्म किण में पावे? केवल्यां में—वेदनी,
आयुष्य, नाम, गोत्र।

५ ६ कर्म किण में पावे? किणही में नहीं पावे।

७ सात कर्म किण मे पावे? बारवें गुणस्थान
में (मोहनी टल्यो)।

८ आठ कर्म किण में पावे ? समचै जीव में ।

११ इग्यारवें बोले गुणस्थान चउदह १४—

१ एक गुणस्थान किण में पावे ? एकेन्द्री में-पहलो

२ दोय गुणस्थान किण में पावे ? बेइन्द्री में— पहलो, दूजो ।

३ तीन गुणस्थान किण में पावे ? अपर्याप्ता में— १, २, ४ ।

४ चार गुणस्थान किण में पावे ? देवता में— ४ प्रथम ।

५ पांच गुणस्थान किण में पावे ? तिर्यंच, सन्नी, पंचेन्द्री में —५ प्रथम ।

६ छव गुणस्थान किण में पावे ? कृष्णलेश्या में— ६ प्रथम ।

७ सात गुणस्थान किण में पावे ? तेजू लेश्या में —सात प्रथम ।

८ आठ गुणस्थान किण में पावे ? अपमादी में— आठ छेहला ।

९ नव गुणस्थान किण में पावे ? [illegible] में— नव प्रथम ।

१० दश गुणस्थान किण में पावे ? [illegible] कषाय में—दश प्रथम ।

११ इग्यारह गुणस्थान किण में पावे? चक्षु दर्शन में (१०, १३, १४ टल्या)

१२ बारह गुणस्थान किण में पावे? सम्यक्त्वी में—(१, ३ टल्या)

१३ तेरह गुणस्थान किण में पावे? संयोगी में—(चउदमों टल्यो)

१४ चउदह गुणस्थान किण में पावे? समचे जीव में।

१२ बारहवें बोले पांच इन्द्री की विषय २३—

८ विषय एकेन्द्री मे—८ स्पर्श इन्द्री को।

१३ विषय बेइन्द्री में—५ रस, ८ स्पर्श इन्द्री को।

१५ विषय तेइन्द्री में—२ घ्राण, ५ रस, ८ स्पर्श इन्द्री को।

२० विषय चौइन्द्री में—(श्रुत इन्द्री की तीन टली)

२३ विषय पंचेन्द्री में।

१३ तेरहवें बोले दश प्रकार को मिथ्यात—

किण में पावे? मिथ्यात्वी में पावे।

१४ चउदवें बोले नव तत्व ना ११५ भेद तिणमें जीव ना १४—

१ एक भेद किण में पावे? केवल ज्ञानी में पावे—चउदमो।

२ दोय भेद किण मे पावे? देवता में पावे—
१३, १४।

३ तीन भेद किण में पावे? मनुष्य में पावे—
११, १३, १४।

४ चार भेद किण में पावे? एकेन्द्री में पावे—
४ प्रथम।

५ पांच भेद किण में पावे? श्रावक में पावे ६,
८, १०, १२, १४।

६ छव भेद किण में पावे? सम्यक्त्वी में पावे—
५, ७, ६, ११, १३ १४

७ सात भेद किण में पावे? पर्यासा में पावे
७ पर्यासा का।

८ आठ भेद किण में पावे? अनाहारिक में पावे-
७ अपर्यासा, १ चउदमों।

९ नव भेद किण में पावे? औदारिक मिश्र में
पावे—(२, ६, ८, १०, १२ टल्या)।

१० दश भेद किण में पावे? त्रसकाय में
(एकेन्द्री का ४ टल्या))।

११ इग्यारह भेद किण में पावे? ...
भेदां में—(११, १३, १४ ...

१२ बारह भेद किण में पावे ? असन्नी में पावे—
(१३, १४ टल्या)।

१३ तेरह भेद किण में पावे ? कोरा असंयती में पावे—(चउदमों टल्यो)।

१५ पन्द्रवें बोले आत्मा आठ—

१ एक आत्मा किण मे पावे ? द्रव्य जीव में पावे-
द्रव्य आत्मा।

२ दोय आत्मा किण मे पावे ? उपशम भाव में
पावे—दर्शन, चारित्र।

३ तीन आत्मा किणमें पावे ? उदय भाव में पावे
कषाय, योग, दर्शन।

४ चार आत्मा किण मे पावे ? सिद्धां मे पावे—
द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन।

५ पांच आत्मा किण में पावे ? निर्जरा में पावे
(द्रव्य, कषाय, चारित्र टल्या)।

६ छव आत्मा किण में पावे ? मिथ्यात्वी में पावे-
(ज्ञान, चारित्र टल्या)।

७ सात आत्मा किण में पावे ? श्रावक में पावे
(चारित्र टल्यो)।

८ आठ आत्मा किण में पावे ? साधु में पावे।

१६ सोलहवें बोले दण्डक चौवीस २४—

१ एक दण्डक किण में पावे? सात नारकी में पावे—१ प्रथम।

२ दोय दण्डक किण में पावे? श्रावक में पावे—२०, २१।

३ तीन दण्डक किण में पावे? शुक्ल लेश्या में पावे-२०, २१, २४।

४ चार दण्डक किण में पावे? तिर्यञ्च त्रसकाय में पावे—१७, १८, १९, २०।

५ पांच दण्डक किण में पावे? एकेन्द्री में पावे-१२, १३, १४, १५, १६।

६ छव दण्डक किण में पावे? त्रसकाय नपुंसक में पावे—१, १७, १८, १९, २०, २१।

७ सात दण्डक किण में पावे? कोरा अचक्षु दर्शन में पावे—१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८

८ आठ दण्डक किण में पावे? कोरा असन्नी में पावे—१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९।

९ नव दण्डक किण में पावे? तिर्यञ्च में पावे—१२ से २० ताईं।

१० दश दण्डक किण में पावे? असन्नी में पावे—१२ से २१ ताईं।

११ इग्यारह दण्डक किण में पावे ? नपुंमक वेद में पावे—(१३ देवता का टल्या)।

१२ बारह दण्डक किण में पावे ? गर्भ विना सन्नी कृष्ण लेश्या में पावे—१ से ११ तांई. बाईसमीं।

१३ तेरह दण्डक किण में पावे ? सर्व देवतां में पावे—२ से ११ तांई. २२. २३ २४।

१४ चउदह दण्डक किण में पावे ? कोरा सन्नी में पावे—१३ देवतां रो. १ नारकी रो।

१५ पन्द्रह दण्डक किण में पावे ? स्त्री वेद में पावे—१३ देवतां रा २०, २१।

१६ सोलह दंडक किण में पावे ? सन्नी में पावे—(५ थावर ३ विकलेन्द्री टल्या)।

१७ सतरह दंडक किण में पावे ? चक्षु दर्शन मे पावे—(५ थावर, बेइन्द्री तेइन्द्री का टल्या)

१८ अट्ठारह दंडक किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे—(३ विकलेन्द्री नारकी, तेउ, वाउ का टल्या) ।

१९ उगणीस दंडक किण में पावे ? समयक्त्वी में पावे—(५ थावर का टल्या)।

२० बीस दंडक किण में पावे ? अढाई द्वीप बारे

नीचा लोक मे (२१, २२, २३, २४ टल्या)।

२१ इकवीस दंडक किण में पावे ? नीचा लोक मे पावे—(२२, २३, २४ टल्या)।

२२ बाईस दंडक किण में पावे ? कृष्णलेश्या में पावे (२३, २४)।

२३ तेईस दंडक किण में पावे ? एकेन्द्री की आगत में (नारकी रो एक दंडक पहलो टल्यो)।

२४ चौवीस दंडक किण में पावे ? अव्रती में पावे।

१७ सतरहवें बोले लेश्या ६—

१ एक लेश्या किण मे पावे ? तेरहवें गुणस्थान में पावे—१ शुक्ल।

२ दोय लेश्या किण में पावे ? तीजी नारकी में पावे—कापोत, नील।

३ तीन लेश्या किण मे पावे ? तेउकाय मे पावे—कृष्ण, नील, कापोत।

४ चार लेश्या किण मे पावे ? पृथ्वीकाय मे पावे (पद्म, शुक्ल टल्या)

५ पांच लेश्या किण मे पावे ? सन्नामी रा गत देवता में पावे (शुक्ल टल्या)

६ छव लेश्या किण मे पावे ? समचे जीव में।

१८ अट्ठारवें बोले दृष्टि तीन ३—

१ एक दृष्टि किण मे पावे ? चौथे गुणस्थान मे पावे—सम्यक दृष्टि।

२ दोय दृष्टि किण मे पावे ? वेइन्द्री मे पावे-सम्यक, मित्थ्या।

३ तीन दृष्टि किण मे पावे ? समचे जीव में।

१६ उगणीसवें बोले ध्यान ४—

१ एक ध्यान किण में पावे ? केवल्या में पावे १ शुक्ल।

२ दोय ध्यान किण में पावे ? सातवें गुणस्थान मे पावे - धर्म, शुक्ल।

३ तीन ध्यान किण में पावे ? श्रावक मे पावे--(शुक्ल टल्यो)।

४ चार ध्यान किण में पावे ? समचे जीव मे।

२० वीसवें बोले ६ द्रव्य रा ३० बोल—

१ एक द्रव्य अलोक मे पावे—आकाशास्तिकाय।

६ छव द्रव्य लोक मे पावे।

२१ इकवीसवें बोले राम दोय २—

१ एक राम किण मे पावे ? जीव में पावे—१

२ दोय राम किण मे पावे ? लोक मे पावे।

२२ बाईसवें बोले श्रावकरा व्रत १२—

ते श्रावक में पावे।

२३ तेईसवें बोले साधुजी ना महाव्रत पांच ५—

साधु में पावे।

२४ चौवीसवें बोले भांगा ४९—

श्रावक में पावे।

२५ पच्चीसवें बोले चारित्र ५—

१ एक चारित्र किण में पावे ? केवल्यां में पावे।

२ दोय चारित्र किण में पावे ? पुलाकनियंठा में पावे— सामायक, छेदोपस्थापनीय।

३ तीन चारित्र किण मे पावे ? छट्ठे गुणस्थान में पावे—सामायक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध।

४ चार चारित्र किण में पावे ? लोभ कषाय में पावे—(१ यथाख्यात टल्यो)।

५ पांच चारित्र किण में पावे ? साधु में पावे।

॥ इति श्री [illegible] सम्पूर्णम् ॥

निवेदन

भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित पूर्ण द्रव्यानुयोग की बात रहने दीजिये। इस वर्तमान काल में उपलब्ध द्रव्यानुयोग सम्बन्धी शास्त्र भी अत्यन्त विस्तृत हैं। और फिर आजकल की बोलचाल की भाषा में न होने से सर्वसाधारण उनका उपयोग नहीं कर सकते। इस दशा में द्रव्यानुयोग का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सरल उपाय थोकड़ा है। थोकडा शास्त्र ज्ञान प्राप्त करने की कुंजी (Key) है। इससे सभी जिज्ञासु सरलता पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसी विचार से "नय प्रमाण का थोकड़ा" प्रकाशित किया गया है।

इस थोकड़े की भाषा विशुद्ध हिन्दी नहीं है। उस की शुद्धता पर ध्यान भी नहीं दिया गया है। कारण यह कि जिन लोगों ने प्रारंभ के शब्दों में इसे याद किया है, उनके लिए शुद्ध हिन्दी अनुकूल नहीं पड़ती। उनकी जबान पर ऐसा ही बैठा होता है। अतः इसकी भाषा पर ध्यान न देकर भावों की ही ओर ध्यान देने की कृपा करें।

इस थोकड़े के शुद्ध करने में लीमड़ी सम्प्रदाय के श्रीमान् १००८ श्री शतावधानी मुनिश्री रत्नचन्द्रजी महाराज श्रीमान १००८ श्री उपाध्याय आत्मारामजी महाराज और परम-प्रतापी श्रीमान् १००८ पूज्यश्री हुक्मीचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के आचार्य १००८ श्री पूज्य जवाहिरलालजी महाराज के सुशिष्य १००८ श्री पण्डितरत्न घासीलालजी महाराज से बहुत सहायता मिली है। अतः इन सब महानुभावों का आभार मानते हैं।

आशा है पाठकगण इससे लाभ उठाकर कृतार्थ होंगे।—

निवेदक—

बीकानेर
२१-१-२८ ई.

भैरोंदान जेठमल सेठिया